॥ श्रीगोपालो जयति ॥

राजपूताना प्रान्तीय

मारवाड़ी अग्रवाल सम्मेलन

प्रथमाधिवेशन

जयपुर

का

कार्य-विवरण

माघ शुक्ला ५, ६, ७, सम्वत् १९८२ वि०

सोमवार, मंगलवार, बुधवार

तदनुसार

ता० १८, १९, २० जनवरी, सन् १९२६ ई०

जयपुर,
सम्वत् १९८२

प्रकाशक—
विजयनारायण टेमाणी
प्रधान मंत्री, स्वागत-कारिणी समिति

राजपूताना प्रान्तीय मारवाड़ी अग्रवाल सम्मेलन

प्रथमाधिवेशन
जयपुर
ता: १८, १९, २० जनवरी १९२६ई

जयपुर सम्वत् १९८२

प्रकाशक

विनयनारायण रेमाणी

प्रधान मंत्री,
स्वागत-कारिणी समिति / कार्य विवरण

श्रीयुत ....
जाति सेवक मंडल
.... के
.... सदस्यों का चित्र
....

मुद्रक

किशोरीलाल केडिया

"वणिक प्रेस"

१, सरकार लेन

कलकत्ता।

प्रेषक :

श्री अग्रवाल समाज समिति,

श्री अग्रसेन कटला,

आगरा रोड़,

जयपुर-३

हरियाणा के मुख्य मंत्री स्व. राजीव गांधी एवं स्वामी सत्यमित्रानन्द गिरि जी के सान्निध्य में इसमें

जाति-सेवक मंडल।

मुद्रक—
किशोरीलाल केडिया
"वणिक् प्रेस"
१, सरकार लेन
कलकत्ता।

प्राक्कथन

राजपूताना प्रान्तीय मारवाड़ी अग्रवाल सम्मेलन प्रथमाधिवेशन जयपुरका कार्य-विवरण आपके सम्मुख उपस्थित है। अधिवेशनके पश्चात् रिपोर्टका प्रकाशित होना दो कारणोंसे अनिवार्य्य है। एक यह कि जो महानुभाव किसी कारणवश सम्मेलनमें नहीं पहुँच सके वे इस रिपोर्टके द्वारा अधिवेशनकी पूरी कार्यवाही अच्छी तरहसे पढ़कर सम्मेलनके आनन्दका अनुभव कर सकें और स्वयं भी सम्मेलनके स्वीकृत प्रस्तावोंका पालन करें और दूसरोंको भी पालन करनेकी प्रेरणा करें। दूसरे यह कि जो सज्जन इस सम्मेलनमें सम्मिलित हुए थे उनको रिपोर्टके देखनेसे इसके आनन्दका स्मरण होकर प्रस्तावोंको कार्य-रूपमें परिणित करनेका उत्साह बढ़े।

इस महत्व को देखते हुए सम्मेलनकी कुल कार्यवाहीका फोटो यथाशक्ति आपके सामने रखा जाता है। आशा है कि आपलोग ऊपर लिखे उद्देश्योंकी अवश्य पूर्ति करेंगे।

इस बातके लिखनेकी कोई आवश्यकता नहीं है कि सम्मेलनमें वही प्रस्ताव रखे जाते हैं जिनसे हमारी जातिको लाभ पहुंचे। यह प्रस्ताव पास भी उसी रूपमें होते हैं जिससे सब भाई सहमत हों। इसलिए इनका पालन करना हमारा कर्त्तव्य है। अतएव सब भाइयोंसे मेरा नम्र निवेदन तथा अनुरोध है कि इस रिपोर्टको विचार-पूर्वक पढ़कर इन प्रस्तावोंके स्वयं पालन करने और दूसरे भाइयोंसे इनके अनुसार कार्य करानेका अवश्य उद्योग करें। नियमोंके पालन करनेसे ही सम्मेलनका सफल होना कहा जा सकता है और इसका लाभ हमको पहुंच सकता है, अन्यथा नहीं।

निवेदक—
विजयनारायण टेमाणी
प्रधान मंत्री, स्वागत-कारिणी समिति।

विषय-सूची

विषय	पृष्ठ संख्या
१ भूमिका	१
२ जयपुर	२
३ सम्मेलनका निश्चय होना	३
४ स्वागत-कारिणी समितिका संगठन	४
५ मंत्री-कार्यालय	६
६ जाति-सेवक मंडल	,,
७ प्रचार-कार्य	१०
८ स्वागत-विभाग	१२
९ भोजन-प्रबंध	१४
१० सम्मेलनका स्थान और इसके विभाग	,,
११ सभा-मंडप	१६
१२ सभापतिजीका स्वागत	१९
१३ सम्मेलनमें उपस्थिति	२३
१४ प्रथम दिवसकी कार्यवाही	२४
१५ स्वागताध्यक्षजीका भाषण	२८
१६ सभापतिजीका भाषण	३६
१७ द्वितीय-दिवसकी कार्यवाही	४८
१८ तृतीय-दिवसकी कार्यवाही	६०
१९ आगामी सम्मेलनका निमंत्रण	७४
२० धन्यवाद	७५

परिशिष्ट

(क) स्वागत-कारिणी समितिके सदस्य ७६
(ख) चन्दा-दाताओंकी नामावली ६३
(ग) जाति-सेवक-मण्डल ६५
(घ) प्रतिनिधि १०३
(ङ) राजपूतानाके अग्रवालोंकी मनुष्य-गणना १२४
(च) सहानुभूति-सूचक तार व पत्र भेजनेवाले सज्जनोंकी सूची १२६
(छ) आय-व्ययका ब्योरा १२८

चित्र-सूची

१ सभापतिजी
२ स्वागताध्यक्षजी
३ श्रीयुत सेठ शिवनारायणजी केडवाले उपाध्यक्ष
४ „ सेठ रामनिवासजी चौधरी उपाध्यक्ष
५ प्रधानमंत्रीजी
६ स्वागत-कारिणी समितिके मुख्य २ कार्य-कर्त्ता
७ जाति-सेवक मंडल
८ सभापतिजीकी सवारीका जुलूस
९ सभामंडप

॥ श्रीगोपालो जयति ॥

राजपूताना प्रान्तीय मारवाड़ी अग्रवाल सम्मेलन

प्रथमाधिवेशन, जयपुर

का

कार्य-विवरण

भूमिका

अनेकानेक धन्यवाद हैं उन पूर्ण-ब्रह्म-परमात्मा-ज्योति-स्वरूप आनन्दकन्द मुकुन्द श्रीगोपालजी महाराजको जिन्होंने अपनी असीम कृपासे श्रीअग्रसेन महाराजकी सन्तानको फिजूल-खर्चियों तथा कुरीतियोंसे बचाने और उन्नतिका मार्ग दिखानेके लिये उनको जगह २ सभाएं स्थापित करने, मुख्य २ स्थानोंमें महासभा तथा सम्मेलन आदि करनेकी प्रेरणा की। यह उन्हीं सच्चिदानन्द भगवानकी कृपा है कि आज हमारे जाति-हितैषी भाई अवनतिकी घोर निद्रासे जाग उठे हैं और उन्नतिके नये२ मार्ग ढूंढ़ रहे हैं। यदि हमारे इन भाइयोंका ऐसा ही उत्साह बना रहा और सर्व-साधारणने इनका साथ दिया तो अवश्य हमारी जाति भी उन्नतिकी घुड़दौड़में अन्य जातियोंसे पीछे न रहेगी, बल्कि सबसे पहिले उन्नतिके शिखरपर पहुँचकर अपनेको वास्तवमें अग्रवाल अर्थात् सबसे अग्रगण्य साबित कर देगी।

जयपुर

यह तो सभी जानते हैं कि जयपुर नगर अपनी सुन्दरताके लिए हिन्दुस्तान ही नहीं, किन्तु सारे संसारमें प्रसिद्ध है। इसी कारण इसको (Paris of India) अर्थात् भारतवर्षका पैरिस कहा जाता है। मनुष्य-गणना, पैदावार, व्यापार आदि सब प्रकारसे यह नगर राजपूतानाकी सब रियासतोंसे बढ़ा-चढ़ा है। संस्कृत विद्यामें यह नगर काशीसे कम नहीं है और अंग्रेजी, फार्सी आदिकी शिक्षामें भी भारतवर्षके प्रसिद्ध स्थानोंमेंसे एक है। यहाँके शिल्पादि कारीगरीके काम भारतवर्षहीमें नहीं किन्तु सारे संसारमें प्रसिद्ध हैं। और यहांके विशाल मन्दिर तथा मकानात दर्शनीय हैं।

इन सब बातोंके अतिरिक्त अग्रवालोंकी जन-संख्याको देखते हुए भी यदि इस नगरको सारे भारतवर्षका केन्द्रस्थान कहा जाय तो अनुचित न होगा, क्योंकि शायद ही कोई ऐसा स्थान होगा जहां अग्रवाल भाई इतनी अधिक संख्यामें बसते हों। ख़ास शहर जयपुरमें अग्रवालोंकी संख्या ५४७४ है और कुल रियासत जयपुरमें ६४११३ अग्रवाल बसते हैं। पाठकगणको परिशिष्ट (ङ) के देखनेसे ज्ञात होगा कि कुल राजपूतानामें अग्रवालोंकी संख्या १६६१५६ हैं। इस प्रकार केवल जयपुर रियासतके अग्रवालोंकी संख्या कुल राजपूतानामें आधीसे अधिक है। इसके अतिरिक्त बहुत-सी समूची रियासतोंमें भी अग्रवालोंकी संख्या अकेले शहर जयपुरसे कहीं कम है।

इसके अतिरिक्त यहांपर जातीय पाठशालाएं, कन्यापाठशालाएं, धनवन्तरि औषधालय, अनाथालय, पींजरापोल इत्यादि परोपकारक संस्थाएं प्रजाकी ओरसे स्थापित हैं। जिनका कार्य विशेषकर अग्रवालभाइयोंके ही हाथमें है।

ऐसे स्थानमें अग्रवालोंका सम्मेलन होना अत्यावश्यक था। दूसरे यहांपर बहुत-सी कुप्रथाएं और फिजूल-खर्चियां प्रचलित थीं, जिनको

दूर करनेके लिए भी ऐसे सम्मेलनकी बहुत आवश्यकता थी। यहांके कई उत्साही और जाति-हितैषी सज्जन इन कुप्रथाओंको मिटानेकी चेष्टा कर ही रहे थे कि इस वर्ष महासभाकी ओरसे भी सम्मेलन करनेका आग्रह किया गया।

वास्तवमें उपर्युक्त कारणोंको देखते हुए राजपूताना प्रान्तका प्रथम सम्मेलन जयपुरहीमें होना उचित था। सम्मेलनके कार्यमें यहांके सब भाइयोंका द्वेष और मनोमालिन्य इस प्रकार दूर हो गया, जैसे सूर्य्यनारायणके उदय होनेसे रात्रिका अन्धकार दूर हो जाता है,और उन्होंने बड़े उत्साह और प्रेमसे इस सम्मेलनमें सम्मिलित होकर यथार्थमें इसको सम्मेलन बना दिया तथा प्रस्तावोंके विषयमें अपनी २ सम्मति देकर बड़े उत्तम और उपयोगी प्रस्ताव स्वीकृत कराए।

सम्मेलनका निश्चय होना

नवम्बरके पहिले सप्ताहमें श्रीयुत पण्डित हरदेवजी शर्म्मा उपदेशक महासभाकी ओरसे जयपुरमें आये और यहांपर सम्मेलन निश्चय करानेका उद्योग किया, परन्तु जब सफलता होती न देख पड़ी तो उन्होंने निराश होकर महासभाको यहांकी अवस्था लिखी और यह राय दी कि यहांपर सम्मेलनका उद्योग करना व्यर्थ है। इस पत्रका उत्तर प्रधान मंत्रीजी महासभाने इनको यह लिखा कि सम्मेलन निश्चय करानेका पूर्ण उद्योग करें।

इसके साथ साथ ता०१७ नवम्बर सन् १६२५ ई०को मंत्रीजी महासभाकी ओरसे श्रीयुत सेठ शिवनारायणजी केडवाले, श्रीयुत सेठ रामनिवासजी चौधरी, श्रीयुत सेठ दुरगालालजी जौहरी तथा श्रीयुत सेठ विजयनारायणजी टेमाणीके पास सम्मेलन निश्चय करानेके लिए तार आये। इन सब महाशयोंने उद्योग करना शुरू किया।

सबसे प्रथम मिति मार्गशीर्ष शुक्ला ७ सम्वत् १६८२ को श्रीयुत सेठ रामनिवासजी चौधरीके मकानपर कई उत्साही तथा जाति-हितैषी

सज्जनोंको इकट्ठा किया गया और सर्व-सम्मतिसे यह प्रस्ताव स्वीकृत हुआ कि श्रीगोपालजीके मन्दिरमें बड़ी पंचायत करके सब भाइयोंसे सम्मेलन करनेके लिए प्रार्थना की जाय।

मिती पौष कृष्णा १ सम्वत् १९८२ मंगलवारको रात्रिके समय मन्दिर श्रीगोपालजीमें बड़ी पञ्चायत हुई। श्रीयुत सेठ शिवनारायणजी केड-वालेने सम्मेलनके फायदे सब भाइयोंको समझाये। आरम्भमें कुछ वादविवाद हुआ, परन्तु अन्तमें सर्व-सम्मतिसे यह निश्चय हो गया कि जयपुरमें सम्मेलन किया जाय और उसी समय सम्मेलनकी तिथियां भी निश्चित हो गईं और सम्मेलनके प्रबन्धके लिए एक स्वागत कारिणी समिति स्थापित हो गई। इसके पश्चात् पञ्चायत विसर्जित हो गई।

स्वागत-कारिणी समितिका

संगठन

स्वागत-कारिणी समितिकी बैठकें शुरूमें तो श्रीयुत सेठ रामनिवा-सजी चौधरीके मकानपर और इसके बाद श्रीअग्रवाल-पाठशाला-भवनमें होने लगीं। इस समितिने एक कार्य-कारिणी कमिटी स्थापित की जिसके पदाधिकारी तथा सदस्य नीचे लिखे अनुसार चुने गये:—

श्री० सेठ वंशीधरजी खेतान—स्वागताध्यक्ष
" " शिवनारायणजी केडवाले—उपाध्यक्ष
" " रामनिवासजी चौधरी— "
" " विजयनारायणजी टेमाणी—प्रधान मंत्री
" बाबू कालूरामजी अग्रवाल बी० ए०—उपमन्त्री
" सेठ नानूलालजी शास्त्री—उपमन्त्री
" " दुरगालालजी जोहरी—कोषाध्यक्ष
" " गोविन्दरामजी मोदी—आय-व्यय-निरीक्षक

श्री० सेठ बिहारीलालजी बैराठी—सभासद
" " धोकललालजी लडीवाले "
" " रामदासजी टिकसाली "
" " भंवरलालजी नानूवाले "
" " नरसिंहलालजी लडीवाले "
" " दामोदरजी लडीवाले "
" बाबू बदरीनारायणजी खोवाले "
" " नाथूलालजी मंदूपुरिया "
" सेठ नाथूलालजी बम्बईवाले "
" " रूपनारायणजी मैमिया "
" " नारायणसहायजी संघी "
" " चौथमलजी केडवाले "
" " दामोदरजी विरखभानवाले "
" " रामचन्द्रजी खोवाले "
" " दामोदरजी नारनोली "
" " मीनालालजी केडवाले "
" " बख्तावरलालजी वकील "
" बाबू कन्हैयालालजी मैमिया "
" सेठ विजयलालजी कसेरा "
" " भोरीलालजी समरायवाला "
" " मागीलालजी बजाज "
" " श्रीनिवासजी चौधरी "
" " भोलानाथजी डोवटीवाले "
" " हनुमानजी कोलावाले "
" " मालीरामजी राणा "

इस कार्यकारिणी समितिके अतिरिक्त निम्नलिखित उपसमितियां और स्थापित की गईं :—

१ पंडाल-उपसमिति

२ भोजन-प्रबन्ध-उपसमिति

३ स्वागत-प्रबन्ध-उपसमिति

४ जाति-सेवक-मण्डल

मंत्री-कार्यालय

इस कार्यालयद्वारा पत्र-व्यवहार, प्रचार तथा टिकट आदिका कुल प्रबन्ध किया गया था।

बड़े हर्षके साथ प्रकाशित किया जाता है कि दफ्तरमें काम करनेके लिए वेतन देकर क्लर्क वगैरह रखनेकी आवश्यकता नहीं पड़ी। कुल काम जाति-भाइयोंने ही बड़े प्रेम और उत्साहसे किया। समय बहुत थोड़ा मिलनेपर भी इन भाइयोंने पत्र-व्यवहार व प्रचारादिका काम बड़ी उत्तमतासे किया।

योंतो जितने भाइयोंने अपना सब कार्य छोड़कर रात्रिको बारह बारह बजेतक परिश्रम करके इस काममें हाथ बँटाया वह सब ही धन्यवादके पात्र हैं, परन्तु निम्नलिखित सज्जन विशेष धन्यवादके योग्य हैं—

(१) श्रीयुत बाबू भोरीलालजी लडीवाले

(२) ,, ,, हरीनारायणजी धीनपुरिया

(३) ,, ,, गौरीलालजी केडवाले

(४) ,, ,, रामगोपालजी ,,

(५) ,, ,, बंसीधरजी लडीवाले

(६) ,, ,, प्रहलाददासजी विरखभानवाले

(७) ,, ,, मालीरामजी ,,

जाति-सेवक-मण्डल

खेद है कि जयपुरमें अनुभव न होनेके कारण इस मंडलकी स्थापना

बहुत ही देरसे हुई, लेकिन यह भी हर्षके साथ कहना पड़ता है कि अनुभव न होनेपर भी जी सेवा और कार्य जाति-सेवकोंने सम्मेलनके प्रबंधमें किया वह बहुत ही सराहनीय था। यदि यह लिखा जाय तो अनुचित न होगा कि जयपुरके छोटे २ बच्चोंमें भी जिनको आजतक इन बातोंका अनुभव हो न था ईश्वरकी कृपासे जाति-सेवाका इतना प्रेम और उत्साह उत्पन्न हो गया था कि देखनेवाला दंग रह जाता था।

इस उत्साहके उत्पन्न करनेका कुल यश इस मंडलके सेनापति श्रीयुत सेठ भंवरलालजी नानूवाले तथा उप-सेनापति श्रीयुत बाबू वैजूलालजी नारनोलीको है। जो निम्न-लिखित नियम स्वागतकारिणी समितिकी ओरसे प्रधान मंत्रीजीने जाति-सेवकोंके पालनार्थ बनाये थे उनका पालन जातिसेवकोंसे करानेमें उक्त सेठजीने पूर्ण चेष्टा की, यहांतक कि अन्तमें उनका पालन उनसे करा ही दिया:—

(१) अपने कमाण्डर सेनापति और कैप्टेन (नायक) के आज्ञानुसार काम करना।

(२) जिस स्थानपर ड्यूटी मुकर्रर हो उस जगहसे तबतक न हटना जबतक उस जगह दूसरा जाति-सेवक न आ जावे।

(३) रेलसे उतरनेवाले प्रतिनिधियोंको बड़ी होशियारी और आरामसे उनके ठहरनेकी जगह पहुंचाना।

(४) जिस सवारीपर यात्रियोंको रवाना करे उसका नम्बर या कुली हो तो उसका नाम-पता लिख लेना। प्रतिनिधियोंके नाम, पते और वे कितने आदमी एक साथ हैं, जहाँ ठहराये गए हों वहांका पूरा विवरण अपने कमाण्डरके पास भेजना।

(५) उनके पुरुषोंसे प्रतिनिधियों तथा सम्मेलनकी प्रत्येक वस्तुकी रक्षा करना।

(६) प्रतिनिधियोंके आरामका हर समय ध्यान रखना और उनके डेरेकी हिफाज़त करना और हर समय जल पिलाना।

(७) सभास्थानके भीतर जब सभाका कार्य हो रहा हो बिना टिकट देखे किसीको भीतर प्रविष्ट न करना और प्रवेशार्थीका टिकट जहांके लिए हो वहां ही मृदुताके साथ बैठाना।

(८) सेवा करते समय किसी भाईसे अपने प्रति कठोरताका भी व्यवहार हो जाय तो शान्ति-पूर्वक सह लेना, बदलेमें क्रोध न करना।

(९) आवश्यकता होनेपर सनातनधर्म, महाराजा अग्रसेन, श्री-महाराजाधिराज जयपुर, और सभापतिजीकी जयघोषण करना।

(१०) खोई हुई चीजें पूछताछके कार्यालयमें पहुंचाना।

(११) अपने जाति-भाइयोंकी सेवामें किसी बातकी घृणा या परहेज न करना। सब भाइयोंको समान दृष्टिसे देखना।

जो सेवा जाति-सेवकोंने सभापति-महोदयके स्वागतमें की उसका वर्णन सभापतिजीके स्वागतमें आवेगा। अब और जो सेवायें उन्होंने की हैं उनका वर्णन यहां किया जाता है।

आनेवाले सज्जनोंको स्टेशनसे लाना, उनको उनके इच्छानुसार स्थानपर ले जाकर ठहराना, आवश्यकता पड़नेपर उनके सामानको स्वयं उठाकर ले जाना आदि तो उनके मामूली काम थे। कोई गाड़ी स्टेशनकी ओरसे सम्मेलनमें आए हुए सज्जनोंकी ऐसी नहीं होती थी कि जिसपर एक जाति-सेवक मौजूद न हो। हर ट्रेनके समय स्टेशनपर दस-पांच जाति-सेवक स्वागतकी झंडियां लिये प्लेटफार्मपर मौजूद रहते थे और गाड़ीके ठहरते ही महाराजा अग्रसेनकी जयध्वनि करके आनेवाले सज्जनोंका ध्यान अपनी ओर आकर्षित करते थे।

वास्तवमें जयपुरमें सम्मेलनका कार्य अधिकांशमें इन जाति-सेवकों-द्वारा ही हुआ है। एक वेतन पानेवाला नौकर तथा अहलकार इतना काम नहीं कर सकता जितना कि इन जाति-सेवकोंने जातीय प्रेमवश किया। टिकटघरमें जाकर देखो तो कुल रजिस्टर जाति-सेवकोंके हाथसे रङ्गे पड़े हैं। मन्त्री-कार्यालयमें भी इन्हींकी महिमा थी। एकके

ऊपर दूसरा जातिसेवक आकर गिरता था कि कार्य मैं करूँ। सभामंडपमें जाइये तो वहां भी इन्हींकी धूम थी। यहांपर कुल प्रबंध उन्हींके हाथमें था। टिकट संभालना, सब आनेवालोंको यथायोग्य स्थानपर बिठाना, मंडपमें शोर न होने देना इत्यादि काम यह मंडल बड़ी योग्यतासे कर रहा था। सभापतिजीकी सीटके निकट हर समय दो जाति-सेवक स्वागतकी झंडियाँ लिए हुए गार्डका काम कर रहे थे। मंचके नीचे सामनेकी पगडण्डीपर दोनों ओर जाति-सेवकोंकी कतार बैठी हुई थी। मञ्चपरसे किसीका जरासा इशारा हुआ कि फौरन एक जाति-सेवक आकर खड़ा हो जाता था और जो काम होता वह तुरन्त ही कर देता था।

उपस्थित सज्जनोंकी जल आदिसे पूर्णतया खातिरदारी करते थे। चारों ओर जाति-सेवक कुल सभामण्डपमें चक्कर लगाते थे और बड़े प्रेमके साथ स्वच्छ ठंडे जलका गिलास पिलाकर उनकी आशीस लेते थे। जल पी चुकनेके पश्चात् दूसरा जाति-सेवक फौरन उनका जूठा गिलास उनके हाथसे ले लेता था और इस कामको करते समय अपनेको बड़ा कृतार्थ समझता था। मण्डपमें किसी भी प्रकारकी गड़बड़ होती थी कि उसी समय दो जाति-सेवक उठकर जाते थे और बहुत नम्रताके साथ क्षमाप्रार्थना करके सब बाधाओंको दूर कर देते थे।

१८७ अग्रवाल नवयुवकोंने जाति-सेवकोंकी श्रेणीमें अपने नाम लिखवाये थे। इनमेंसे एक तो इस दलके सेनापति और दूसरे उपसेना-पति नियत हुए थे। पांच कप्तान और १५ लेफ्टिनेन्ट थे और शेष १६५ का सम्पूर्ण दल ग्यारह ग्यारह जाति-सेवकोंकी टोलियोंमें बँटा हुआ था। इस प्रकार १५ टोलियां थीं जिनमेंसे हरेकपर एक लेफ्टिनेन्ट मुकर्रर था। तीन २ टोलियां एक एक कप्तानकी अध्यक्षतामें थीं। इनकी सूचि टोलियोंवार परिशिष्ट(ग)में दी गई है।

प्रचार-कार्य

इस कार्यका भार स्वागतकारिणी समितिने श्रीयुत विजयनारायणजी टेमाणी प्रधान मन्त्री हीपर छोड़ा था। यद्यपि आपको अपने राजसम्बन्धी आफिस तथा सम्मेलनके अन्य कार्योंसे कम अवकाश मिलता था और अनुभव भी ऐसे कार्यका कम था, इसके अतिरिक्त बहुत कम समय रह गया था और कई बाधाओंका भी इनको इस कार्यमें सामना करना पड़ा था,तथापि इन्होंने जैसा कार्य किया उसको पाठकगण भलीभांति जान सकते हैं, विशेष लिखनेकी आवश्यकता नहीं है।

इस सम्मेलनका प्रचार केवल राजपूतानामें ही नहीं, किन्तु भारतवर्षके दूर दूरके देशोंमें भी किया गया था। समय समयपर "हिन्दू-संसार", "स्वतंत्र", "विश्वमित्र", "श्रीवेङ्कटेश्वर समाचार" इत्यादि समाचारपत्रोंमें प्रचारार्थ भिन्न भिन्न प्रकारकी सूचनाएं प्रेस टेलीग्राम द्वारा दी गई थीं। "हिन्दू-संसार"में तो एक महीनेतक प्रति दिन सम्मेलनका विज्ञापन निकलता रहा। इनके अतिरिक्त करीब १५००० विज्ञापनपत्र कुल भारतवर्षमें चारों ओर वितीर्ण कराये गये। करीब ४०० से भी अधिक निमन्त्रणपत्र रंगून, मदरास, लाहौर आदि दूर २ स्थानोंमें डाकद्वारा प्रतिष्ठित पुरुषोंके पास व्यक्तिगत भेजे गये और सबसे यही प्रार्थना की गई कि अपने अपने स्थानोंमें सम्मेलनका प्रचार अच्छी तरहसे करा दें। इस कार्यमें फतेहपुर स्थानीय अग्रवाल सभा तथा कानपुरकी महासभाके षष्ठ अधिवेशनकी रिपोर्टसे बहुत सहायता मिली।

इस सारे भारतवर्षके प्रचारके सिवाय खास राजपूताना प्रान्तमें जो प्रचार हुआ वह और भी अधिक था। हजारोंकी संख्यामें रङ्गबिरंगे पोस्टर्स छोटे तथा बड़े प्रायः सभी मुख्य मुख्य स्थानोंमें जहां भी

अग्रवालोंकी बस्ती अधिक संख्यामें है चिपकवाये गये और मुख्य मुख्य रेलवे स्टेशनोंपर इस सम्मेलनकी धूम पोस्टरों द्वारा हो रही थी।

महासभाके प्रचारकोंको भी चारों ओर प्रचारार्थ भेजा गया था। चुनांचे श्रीयुत बाबू रामगोपालजी गुप्तको सवाई माधोपुरकी ओर भेजा गया था। उक्त उपदेशक महोदयने बड़े उत्साहके साथ सवाई माधोपुर, टोंक, बूँदी, गङ्गापुर, हिन्डोन, भरतपुर, अलवर, बारां, करोली, बयाना, रेवाडी, नारनोल, श्रीमाधोपुर, अजीतगढ़, गोविन्दगढ़, चोमू आदि स्थानोंमें सम्मेलनका प्रचार किया। केवल इतना ही नहीं, किन्तु आपने अपनी पूरी-पूरी कोशिश करके जिन-जिन स्थानोंमें आप गये उनमें एक दोको छोड़कर प्रायः सबहीमें शाखा-सभाओंकी भी स्थापना कराई।

दूसरे उपदेश्क श्रीयुत पंडित नारायणदत्तजी काश्यपने अजमेर, नसीराबाद, केकड़ी, देवली, सीकर, झूंझुनु, मंडावा, मुकुन्दगढ़, चूड़ी, डूंडलोद, नवलगढ़, बगड़, सुलताना, सूरजगढ़, चिडावा आदि स्थानोंमें बड़े ही उत्साहके साथ प्रचार किया और जहां जहां शाखा-सभायें नहीं थीं, वहां इनकी भी स्थापना कराई।

श्रीयुत पं० नारायणप्रसादजी शास्त्री उपदेशकसे हमें इनके अनुभव तथा परिचयके कारण और भी अधिक आशा थी, किन्तु खेद है कि अव्वल तो आप जयपुर पधारे ही देरसे और उसके उपरान्त इनके बैठकमें फोड़ा होनेके कारण प्रचारके लिये शीघ्र बाहर नहीं जा सके। इसपर भी इन्होंने जोधपुर, मेड़ता, नागोर, बीकानेर, राजलदेशर, रतनगढ़, राजगढ़, सरदारशहर, सुजानगढ़, बिदासर, डीडवाना आदि स्थानोंमें बड़े उत्साह और जोरोंके साथ प्रचार किया।

श्रीयुत पंडित राधाकृष्णजी मिश्रने बड़े उत्साहके साथ मेवाड़ प्रान्तमें उदयपुर, भीलवाड़ा, सनवाड़, चित्तौड़, गंगापुर, ब्यावर आदि स्थानोंमें सम्मेलनका प्रचार किया।

इनके अतिरिक्त श्रीयुत पंडित सूर्य्यदत्तजीने भी इस सम्मेलनके प्रचार-कार्यमें यथासंभव सहायता दी। सब उपदेशकों द्वारा निमंत्रण-पत्र विज्ञापन आदि हजारोंकी संख्यामें बंटवाये गये।

श्रीयुत मंत्रीजी महासभाने भी अपनी ओरसे विज्ञापन सम्मेलनके लिये बहुत अधिक संख्यामें छपवाकर दूर दूर बंटवाये। इसके लिये उनको हार्दिक धन्यवाद दिया जाता है।

इस अवस्थाको देखते हुए पाठकगण स्वयं अनुमान कर सकते हैं कि सम्मेलनका प्रचार कितनी कितनी दूर तक हुआ था।

यह तो हुआ प्रान्तका प्रचार। अब जयपुर नगरके प्रचारका हाल सुनिये। श्रीयुत लाला बदरीनारायणजी जौहरीके सुपुत्र मदनलालजी, छगनलालजी तथा रामनारायणजीने उत्साहपूर्वक अपना सब काम छोड़कर कई दिनों तक शहरहीमें नहीं, किन्तु आस पासके ग्राम आमेर, सांगानेर आदिमें खूब पोस्टर चिपकाये और विज्ञापन बांटे। जिधर इस नगरमें नजर पड़ती थी गली-गली कूचे कूचेमें अग्रवाल-सम्मेलनकी धूम हो रही थी।

प्रचार इस थोड़े समयमें जितने जोरसे किया गया उसका अनुमान सम्मेलनमें जनताकी उपस्थितिसे किया जा सकता है। इसलिये अब इस विषयमें विशेष लिखनेकी आवश्यकता नहीं जान पड़ती है।

स्वागत-विभाग

इस विभागके मुख्य प्रबन्धकर्त्ता श्रीयुत सेठ रामदासजी टकसाली और श्रीयुत लाला नाथूलालजी मंदूपुरिया थे। आपके योग्य प्रबंधका असली हाल तो वही सज्जन बता सकते हैं, जिन्होंने सम्मेलनमें सम्मिलित होकर स्वागत-कारिणी समितिको कृतार्थ किया था। यहां तो केवल नाम-मात्रका वर्णन पाठकोंकी जानकारीके लिये दिया जाता है।

बाहरसे पधारनेवाले सज्जनोंके ठहरनेके लिये निम्नलिखित स्थानोंका प्रबंध किया गया था।

(१) श्रीयुत राजा बलदेवदासजी बिड़लाकी "बिडला बिल्डिङ्ग।"
(२) श्रीयुत सेठमलजी छोगालालजीकी धर्मशाला।
(३) श्रीयुत सेठ बंशीधरजी खेतानका बाग।
(४) श्रीयुत सेठ नथमलजीका कटला।
(५) श्रीयुत सेठ शिवनारायणजी पल्लीवालकी हवेली।
(६) निरानेवाले महंतोंकी हवेली।
(७) श्रीधन्वन्तरी औषधालय भवन।
(८) श्रीयुत सेठ भागचन्दजी बींजराजजी बांठियाकी हवेली।
(९) श्रीयुत सेठ बच्चूलालजी नारनोलीकी हवेली (नोहरा)
(१०) श्रीयुत सेठ रामकुमारजी नोशादरकी हवेली।
(११) श्रीयुत सेठ खेतसीदासजी सदासुखजीकी हवेली।

इन विशाल स्थानोंका प्रबंध बाहरसे आनेवाले सज्जनोंके निवासके लिये किया गया था और इनमें सब प्रकारका सुभीता था। इन सबमें करीब १००० या १२०० आदमी ठहरे थे। इन मकानोंमें सफाई रोशनी आदिका पूरा प्रबंध किया गया था। स्नानादिके लिये गर्म पानी इत्यादिका भी पूरा प्रबंध था और सामानकी हिफाजतके लिये पहरेदार रखे गये थे। जाति-सेवक हर समय इन स्थानोंपर मौजूद रहकर आनेवाले सज्जनोंकी आवश्यकताओंको हर प्रकारसे पूर्ण करते थे। स्टेशन तथा दरवाज़ेकी राहदारियोंपर यह प्रबंध कर दिया गया था कि सम्मेलनमें आनेवाले सज्जनोंसे किसी प्रकारकी रोक टोक न की जाय। रातकी ट्रेनोंसे आनेवाले सज्जनोंके लिये ता० १७ से २० जनवरी सन् १९२६ तक चार दिनके लिये रातभर सांगानेर दरवाज़ा खुला रहनेकी राजसे इजाज़त ले ली गई थी। आमेर इत्यादि स्थानोंके देखनेके लिये इजाज़ती चिट्ठियां राजसे मंगवाकर सब

सज्जनोंको दे दी जातीं थी और जाति-सेवक सुबह और शामके समय जाकर इनको सैर करा लाते थे ।

भोजन-प्रबंध

भोजनका कुल खर्चा श्रीयुत सेठ बंशीधरजी खेतान तथा श्रीयुत सेठ बिहारीलालजी बैराठीने उठाया। जितने प्रतिनिधि, दर्शक व उपदेशक आदि बाहरसे पधारे थे उनमेंसे जिन जिन लोगोंने इस भोजन-शालामें भोजन किया, उनसे किसी प्रकारकी फीस नहीं ली गई। भोजन-शालाका प्रबंध श्रीयुत सेठ गोबिन्दरामजी मोदी तथा श्रीयुत लाला बदरीनारायणजी जौहरीने बड़े परिश्रम और योग्यताके साथ किया। किसी सज्जनको किसी प्रकारकी तकलीफ नहीं होने दी।

सम्मेलनका स्थान और इसके विभाग

प्रायः सभी स्थानोंमें जहां कहीं महासभा कानफरेन्स आदि होती है वहांकी स्वागत-कारिणी समितिका ध्यान मंडपकी सजावटकी ओर विशेष रहता है और प्रतिनिधि तथा दर्शकगणोंको भी इसके देखनेकी उत्कंठा रहती है। यही हाल इस सम्मेलनमें हुआ ।

सम्मेलनका मंडप सांगानेर दरवाज़े बाहर जयपुरके प्रसिद्ध सेठ श्रीयुत नथमलजीके कटलेमें बनाया गया था। पाठकगणको इस मंडपकी सैर करानेके लिये यह उचित है कि सम्मेलनके दिनका १२ बजेके समयका दृश्य उनके सामने रखा जाय और सांगानेर दरवाज़ेसे चलकर उनको मंडपमें पहुंचाया जाय।

सांगानेर दरवाज़ेके बाहर एक चौराहा है जहांसे चारों दिशाओंकी ओर चार सड़कें जाती हैं। इस चौराहेसे पूरबकी ओर जानेवाली सड़कपर कुछ दूर चलकर सरकारी डाकखाना है। इससे आगे चलते ही जिधर दृष्टि जाती थी उधर ही रास्तेकी दीवारोंपर रंग विरंगे पोस्टर नज़र आते थे जो आगन्तुक महाशयोंका स्वागत करते हुए उनको

सम्मेलनकी ओर लेजारहे थे। सांगानेर दरवाज़ेसे करीब एक फर्लांग जानेपर बड़ा हुजूम मालूम होता था जहां दो दुकानोंपर मोटे मोटे अक्षरोंमें "टिकट आफ़िस" शब्द लिखे हुए थे जिससे सर्व-साधारणको यह प्रतीत होता था कि प्रतिनिधि तथा दर्शकोंके टिकट यहां ही बंट रहे हैं। टिकट आफिसके पास ही शुद्ध खादीकी दूकान लगाई गई थी।

इसके निकट ही एक बड़ा दरवाज़ा है जो चौड़ाईमें करीब १५ फीट और ऊँचाईमें करीब ३० फीट है। इसपर लाल कपड़ेपर सफेद मोटे मोटे अक्षरोंमें "राजपूताना प्रान्तीय मारवाड़ी अग्रवाल सम्मेलन,जयपुर" लिखा हुआ था जिससे सर्व-साधारणको यह मालूम होता था कि सभा-मंडप यहां ही है। दरवाज़ेके ऊपर छतपर बड़े बड़े पचरंगो झंडे फहरा रहे थे जो दूरसे लोगोंका मन आकर्षित करते थे। यहां ही लाल कपड़े-पर सफ़ेद अक्षरोंमें "अग्रसेन-पुरी" शब्द लिखा हुआ था, जिससे यह प्रतीत होता था कि मानो यह तमाम स्थान तीन दिनके लिये साक्षात् अग्रसेनपुरी बन गया था। दरवाज़ेके दोनों तरफ़ नक्कारे, शहनाई और झांझकी नौबत बज रही थी।

दरवाज़ेके भीतर घुसतेही बांई ओरको Enquiry Office अर्थात् पूछताछका दफ्तर था। इस दफ्तरके इनचार्ज श्रीयुत सेठ मनसा-रामजी सिंघाड़ेवाले थे। दरवाज़ेके दाहिनी ओर पूछताछके दफ्तरके सामने बाचनालय था जहां प्रसिद्ध दैनिक तथा साप्ताहिक पत्र पाठक गणोंके विलोकनार्थ रखे हुए थे। इस दरवाज़ेके सामने ही अन्दरकी तरफ पुस्तकोंकी दूकान लगाई गई थी, जहां धार्मिक तथा शिक्षाप्रद पुस्तकें बिकती थीं।

दरवाज़ेके अन्दर दाहिनी ओर मंत्री-कार्यालय था और इसीके बराबर प्रान्तीय सभाका आफिस था। बाईं ओर जाति-सेवकोंका कैम्प लगाया गया था और इससे आगे चलकर भोजन-शाला बनाई गई थी।

दरवाज़ेके ऊपर महलमें उपदेशकगण तथा श्रीयुत सेठ आनन्दीलालजी पोद्दारके नवलगढ़ ब्रह्मचर्य्याश्रमके छात्र ठहरे थे।

सभा-मंडप

यह तो सब ही जानते हैं कि मनुष्योंकी प्रकृति भिन्न भिन्न होती है। कोई सजावटमें सादगी पसन्द करते हैं और कोई तडक-भड़कको देखकर खुश होते हैं। परन्तु धन्य है इस मंडपके बनवानेवाले व्यक्तिकी चतुराईको कि दोनों प्रकारके मनुष्य मंडपको देखकर प्रसन्न हो जाते थे। सादगी और तड़क-भड़कको इस प्रकार मिलाया था कि जैसे दूधमें शक्करको मिला देते हैं।

कटलेमें दरवाज़ेके अन्दर करीब दस कदम जाकर ही शुद्ध मोटे-मोटे अक्षरोंमें दो माटो लगे हुए थे एक "Welcome" और दूसरा "स्वागतम्"। यह दोनों शब्द आनेवाले सज्जनोंके सामने स्वागत-कारिणी समितिके हृदयको खोल खोलकर रख रहे थे। ज़रा आगे बढ़कर एक पगडंडी थी जो करीब २४ फीट चौड़ी थी। इसके दोनों तरफ दो क्यारियां थीं जो हरएक करीब ४०० वर्ग फीटके होंगी। इनमें तरह तरहके वृक्ष तथा सुगंधित पुष्प बसन्त ऋतुके प्रभावसे झूम रहे थे और सब लोगोंको बतला रहे थे कि जिस प्रकार हमारे लिये बसन्त आगई है उसी प्रकार महाराज अग्रसेनकी सन्तानोंके लिये भी आज वास्तविक उन्नतिका जन्म-दिवस आगया है। पगडंडीके मध्यमें एक रस्सा बंधा हुआ था जिसके एक ओरसे मंडपमें दर्शकगण प्रवेश करते थे और दूसरी ओरसे निकलते थे।

यह पगडंडी करीब ३० फीटतक होगी और इसके आगे सभामंडप था जिसमें जाते ही एकबारगी मनुष्य सोचने लगता था कि क्या क्या देखूं। इसका चित्र पाठकगणके सामने विस्तार-पूर्वक रखनेके लिये यह उचित है कि मंचसे इसका वर्णन आरम्भ किया जावे।

सम्मेलनका एक दृश्य।

सभा-मंच पूरबकी ओर देखता हुआ बनाया गया था। इसकी चौड़ाई लगभग १६ फीटके और लंबाई करीब ६० फीटके होगी। दोनों ओर दो बड़ी-बड़ी क्यारियां वृक्षों तथा पुष्पोंकी थीं, जिनके बीचमें मंच बड़ा ही सुहावना मालूम होता था; मानों किसी बड़े महाराजाका दरबार लगा हुआ हो। मंचके पीछे कपड़ेका परदा लगा हुआ था, जिसके बीचोंबीच श्री राधाकृष्णका मनोहर चित्र था और आसपास अन्य धार्मिक चित्र थे। इनके पास ही श्रीमान् स्वर्गीय महाराजाधिराज तथा वर्तमान जयपुरनरेशके चित्र थे। इन चित्रोंके अतिरिक्त स्वर्गीय राय बहादुर सेठ नौरङ्गरायजी खेतान तथा स्वर्गीय सेठ नथमलजी चौधरी और श्रीमान् सेठ धौकललालजी लड़ीवालोंके चित्र भी लगे हुऐ थे, जो निरन्तर धार्मिक कार्योंमें तत्पर रहते हैं।

मंचपर बीचोबीच एक बहुत ही सुन्दर कालीन बिछा हुआ था और इसके पास एक बर्फके समान श्वेत वस्त्रकी मसनद लगी हुई थी, जिसके सहारे सभापति महोदय विराजमान थे। आपके निकट ही बांई ओर स्वागताध्यक्षजी विराजमान थे और इनके पास ही स्वागत-कारिणी समितिके उपाध्यक्ष, प्रधान मंत्री तथा अन्य पदाधिकारी दक्षिणकी ओर मुंह किये हुए बैठे थे। इनके पीछे ही नवलगढ़के ब्रह्मचारी, स्थानीय दादू छात्रालयके छात्र तथा अग्रवाल पाठशाला जयपुरके छात्र बैठे हुऐ थे। सभापतिजीके पीछे उपदेशकगण बैठे थे और आपके पास ही जयपुरके अन्य प्रतिष्ठित तथा माननीय सज्जनगण विराजमान थे जो अपनी उपस्थितिसे मंडपकी शोभा ही नहीं बढ़ा रहे थे, किन्तु उत्साह और प्रेमके साथ सम्मेलनकी कार्यवाहीमें भाग भी लेते थे। सभापतिजीके दाहिनी तरफ आपकी पार्टीके सज्जन तथा प्रान्तीय सभाके पदाधिकारी विराजमान थे। यहां ही एक टेबिल रखी हुई थी, जिसके पास खड़े होकर वक्तागण अपने भाषण देते थे।

मंचके नीचे बाईं ओर एक अहाता बनाया गया था,जिसमें स्वागत-

कारिणी समितिके सदस्य बैठे हुए थे। दाहिनी ओर दूसरा अहाता था, जिसमें सब जिलोंके प्रतिनिधि बड़े प्रेमसे मिलजुलकर बैठे हुए थे। इन दोनों अहातोंके आगेका मंडपका शेष कुल स्थान दर्शकोंके लिये रखा गया था।

प्रतिनिधियोंके अहातेके पीछे स्त्रियोंके लिये स्थान रखा गया था, जिसके आगे चिकें इस प्रकारसे लगाई गई थीं कि महिलाओंको सम्मेलनकी कुल कार्यवाही भली प्रकारसे दिखाई और सुनाई पड़ती थी।

मंडप दो ढालू बनाया गया था और इसकी उंचाई २० फीटसे ३० फीटतककी होगी। इसके ऊपर सफेद चद्दरोंकी छावन तथा नीचेकी ओर लाल खादीकी झालर बहुत ही सुहावनी मालूम होती थी। बीचकी बल्लियां जयपुरकी बनी हुई शुद्ध खादीके सुर्ख चोलसे लिपटी हुई थीं और उनपर गोटेकी लहर डाली गई थी। मंडपके चारों ओर पत्तोंकी बांदरवाल बहुत ही सुन्दर मालूम होती थी। जगह जगह शिक्षाप्रद मोटो लगे हुए थे। मंडप इतना विशाल था कि जिसमें छः-सात हजार आदमी अच्छी तरहसे बैठ सकते थे। इसके एक ओर साफ पानीसे भरा हुआ एक हौज बड़ा ही सुहावना मालूम होता था।

इस अग्रसेन-पुरीके पूरब-दक्षिणके कोनेमें हौजके पास ही एक कुटी-सी दिखाई पड़ती थी। वास्तवमें यह एक सुन्दर शामियाना खड़ा किया गया था, जिसमें विषय-निर्वाचिनी समितिके सदस्य सम्मेलनके समयके अलावा अन्य समयमें साथ-साथ बैठकर अपने-अपने मस्तिष्क जाति-सुधारका रास्ता ढूंढनेमें लड़ाते थे।

इस मंडपकी तय्यारीका कुल प्रबंध श्रीयुत सेठ रामनिवासजी चौधरीने किया था। उक्त सेठजीको ऐसे प्रबंधके कामोंमें बहुत अनुभव है। राजमें भी ऐसे कामोंका प्रबंध प्रायः आपहीकी निगरानीमें हुआ करता है। थोड़े दिनोंमें ऐसा सुन्दर मंडप खड़ा कर देना आप ही जैसे

राजपूताना प्रान्तीय मारवाड़ी अग्रवाल सम्मेलन (जयपुर)
के सभापति सेठ मोतीलालजी झुन्झुनूवाला।

अनुभवी पुरुषका काम था। जितने सज्जन सम्मेलनमें पधारे सबने इस मंडपकी बहुत ही प्रशंसा की। इस तमाम प्रशंसाके पात्र उक्त चौधरीजी ही हैं।

इस प्रबंधमें श्रीयुत लाला बदरीनारायणजी जोहरी और उनके सुपुत्र मदनलालजी तथा छगनलालजीने भी पूर्ण उत्साहसे सहायता की।

इस कार्यमें श्रीयुत सेठ मूलचन्दजी बाणवाले, श्रीयुत सेठ प्रहलाद-दासजी सूतपूनीवाले, श्रीयुत सेठ गोरधनलालजी मोदी, गोपालदासजी बज़ाज़ इत्यादि सज्जनोंने भी सामानादिसे सहायता की इसके लिये यह सब सज्जन धन्यवादके पात्र हैं।

सभापतिजीका
स्वागत

शुभ मिति माघ शुक्ला ५ सम्वत् १९८२ तदनुसार ता० १८ जनवरी सन् १९२६ ई०को वैश्यरत्न अग्रवालकुल-भूषण श्रीयुत सेठ मोतीलालजी झुनझुनूंवाले सभापति १ अप गाड़ीसे दिल्लीसे पधारे। आपके साथ श्रीयुत पंडित झाबरमलजी सम्पादक हिन्दू-संसार देहली, श्रीयुत बाबू केदारनाथजी गोयनका, श्रीयुत सेठ जमनादासजी पोद्दार, श्रीयुत बाबू बनारसीप्रसादजी बी० ए०, अटार्नी-एट-ला, इत्यादि सज्जन भी पधारे थे।

श्रीयुत सेठ नाथूलालजी बम्बईवाले तथा श्रीयुत सेठ मनसारामजी सिंघाड़ेवालोंने सांगानेर स्टेशनपर सामने जाकर सभापतिजीका स्वागत किया। जयपुर स्टेशनपर श्रीयुत सेठ बिजयनारायणजी टेमाणी प्रधान मंत्री, श्रीयुत सेठ रामदासजी टिकसाली, श्रीयुत सेठ दामोदरजी बिरखभानवाले, श्रीयुत लाला नाथूलालजी मंदूपुरया तथा दस जाति-सेवक स्वागतकी झंडियां लिये हुए प्लेटफार्मपर स्वागतके लिये खड़े थे।

सुबह ५ बजे गाड़ीके प्लेटफार्मपर आते ही महाराजा अग्रसेनजी तथा सभापतिजीकी जयघोषणा उच्च-स्वरसे की गई। सभापतिजीको श्रीयुत सेठ भैरूंलालजी पूंगलियाकी नसियामें ठहराया गया। वहांपर सब पार्टी शोच स्नान संध्यासे निवृत्त हुई। दूध चायका भी प्रबंध वहां किया गया था।

प्रातः काल ७॥ बज उक्त नसियांपर श्रीयुत सेठ बंशीधरजी खेताण स्वागताध्यक्ष, श्रीयुत सेठ नन्दलालजी केडवाले तथा अन्य प्रतिष्ठित जयपुर-निवासी भाई तथा उपदेशकगण चार मोटरों और पंद्रह सोलह बग्गियोंमें आये। सभापतिजी और उनकी पार्टीको पुष्प-मालाएं पहिनाई गई और मोटरों तथा बग्गियोंको पुष्प-माला तथा झंडियोंसे सुशोभित किया गया।

नसियांसे करीब आठ बजे सब सज्जन मोटरों और बग्गियोंमें सवार होकर चांदपोल दरवाजेके पास पहुंचे। वहांपर श्रीयुत सेठ रामनिवासजी चौधरी उपाध्यक्ष और श्रीयुत सेठ श्रीनिवासजी चौधरीने जुलूसका सब प्रबन्ध बड़ी उत्तमताके साथ कर रखा था और करीब ५०० प्रतिष्ठित भाई, १०० जाति-सेवक अग्रवाल-हितकारिणी सभा जयपुरके स्वयं-सेवक और हिन्दू-सभा सांभरके स्वयं-सेवक मौजूद थे।

चांदपोल दरवाजेसे सभापतिजीकी सवारीका जुलूस निम्नलिखित-अनुसार लगाया गया:—

सबसे आगे छकड़ेमें एक बड़ा पचरंगका झंडा लहरा रहा था और उसी छकड़ेमें नक्कारे, सहनाई,झांझ इत्यादिकी नौबत बजती जाती थी। इसके पीछे बैंड बाजा बजता जा रहा था। अनन्तर जाति-सेवक मण्डल बैज लगाए और स्वागतकी झंडियां हाथोंमें लिये एक पंक्तिमें चल रहा था। उनके पीछे हिन्दू-सभा सांभरके स्वयंसेवक थे।

तत्पश्चात् सभापति महोदय जोड़ीकी बग्गीमें विराजमान थे। इनके बराबर बाईं ओर श्रीयुत सेठ बंशीधरजी खेतान स्वागताध्यक्ष और

सामने श्रीयुत सेठ जमनादासजी पोद्दार और श्रीयुत बाबू केदारनाथजी गोयनका बैठे थे। इनके पीछेकी गाड़ीमें श्रीयुत बाबू बनारसीप्रसादजी बी० ए० अटर्नी-ऐट-ला और श्रीयुत पंडित झाबरमलजी बैठे थे। सभापति महोदयकी गाड़ीके दोनों ओर अग्रवाल-हितकारिणी सभाके स्वयं-सेवक गार्ड आफ ऑनर (Guard of honour) का काम कर रहे थे। पीछे १००० से अधिक अग्रवाल भाई अपनी अच्छी अच्छी पोशाक धारण किये हुए थे और प्रतिनिधि, स्वागत और जाति-सेवकके सुन्दर तथा शुद्ध खादीके बने हुऐ बिल्लोंसे सुशोभित थे।

जुलूसके रवाना होनेसे पहिले प्रधान मंत्री श्रीयुत विजयनारायणजी टेमाणीने सभापतिजी तथा स्वागताध्यक्षजीको सुनहरी कामके सुन्दर बिल्ले पहिनाये। जुलूस करीब ८॥ बजे चांदपोल दरवाजेसे रवाना हुआ।

जयपुरके बाजारोंकी शोभा केवल भारतवर्षहीमें नहीं किन्तु सारे संसारमें प्रसिद्ध है। यहांके बाज़ार १५० फीट चौड़े हैं और दोनों ओर मकानोंकी लाइन एक सीधमें इस प्रकार है कि एक किनारेसे शहरका दूसरा किनारा दिखाई पड़ता है। बाज़ारोंके कुल मकानात यकसां गुलाबी रंगतके हैं। जयपुरके इन बाजारोंकी शोभाके विषयमें हमको इस स्थानपर विशेष लिखनेकी इसलिये आवश्यकता नहीं है कि इससे प्रायः सभी पुरुष भलीभांति परिचित हैं। इन सुन्दर बाजारोंमें होकर जलूसका निकलना और वह भी खासकर बसन्त-पंचमी (ऋतुराज) के मुख्य दिन कैसी शोभा दे रहा था, इसका अनुमान पाठकगण स्वयं कर सकते हैं।

जगह २ पर पुष्प-वर्षाके साथ २ निम्नलिखित जयघोषणायें उच्च स्वरसे बराबर होती जाती थीं कि जिनसे तमाम बाज़ार गूंज रहा था:—

(१) श्रीसनातनधर्मकी जय।

(२) श्रीमहाराजाधिराज जयपुरकी जय

(३) श्री अग्रसेन महाराजकी जय

(४) श्री सभापतिजीकी जय

ज्यों ज्यों जुलूस आगे बढ़ता जाता था उपस्थिति भी बढ़ती जाती थी। इसके अतिरिक्त बाज़ारके दोनों ओरके मकानात स्त्रियोंसे छका-छक भरे थे और बाज़ारोंमें दोनों ओरकी पटरियोंपर तमाशाइयोंकी भीड़ लगी हुई थी।

श्री दीनानाथजीके मन्दिरके पास जब जलूस पहुँचा तो श्रीयुत सेठ भूंतालालजी बैराठीके सुपुत्रोंने सभापतिजीका स्वागत किया।

जब जुलूस त्रिपोलिया बाज़ारमें आया तो श्रीयुत बाबू बदरीनारायणजी गोयलने अपने दफ्तरके सामने सभापतिजीका स्वागत किया। श्रीयुत सभापतिजी महोदय व श्रीयुत स्वागताध्यक्षजी इत्यादिको पुष्पमालाएं पहिनाईं और पुष्प-वर्षा हुई। त्रिपोलियाके सामने जुलूसका फोटो लिया गया और उपर्युक्त प्रकार खटाईवालोंने स्वागत किया।

इस समय मनुष्योंकी संख्या ३००० के अनुमान हो गई थी।

जब जलूस मानकचौकके कुण्डपर पहुंचा तो सराफोंकी ओरसे स्वागत किया गया। फूलोंके गजरे पहनाये गये और पुष्पोंकी वर्षा हुई। जुलूसका फोटो भी लिया गया।

करीब १० बजे जुलूस जौहरी बाज़ारमें पहुंचा तो जौहरी भाइयोंने बड़े प्रेम, उत्साह और उमङ्गके साथ स्वागत किया। सुन्दर पुष्पोंके गजरे सभापतिजी और स्वागताध्यक्षजी इत्यादि पदाधिकारियोंको तथा उपदेशकोंको पहनाये गये। पुष्प-वर्षा हुई और उच्च-स्वरसे जयघोषणायें हुईं।

जब जुलूस अनाजकी मण्डीमें पहुंचा तो श्रीयुत सेठ तनालालजी केडवालोंकी दूकानके सामने आपके पुत्र-पौत्रादिने सभापति महोदयका स्वागत किया।

तत्पश्चात् जुलूस सांगानेर दरवाजेमें होकर करीब १०॥ बजे नथमलजीके कटलेमें जहांपर सभा-मंडप बनाया गया था पहुंचा। मण्डपके दरवाजेपर श्रीयुत सेठ रामनिवासजी चौधरीने और मंचपर श्रीयुत सेठ शिवनारायणजी केडवालोंने सभापतिजीका स्वागत किया।

मंडपमें सभापतिजीके पधारते ही स्थानीय अग्रवाल पाठशालाके विद्यार्थियों और नवलगढ़के ब्रह्मचारियोंने गायन द्वारा सभापतिजीका स्वागत किया।

इसके पश्चात् करीब ११ बजे श्रीयुत सभापतिजी महोदय श्रीयुत सेठ नाथूलालजी बम्बईवालोंके मकानपर पार्टी सहित पधारे और जब तक आप जयपुरमें विराजमान रहे उक्त सेठजीने ही आपकी तमाम खातिर तवाजो बड़े मान और आदरके साथ की।

सम्मेलनमें उपस्थिति

(क) प्रतिनिधि

प्रतिनिधिकी फीस स्वागतकारिणी समितिने २) रखी थी। जयपुरके उन भाइयोंको जिन्होंने सम्मेलनमें चंदा दिया था एक एक टिकट प्रतिनिधिका बिला फीस दिया गया था और जिन भाइयोंने स्वागत सदस्यका फार्म १) देकर भर दिया था उनसे केवल १) और लेकर प्रतिनिधिका टिकट दिया गया था। प्रतिनिधियोंके बिल्ले (बैज) गुलाबी रंगकी खादीके बने हुए थे। प्रतिनिधियोंकी कुल संख्या ४७२ थी जिनकी नामावली परिशिष्ट (घ) में दी गयी है।

प्रतिनिधियोंकी संख्या कम होनेका मुख्य कारण यह था कि दर्शककी फीस कुछ नहीं रखी गई थी, इसलिए बहुतसे भाई प्रतिनिधियोंमें न बैठकर दर्शकोंमें ही बैठे।

(ख) स्वागत सदस्य

स्वागत सदस्य नियमानुसार जयपुरके ही सज्जन हो सकते थे

और उनकी फीस १) रखी गई थी। इनके बिल्ले नीबूके रंगके बनवाये गये थे। स्वागत सदस्योंकी संख्या ३६८ थी जिनकी नामावली परिशिष्ट (क) में दी गई है।

(ग) दर्शक

स्वागत-कारिणी समितिने इस ख्यालसे कि सम्मेलनमें उपस्थिति अधिक हो कुल अग्रवाल भाइयोंसे दर्शककी फीस कुछ नहीं ली थी। केवल प्रबन्धार्थ सफेद टिकट उनको दिये गये थे। कुल दर्शकोंकी संख्या ५००० के लगभग थी।

प्रथम दिवसकी कार्यवाही

मिति माघ शुक्ला ५ सम्वत् १९८२ विक्रमीय तदनुसार ता० १९ जनवरी सन् १९२६ ई० को सम्मेलनके प्रथम दिवसकी कार्यवाही आरम्भ हुई।

प्रातःकाल ७॥ बजेसे ८॥ बजेतक हवन और वेदपाठ हुआ। तत्पश्चात् ८॥ बजेसे ११ बजेतक सभापति महोदयके स्वागतका जुलूस स्टेशनसे सभा मण्डपतक निकला, जिसका वर्णन अलग दिया जा चुका है।

इसके पश्चात् श्रीयुत सेठ विजयनारायणजी टेमाणी प्रधान मंत्री स्वागत कारिणी समिति, सभापति महोदयको उनके निवास स्थानसे मण्डपमें लाये।

सभापति श्रीमान् सेठ मोतीलालजी झुनझुनूँ वाले १ बजे मण्डपमें अपनी पार्टी सहित पधारे। जयध्वनिके साथ सब प्रतिनिधियोंने खड़े होकर आपका स्वागत किया। सभा-मञ्चपर स्वागताध्यक्षजी तथा स्वागत कारिणी समितिके पदाधिकारी, प्रान्तीय सभाकी कार्य-कारिणी समितिके पदाधिकारी तथा अनेक प्रतिष्ठित प्रतिनिधि व सभापति महोदयकी

पार्टीके सज्जन बैठे थे। उपस्थित प्रतिनिधियों तथा स्वागत-कारिणी समितिके सदस्योंकी संख्या दर्शकोंको छोड़कर लगभग ८०० के थी।

प्रारम्भमें नवलगढ़के ब्रह्मचारियोंने निम्नलिखित स्वागत-गायन गाया।

स्वागत स्वागत प्रियवर बन्धु, आपका स्वागत शुभ स्वागत है।
आप ही गुण प्रतिमाके सद्म
आप ही राष्ट्रसरोवर पद्म
आप ही नाशक और छद्म, आपका स्वागत शुभ स्वागत है।
आप ही भारत माके पूत
आप रखते बल बुद्धि अभूत
आप ही प्रेमी विश्व अभूत, आपका स्वागत शुभ स्वागत है।
बँधे हम प्रेम-तारमें सर्व
भगादें मनसे ईर्ष्या गर्व
करें हम निष्ठुरताका खर्व, आपका स्वागत शुभ स्वागत है।
बढ़े दिनपर दिन ओज हमार
बनें भारतगुण सुख-आगार
मातृभू होवे स्वर्गागार, आपका स्वागत शुभ स्वागत है।

तदनन्तर पं० नारायणदत्तजी काश्यप उपदेशकके ईश्वर-प्रार्थना करनेके पश्चात् दादू-पंथी छात्रालय जयपुरके छात्रोंने ईश्वर-प्रार्थना की।

तत्पश्चात् श्री अग्रवाल कन्या पाठशालाकी बालिकाओंने निम्नलिखित स्तुतियां गाईं।

गणपतिकी स्तुति

विघ्नेश्वराय वरदाय सुरप्रियाय,
लम्बोदराय सकलाय जगद्धिताय।
नागाननाय श्रुतियज्ञविभूषिताय,
गौरीसुताय गणनाथ! नमो नमस्ते॥

श्रीरामचन्द्रजीकी प्रार्थना

श्रीरामचन्द्र कृपालु भज मन हरण भवभय दारुणं ।
नव कंज लोचन कंज मुख कर कंज पद कंजारुणं ॥
कन्दर्प अगणित अमित छवि नव नील नीरद सुन्दरं ।
पटपीत मानहुं तड़ित रुचि शुचि नौमि जनक सुतावरं॥
भज दीनबन्धु दिनेश दानव दैत्यवंशनिकन्दनं ।
रघुनन्द आनन्दकन्द कौशलचन्द्र दशरथनन्दनं ॥
शिर मुकुट कुण्डल तिलक चारु उदार अङ्ग विभूषणं ।
आजानु भुज शरचापधर संग्राम जित खरदूषणं ॥
इति वदति तुलसीदास शङ्कर शेष मुनि मन रंजनं ।
मम हृदय कंज निवास करु कामादि खल दल गंजनं ॥

ईश्वर-प्रार्थना

हे ईश्वर सब जगके स्वामी ।
करुणामय अरु अन्तरयामी ॥
हम अबोध बालिका तुम्हारी ।
क्षमा करो सब भूल हमारी ॥
हे भगवान ! हृदयमें आवो ।
हमको ऐसा ज्ञान सिखावो ॥
जिससे हम तुमको पहचानें ।
भले बुरे कामोंको जानें ॥
हम आई हैं शरण तुम्हारी ।
ईश्वर रक्षा करो हमारी ॥
तुम्हें प्रसन्न कर सकें जैसी ।
हमको विमल बुद्धि दो वैसी ॥
जिससे हम निज चरित सुधारें ।
सब जीवोंका भला विचारें ॥
जबतक जियें बड़ाई पावें ।
फिर २ सुयश तुम्हारो गावें ॥

इसके अनन्तर श्रीअग्रवाल पाठशाला जयपुरके विद्यार्थियोंने निम्नलिखित स्वागत-गायन अत्यन्त मधुर स्वरसे गाया ।

स्वागत-गीतिः

प्रसन्न मन है प्रफुल्ल तन है, प्रमोदसे सब मिले हैं भाई ।
तुम्हें बधाई, तुम्हें बधाई, हे अग्रवालो ! तुम्हें बधाई ॥ तुम्हें०

उगा सुनहरा है आज सूरज, स्वजातिके जो सुधारनेको ।
तुम्हारे मानस विशाल नभमें, छटा अनोखी तुरन्त छाई ॥ तुम्हें०

है अग्रवालोंमें श्रेष्ठ मोती, अनूप ही है इन्होंकि जोति ।
ये देश-प्रेमी स्वधर्म-रक्षक, सप्रेम स्वागत इन्हें दो भाई ॥ तुम्हे०

प्रचार होगा सुरीतियोंका, कुरीतियोंका संहार होगा ।
सद्धर्मका भी विचार होगा, हमारे मनमें यही समाई ॥ तुम्हें०

स्वसेवनासे त्रितापहरणो, निहारनेसे पवित्रकरणी ।
हैं धन्य हम जो हमारे पुरमें,यह जाति-गङ्गा स्वयंही आई ॥ तुम्हें०

समस्त स्वागतकी सम विधाएँ, नहीं लगाके हैं संकुचाएँ ।
हमें तो वाणीमयी ही पूजा, तुम्हारे स्वागतके हेतु पाई ॥ तुम्हें०

समर्थ श्री "हरि" तुम्हें सहारा, अवश्य देगा बिना पुकारा ।
प्रगाढ़ श्रद्धा हमारे मनमें, स्वयं हृदयने यही जचाई ॥ तुम्हें०

इस गायनको उपस्थित सज्जनोंने बहुत ही पसन्द किया ।

इसके बाद शीघ्र ही स्वागताध्यक्ष श्रीमान् सेठ बंशीधरजी खेतान जयध्वनिके साथ खड़े होकर टेबुलपर पधारे और आपने अपना मनोरञ्जक भाषण पढ़ना प्रारम्भ किया जिसका उल्लेख नीचे किया जाता है ।

स्वागताध्यक्षका भाषण

अन्तरायतिमिरोपशांतये शांतपावनमचिन्स वैभवम् ।
तन्नरं वपुषि कुञ्जरं मुखे मन्मदे किमपि तुन्दिलं मदः ॥

स्वागत सज्जनो ! एवं उपस्थित महिलाओ ! मैं उस अनन्त ब्रह्माण्डनायक करुणाकर जगदीश्वरको कोटिशः धन्यवाद देता हूं जिसकी निःसीम दयासे कुरीति-केन्द्र जयपुर निवासी अग्रवाल जनताको परम पवित्र स्नेहमयी जाति-गङ्गाको साक्षात्कार कर कुरीति कालिमा निकालते हुए सुमनोविकाशका सुअवसर प्राप्त हुआ है। साथ ही मैं मेरे भाषणके पहिले परम दयालु प्रजावत्सल सर्वोपाधि विभूषित महाराजाधिराज श्रीमान् जयपुर नरेन्द्र मानसिंहजीकी सेवामें हार्दिक धन्यवाद दिये बिना नहीं रह सकता जिनकी छत्रछायामें हम सानन्द अपनी उन्नति कर सकते हैं तथा उक्त महाराजा साहबके शासनकालमें हमें धार्मिक जात्युन्नति कार्य करते हुए किसी तरहकी बाधा नहीं सोही नहीं किन्तु श्रीमान् दरबारकी सहानुभूति भी है।

माननीय बन्धुओ !

मुझे स्वागतसमितिकी ओरसे स्वागतके लिये आज्ञा मिली है। मैं आपका हृदयसे स्वागत करता हूं; साथ ही यह नम्र निवेदन करना चाहता हूं कि हम जयपुर निवासी बन्धुओंके निकट ऐसी कोई वस्तु नहीं है जिससे आपका अनिर्वचनीय पान्थ-परिश्रम दूर कर आवास विश्रामके उपयोगमें लाई जावे, यदि है तो केवल वही एक जन्मभूमि व जातीय प्रेम जिसके लिये आप महानुभावोंने सुदूरदेशसे पधारनेका कष्ट उठाया है और यही एक संसारमें सुदुर्लभ विषय है। जैसा किसी कविने कहा है :—

राजपूताना प्रान्तीय मारवाड़ी अग्रवाल सम्मेलन (जयपुर)
के स्वागताध्यक्ष सेठ बंशीधरजी खेतान ।

२८४२८ मध्य

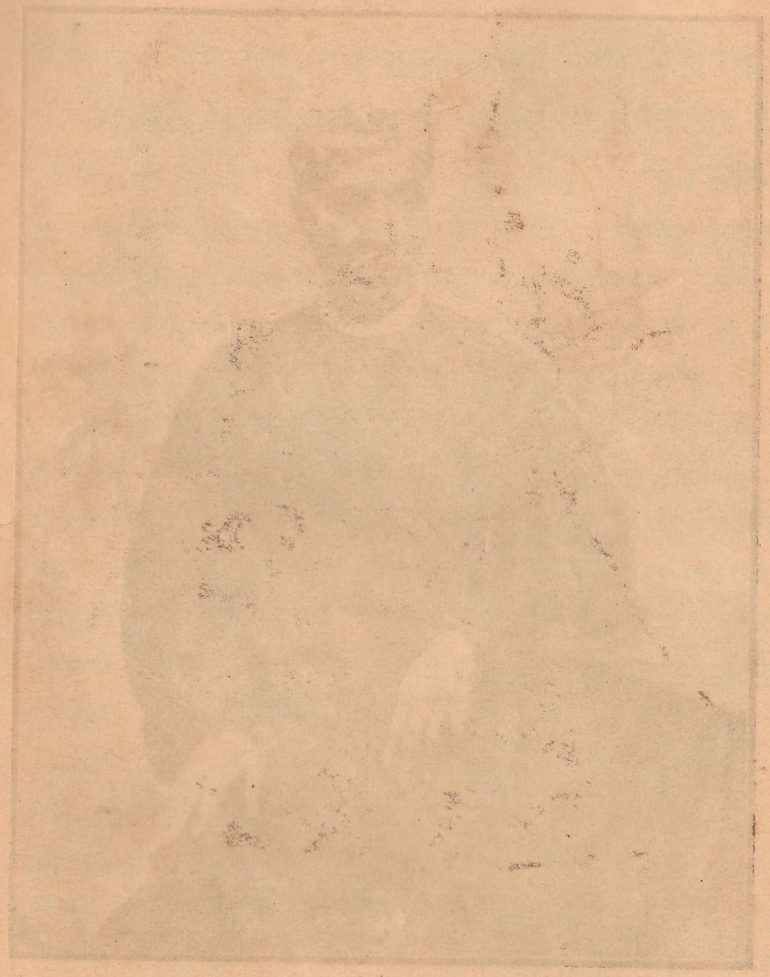

जननी जन्मभूमिश्च जाह्नवी च जनार्दनः।
जातिमध्येच सम्मुक्तिर्जकाराः पंच दुर्लभाः॥

और जो व्यक्ति इस प्रेमसे वञ्चित रहते हैं वे उन्नति-पथसे तो दूर रहते ही हैं, पर प्रत्येक व्यक्तिसे ठीक यूथ-भ्रष्ट मधुमक्षिकाकी तरह पददलित किये जाते हैं। मक्षिका जब अपने स्थानसे गिर जाती है तब हर एक दुर्बल बच्चेसे भी कुचली जाती है पर वही मधुमक्षिका यदि जातीय गौरवके साथ अपने जाति-संघमें विराजती है तब उसे कोई बुरी नजरसे नहीं देख सकता। यदि कोई अपनी मूर्खताके कारण आक्रमण भी करे तो वे व्यक्तिगत अभिभवको जातिगत समझती हुई उसे उचित दण्ड देती हैं, इससे स्पष्ट ज्ञात होता है कि प्रत्येक व्यक्ति अपनी जातीय उन्नति से ही उन्नत हो सकता है। इसलिये मैं आशा रखता हूं कि आप महानुभाव भी यात्राके कष्टोंको चनेकी तरह सुखके रूपमें परिणत समझेंगे। चना जैसे अपनी विशाल छातीमें हल-प्रहारोंको सहन करता है तथा खेतमें गिरकर वर्षा शीत धूप आदि कष्टोंको सहन कर जब निकलता है तब अपनी जातिके अनेक चना पैदा कर देता है और अपने जन्म एवं परिश्रमको सफल मानता है। अतः यह निर्विवाद सिद्ध है कि पहले क्लेशके बगैर सहे वास्तविक उन्नति होना कठिन है, इसलिये जयपुर निवासी बन्धुओंकी ओरसे किये हुए आतिथ्य एवं स्वागतकी त्रुटियोंकी परवाह न करते हुए मुझे आशा है सहर्ष स्वीकार करेंगे। विशेषतः मादृश तुच्छ व्यक्तिपर जो स्वागत-समितिका गुरुतर भार आरोपित किया गया है यह बन्धुओंकी अपूर्व कृपा है तथापि किसी कविने कहा है:—

"वसन्ति हि प्रेम्णि गुणा न वस्तुनि"

यद्यपि इस भारको वहन करनेकी मेरेमें सामर्थ्य नहीं तथापि जिस कृपा या प्रेमने यह भार दिलाया है वही निवार्हित करावेगी तथापि, "किं दुष्करं बन्धुजनानुकम्पया।"

सभा और जयपुर समाज

महासभा यद्यपि अनेक प्रान्तोंमें होती रही और यथेष्ट सुधार-कार्य्य करती रही मगर हमारा आदि निवासस्थान राजस्थान होनेके कारण यह नितान्त आवश्यक समझा गया कि सभा यदि राजस्थानमें हो तो राजस्थानीय कुरीतियोंका अति शीघ्र उन्मूलन हो। यह सोचकर राजस्थानका प्रधान शहर अग्रवाल बन्धुओंका केन्द्र जयपुरमें होना अतीव श्रेयस्कर समझा गया। यद्यपि अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी अग्रवाल महासभासे अनेक जगह अनेक कुरीतियोंका मूलोच्छेद हो गया है तथापि सर्वत्र न होनेके कारण कतिचित् बन्धुओंका कथन है, कि सभाका व्यय भी केवल अपव्ययके समान है, केवल प्रस्ताव पास कर लिये जाते हैं और वे कार्यरूपमें नहीं आते। पर यह दोष सभाका नहीं किंतु शिक्षाके अभावका है।

हमारी शिक्षा

हमारे समाजमें जबतक शिक्षाका पूर्ण प्रचार न होगा तथा प्रत्येक बालक बालिका पूर्णतया शिक्षित न होंगे तबतक प्रस्तावोंका सर्वथा कृतकार्य्य होना असम्भव नहीं तो कठिन अवश्य है,परन्तु वर्तमान समयमें हमारी जातिकी शिक्षाकी सीमा तो केवल हिसाब-किताब बहीखाता सीख लेने तक ही है,मैं बहीखाता आदि शिक्षाका विरोधी नहीं हूं किन्तु इतनीसी शिक्षामें संतोष मान लेनेका पक्षपाती भी नहीं हूं जिससे हमें पद पद पर उपहास्य एवं पराधीन होना पड़े। एक साधारण चिट्ठी लिखते हुए भी अनेक गलतियां करनी पड़ें जैसे "सेठजी" की जगह "सठजी" "बड़ी बही" की जगह "बड़ी बहू" आदि तथा साधारण ठिकाना लिखानेके लिये किसी अंग्रेजी शिक्षितकी शरण लेनी पड़े। अतः हमें उच्चशिक्षाका प्रचार करना चाहिये। शिक्षाके अभावके दो कारण हैं, धनवानोंका इधर ध्यान न होना और गरीबोंके निकट काफी साधन न होना। श्रीमन्तोंका खयाल है कि हमें किसीकी नौकरी तो कुछ करनी ही

नहीं फिर क्यों पढ़नेका परिश्रम उठाव। गरीब फीस पुस्तक व्यय आदिका भार उठानेमें असमर्थ हैं इस तरह गरीब अमीर दोनों ही करीब शिक्षासे वञ्चित रहते हैं।

अतः श्रीमानोंका इधर ध्यान आकर्षित करनेके लिये, गरीबोंकी सहायताके लिये विद्यालय खोलना। खुले विद्यालयोंका शिक्षा-क्रम आगे बढ़ाकर उन्नत करना। जयपुरमें यद्यपि अग्रवाल-बन्धुओंके लिये अग्रवाल पाठशाला खुली हुई है; तथा वहां संस्कृत, हिन्दी, अंग्रेजी, गणित, भूगोल, इतिहास, उर्दू, पर्सियन, साइंस,व्यापारिक आदि शिक्षा दी जाती है, जिससे बहुत कुछ लाभ हुवा है, पर यह पर्य्याप्त नहीं क्योंकि यह केवल मिडिल तक है।

अतः यह हाई स्कूल बना दिया जावे तथा व्यापारिक शिक्षाके लिये कमर्सियल कालेज खोला जावे। एवँ बालिकाओंकी शिक्षाके लिये कन्या पाठशाला खोली जावें जिनमें बालिकायें शिक्षित होकर सुयोग्य गृह-देवियां बनें।

हमारा धार्म्मिक जीवन

अब मैं आपका ध्यान हमारे धार्म्मिक जीवनकी ओर आकर्षित करना चाहता हूं। परमात्माने चातुर्वर्णकी सृष्टि करते हुये हम वैश्योंको जंघाओंसे बनाया है, जैसे जंघाओंके सुव्यवस्थित होनेके कारण ही समस्त शरीर अक्षुब्धसे रह सकता है वैसे ही समस्त संसारकी आवश्यक वस्तुओंकी पूर्ति करनेका भार हमारे ऊपर है। अतएव जगदीशने हमारे कर्म्म भी वैसे ही बनाये हैं जैसे पढ़ना दान देना यज्ञ करना सामान्य द्विजाति धर्म्म विशेषतः वृत्त्यर्थ जाति गत कर्तव्य,खेती, गोरक्षा व्यापार; पर आज हम इनका कितने अंशमें पालन कर रहे हैं आपही बतलाइये। पढ़नेकी जो दशा है उसे पहिले कह चुका हूं। दान-प्रणालीकी जो दशा है वह कहीं इससे भी अजब स्थितिपर है। यज्ञके बारेमें क्या कहूं वह तो वैदिक विज्ञानके विशेष प्रचारके बिना हो ही नहीं

सकता। अब लीजिये वृत्यर्थ कर्म्मों को जैसे गीतामें श्रीकृष्ण भगवान् ने कहा है "कृषि-गोरक्ष-वाणिज्यं वैश्यकर्म स्वभावजम्"। खेती करना तथा उसके लिये आवश्यक गोवंशका विस्तार करना फिर कच्चे मालसे उपयुक्त चीज बनाकर व्यापार विस्तार करना। इन कार्य्योंमें सेवारूपेण सहायता देनेवाले शूद्र-बन्धुओंके लिये वृत्तिव्यवस्था करना। पर आपही कहिये आज कितने ऐसे बन्धु हैं जिनका कृषिकी ओर लक्ष्य गया हो। हां अनेक हमारे बङ्गाल बरार आदि प्रदेशवासी भाइयोंने भूसम्पत्तिको वास्तविक धन समझकर उसका संग्रह किया है। लक्षों रुपयोंका लाभ भी उठाया। यह उनका कार्य्य श्रेयस्कर अवश्य है लेकिन हम इसको पूरा कर्त्तव्य-पालन नहीं कह सकते। क्योंकि उक्त बन्धुओंने कृषि उन्नतिके लिये न तो कोई कृषि-विज्ञानका आविष्कार किया न किसी भारतीय विद्वानको कृषि-ज्ञान प्राप्त करनेके लिये सहायता ही दी, न अपनी सन्ततिको ही इस ओर लगाया। जो कुछ कृषकोंसे कर मिला उसे सरकारको दिया बाकी अपनी आय समझी। पर इससे कृषि सर्वांशमें सफल नहीं हो सकती। इसके लिये गहरे परिश्रम और विज्ञानकी आवश्यकता है।

गोरक्षा

हमारा मुख्य जातिगत धर्म्म जो गोरक्षा है उसकी भी वही स्थिति है। जगह २ गोवध होता है मगर उसके बन्द होनेके लिये कोई विशेष चेष्टा नहीं। हां हमने अनेक स्थानोंमें अनेक गोरक्षण संस्था, पिंजरापोल आदिका प्रचार किया है जिनसे अन्धी, लूली, लंगड़ी गायोंका पालन होता है; यह सत्य है लेकिन इससे गोरक्षा सर्वांशमें नहीं हो सकती। इसके लिये गोचरभूमिके विशेष प्रबन्धकी जरूरत है, तथा गोरक्षण-सँस्थाओंमें कुछ सुधारकी आवश्यकता है, गोरक्षण-संस्थाएं "डेरीफार्म"के तौरपर चलाई जावें। जब तक गोरक्षा न होगी तब तक कृषि व्यापारकी उन्नति भी नही हो सकती। क्योंकि इनका आपसी

अंगांगी भाव सम्बन्ध है, कृषि गोरक्षा बिना नहीं हो सकती। व्यापार कृषि बिना नहीं हो सकता।

हमारा व्यापार

मैं तुच्छबुद्धि व्यापारके बारेमें क्या कहूं, क्योंकि मैं तो जयपुरका रहनेवाला हूं, जहां व्यापारका नितान्त अभाव है, यह खेदका विषय है। यह राजस्थानका प्रधान शहर होनेपर भी व्यापारका केन्द्र नहीं है। अतः इसकी असुविधाओंके दूर करनेके लिये चेष्टा कर इसे व्यापारका केन्द्र बनाना चाहिये। जैसे टैक्सके लिये प्रजावत्सल महाराजाधिराजसे प्रार्थना करनी चाहिये। एवं मिल व मारवाड़ी बैङ्क खोलकर इसका श्रीवृद्धि बढ़ाना चाहिये। साथ ही मुझे यह कहते हुए बड़ा दुःख होता है कि महायुद्धके बाद हमारे समस्त देशकी ही व्यापारिक दशा अवनत हो गई है। केवल सदा दलाली ही शेष रह गई है, या यों कहिये कच्चे मालको खरीदकर—चौगुने पचगुने मूल्यपर खरीदकर—आढ़तके लोभसे देशमें प्रचार करना यह सच्चा व्यापार नहीं। यद्यपि हमारे देशमें भी कपड़ेकी मिल-कम्पनियां खुलीं जिनसे देशको बहुत कुछ लाभ होना सम्भव था। पर मिल-मालिकोंके अनुचित लोभके कारण तथा अदूरदर्शितासे विशेष प्रचार न हो सका और लाभके बजाय कई कम्पनियोंका अधःपात हुआ। अतः हमें व्यापारोन्नतिके लिये विशेष ध्यान देना चाहिये।

विलासिता और फिजूलखर्ची

और साथ ही साथ हमने फिजूल खर्च भी इतने अधिक बढ़ा लिये हैं जिनके कारण समाज जर्जर हो गया है। अतः इसकी व्यवस्थाके लिये भी विशेष उद्योग करना होगा। महासभाके प्रयत्नसे यद्यपि अनेक जगह अनेक खर्च बन्द हो गये। जैसे आतिशबाजी, उछाल, बखेर आदि तथापि कई जगह इतने अधिक हैं जिन्हें देखकर यह कहना पड़ता है

कि संयम वा विचारशक्ति रही ही नहीं। जिधर देखिये उधर ही फैशनका राज्य है। बोलचालमें, रहन-सहनमें, वेष-भूषामें, क्या गरीब क्या अमीर सभी एक चाल चलना चाहते हैं और इसके दास हैं। अतः जबतक संयम न होगा तबतक उन्नति होना कठिन है। अतः अर्थका अनर्थ न बनाकर सदुपयोग करना चाहिये, जिससे देशके बन्धु तथा अनाथ विधवाओंका कल्याण हो।

कुरीतियां

इसके अतिरिक्त हमारे समाजमें कुरीतियां भी बहुत प्रचलित हैं। उनकी तरफ भी विशेष लक्ष्य देना होगा। जिनका महासभाने दिग्दर्शन करा दिया है। तथा कई रूढ़ियां जैसे बीन्दको गर्दभसे स्पर्श कराना, कुम्भकारके घर अश्लील गीत गाते हुए चाक पूजना आदि।

उपसंहार

अब मैं आपका विशेष समय नहीं लेना चाहता। स्वागतकारिणी समितिकी ओरसे मैं आपका फिर स्वागत करता हूं। यात्राके अनेक कष्ट उठाकर जयपुर पधारनेसे मैं आपका आभारी हूं।

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः।

इस भाषणके पढ़नेमें लगभग आध घण्टा लगा। भाषण समाप्त होनेपर बड़े जोरसे जयध्वनि हुई और सब उपस्थित सज्जनोंके मस्तक आपके भाषणकी प्रशंसामें हिलने लगे।

पश्चात् श्रीयुत स्वागताध्यक्ष-महोदयने श्रीमान् सेठ मोतीलालजी झुंझुनूवालेको सम्मेलनके सभापति बनाए जानेका प्रस्ताव उपस्थित किया। आपने उक्त सेठ साहबकी लोक-प्रियता, गम्भीरता तथा विचारशीलताका वर्णन करते हुए कहा कि सेठजीमें समाजप्रेम व जाति-हितैषिता कूट कूटकर भरी है। यह सम्मेलनका अहोभाग्य है कि इस अधिवेशनके लिए आप जैसे उत्साही और जातिभक्त सभापतिका समागम हुआ है।

३४ व ३५ के बीच

राजपूताना प्रान्तीय मारवाड़ी अग्रवाल सम्मेलन (जयपुर)
के उपस्वागताध्यक्ष सेठ रामनिवासजी चौधरी ।

श्रीयुत सेठ रामनिवासजी चौधरी उपाध्यक्षने इस प्रस्तावका अनुमोदन किया और श्रीयुत सेठ शिवनारायणजी केडवाले उपाध्यक्ष, तथा प्रान्तीय सभाकी कार्य-कारिणी-समितिके सभापति श्रीयुत सेठ चुन्नीलालजी ऐरनने इस प्रस्तावका समर्थन किया।

इस प्रस्तावको सब उपस्थित सज्जनोंने सहर्ष स्वीकार किया और महाराजा अग्रसेन तथा सभापति महोदयकी जयध्वनिके साथ श्रीमान् सेठ साहिबने सभापतिके आसनको सुशोभित किया। उसी समय प्रधान मन्त्रीजीने आपको फूलोंका हार पहिनाया और सभापतिका बड़ा ही सुन्दर खादीपर बना हुआ ज़रीके कामका सुर्ख़ रङ्गका बिस्त्रा लगाया, जो आपके श्वेत वस्त्रोंपर बहुत ही शोभायमान मालूम होता था।

एकाएक चारों ओरसे "महाराजा अग्रसेनकी जय" "सभापतिजीकी जय" इत्यादि जयध्वनियोंसे सभा-मण्डप गूंज उठा। इसके साथ ही सभापतिजीने मञ्चपर टेबिलके पास खड़े होकर बड़े ही मधुर स्वरसे अपना शिक्षा-प्रद भाषण पढ़ना प्रारम्भ किया। मंडपमें जो गूंज व्याप्त हो रही थी वह सभापतिजीका भाषण आरम्भ होनेपर एकदम बन्द हो गई और चारों ओर शान्तिने अपना साम्राज्य स्थापित कर दिया। सब उपस्थित सज्जन आपके अमूल्य शब्दोंको ध्यानपूर्वक सुनने लगे। भाषण नीचे लिखे अनुसार था :—

सभापतिका भाषण

यं ब्रह्मावरुणेन्द्र रुद्रमरुतः
स्तुन्वन्ति दिव्यैः स्तवै—
र्वेदैःसाङ्गपदक्रमोपनिषदै—
र्गायन्ति यं सामगाः ।
ध्यानावास्थिततद्गतेन मनसा
पश्यन्ति यं योगिनो
यस्यान्तं न विदुः सुरासुरगणा,
देवाय तस्मै नमः ॥

स्वागतकारिणीके सभापति महाशय, समागत प्रतिनिधिगण तथा अन्य उपस्थित माननीय सज्जनो !

परम करुणावरुणालय, आनन्दकन्द भगवान् श्रीकृष्णचन्द्रकी कृपासे आज आप लोगोंके शुभ समागमका अवसर मुझे प्राप्त हुआ है। जिस समय मुझे इस प्रथम राजपूताना प्रान्तीय मारवाड़ी अग्रवाल सम्मेलनके सभापति निर्वाचित किये जानेकी सूचना स्वागतकारिणी सभाके मन्त्री महाशयके तारों और पत्रोंद्वारा मिली उस समय मैं असमञ्जसमें पड़ गया। क्योंकि मैं कोई विद्वान् नहीं हूं। मेरा तो जीवन व्यापारमय ही रहा है। अपनी जातिमें ईश्वरकी कृपासे मुझसे कहीं योग्य प्रतिष्ठित सज्जनों और विद्वानोंकी कमी नहीं है। फिर भी मुझ अकिञ्चनको आपने सभापतिका सम्मानित पद देनेकी कृपा की इसे मैंने आप भाइयोंकी कृपापूर्ण आज्ञाका पालन करनेके लिये ही स्वीकार किया है। इस पदको स्वीकार करते हुये मैंने यह भी समझा कि हमारे समाजकी स्थिति इस

समय ऐसी शोचनीय है कि उसके प्रतिकारका उपाय करनेके लिये पढ़े, बेपढ़े और बूढ़े, जवान—सबके सम्मिलित उद्योगकी आवश्यकता है। घरमें आग लग जानेपर उसे बुझानेके लिये सबको दौड़ पड़ना चाहिये। इसी बातको ध्यानमें रखकर मैंने अपनी अयोग्यताका विचार न करके इस पदको स्वीकार किया। मेरे विचारसे सभापतिका अर्थ सभाका दास है। मुझे आप अपनी जातिका दास समझिये। आपकी इस कृपाका धन्यवाद करनेके साथ ही मैं यह निवेदन करता हूं कि जिस दायित्वका भार आपने मुझे सौंपा है, यह बहुत बड़ी जिम्मेवारी है और इसकी सफलता आपकी सहायतापर ही निर्भर है।

सङ्गठनकी आवश्यकता ।

लोगोंके सामने यह प्रश्न उपस्थित हो सकता है कि महासभा अथवा इन सम्मेलनोंकी क्या आवश्यकता है ? इस सम्बन्धमें मेरा नम्र निवेदन यह है कि हमारे समाजमें पुराने समयमें पञ्चायती सत्ता कायम थी और सभी भाई परस्पर प्रेम और सहानुभूतिके साथ मिल-जुलकर रहते थे। परन्तु इस समय वह बात नहीं है। पारस्परिक ईर्ष्या-द्वेष तथा स्वार्थपरतासे पञ्चायती सत्ता शिथिल हो गयी, सब लोग घर घरके पञ्च बन गये, परस्परमें कलहके कारण सहानुभूति और प्रेमका भाव नष्ट हो गया। इस दशामें जो कुछ कुरीतियोंका फैलना सम्भव है, वे सब हमारे समाजमें आ गयीं। इसके साथ ही एक बात और भी है। राजपूतानाको छोड़कर व्यापारके लिये हम लोगोंको बाहर रहना पड़ता है। जो जहां व्यापार करते हैं, वे वहांके ही बन जाते हैं। ऐसी दशामें यह डर है कि हम एक दूसरे भाईको पहचानना भी भूल जायं, और आपसमें इतने बिछुड़ जायं कि परस्परमें सम्बन्ध ही न रहे। इसका उदाहरण युक्तप्रांत, पञ्जाब और बिहार आदिमें बसनेवाले हमारे अग्रवाल भाई हैं। उनमें और हमारेमें कुछ भेद न होते हुए भी उनके साथ सम्बन्ध करनेमें लोगोंको सङ्कोच होता है।

इन सब बातोंको देखकर तथा देश और कालकी परिस्थितिको सोचकर आप सभी सज्जन इस प्रकारके संगठनका अनुभव करते होंगे। इसका उद्देश्य यही है कि सभी अग्रवाल भाई एक सूत्रमें मालाके मणियोंकी भांति बंधकर अपनी उन्नतिका मार्ग प्रशस्त करें। हमारी अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी अग्रवाल महासभा गत ८ वर्षसे स्थापित है। उसके उद्देश्य मारवाड़ी अग्रवाल समाजकी कुरीतियोंको दूर करना, शिक्षाका प्रचार करना तथा व्यापारिक दशा सुधारना आदि हैं। महासभाने अबतक जाति-सुधारके जो नियम बनाये हैं या प्रस्ताव स्वीकार किये हैं उनके फलसे समाजमें काफी जागृति हो रही है और बहुतसे सज्जन स्वीकृत प्रस्तावोंके अनुसार कार्य कर रहे हैं। यदि इसी तरह कार्य होता रहा तो ऐसा समय शीघ्र आयेगा कि ईश्वरकी कृपासे कुरीतियां दूर हो जायंगी और हमारा समाज फिर अपने प्राचीन गौरवको प्राप्त करेगा। किन्तु इसमें सभी भाइयोंके सहयोगकी आवश्यकता है। इसलिये हमको ग्राम ग्राम, नगर नगर, और प्रांत प्रांतका संगठन करना चाहिये। जिस प्रकार छोटे छोटे नाले एक साथ मिलकर नदीका रूप धारण करते हैं उसी तरह ग्राम ग्राम और प्रांत प्रांतका संटन हमारी महासभाका सहायक होगा। संगठनके उद्देश्यसे होनेवाले ऐसे सम्मेलनों और सभाओंकी व्यवस्थामें सात्विकताको नहीं भूलना चाहिये। पश्चिमी सभ्यताके ढंगपर मुग्ध होकर ठाठ-बाट सजानेमें फजूलखर्चीको स्थान देना मेरी रायमें फजूलखर्ची बन्द करनेके स्वीकृत अपने ही प्रस्तावपर पानी फेरना है।

बालकोंकी शिक्षा

सज्जनो!

जब अपने समाजके अभाव अभियोगोंपर विचार किया जाता है तो सबसे प्रथम शिक्षा-प्रचारकी आवश्यकतापर दृष्टि जाती है। शिक्षाके बिना मनुष्यको भले-बुरे अथवा सत्-असत्का ज्ञान नहीं हो सकता।

एक तिनकेसे लगाकर ईश्वरतकका ज्ञान प्राप्त करनेका नाम शिक्षा है। आज ईश्वरका ज्ञान प्राप्त करना तो दूर रहा, हमें अपनी वर्तमान दशाका भी ज्ञान नहीं है, यह बड़े ही दुःखका विषय है। इसका कारण यह है कि आजकल हम लोगोंने पैसेको ही अपना सब कुछ समझ लिया है। न्याय-अन्याय किसी भी मार्गसे पैसा आना चाहिये। पैसेवाला यदि दुराचारी भी हो तो उसपर किसीकी अंगुली नहीं उठ सकती। इस पैसा-पूजाका प्रभाव समाजपर यह पड़ा है कि बालकोंके धोती संभालते ही उनकी शिक्षाका प्रबन्ध करनेकी चिन्ता हमें नहीं होती और उन्हें पैसा-प्राप्तिके फेरमें डाल दिया जाता है। परिणाम यह होता है कि कर्तव्य-अकर्तव्यका कुछ भी ध्यान नहीं रहता और जो धन आता है, शिक्षा न पानेके कारण उसका सदुपयोग होनेकी अपेक्षा दुरुपयोग अधिक होता है। इससे जातिका गौरव बढ़नेके स्थानमें घटता है। माना कि धनोपार्जन वैश्योंका मुख्य कर्त्तव्य है, किन्तु इसके साथ प्राप्त धनका उपयोग जानना उससे अधिक आवश्यक है। यह बिना शिक्षाके नहीं हो सकता और इस समय तो परिस्थिति ऐसी पैदा हो गयी है कि धनकी प्राप्ति भी बिना शिक्षाके नहीं हो सकती। अब प्रश्न यह है कि शिक्षा कैसी होनी चाहिये? मेरी रायमें केवल अक्षर-ज्ञान और किताबकी शिक्षा ही शिक्षा नहीं है। किताबकी शिक्षाके साथ-साथ आध्यात्मिक, व्यावहारिक और चारित्रिक शिक्षाकी आवश्यकता है। देशमें जो इस समय शिक्षा-प्रणाली प्रचलित है, वह केवल पुस्तक-शिक्षामें ही परिमित है। आजकलके ऐसे शिक्षित लोगोंमें व्यावहारिक, चारित्रिक और आध्यात्मिक शिक्षाका प्रायः अभाव ही देखा जाता है। इसलिये उन्हें अपनी धार्मिक मर्यादा, चारित्रिक उत्कृष्टता और व्यावहारिकताका कुछ भी विचार नहीं रहता। यह बहुत आवश्यक है कि वर्तमान शिक्षा-प्रणालीके सुधारका उद्योग किया जाय। इसके लिये चरित्रवान शास्त्रज्ञ विद्वानों और शिक्षा-तत्वविद् अनुभवी सज्जनोंकी सम्मतिसे कार्य करना चाहिये। मेरी समझमें तो यह ठीक होगा कि बड़े

बड़े नगरोंमें जहां उच्च शिक्षा प्राप्त करनेका प्रबन्ध है वहां अलग शिक्षालयोंके खोलनेका उद्योग न करके उन्हीं शिक्षालयोंसे काम लिया जाय और अपने छात्रावास खोले जायं जिनमें खाने-पीने और रहनेकी व्यवस्थाके अतिरिक्त छात्रोंके जीवनको संयत और धर्म-परायण बनानेका प्रबन्ध अवश्य रहे जिससे उनके चित्तमें अपनी सभ्यताके प्रति आग्रह उत्पन्न हो और स्वधर्मपर अटल श्रद्धाका भाव। यह होनेसे वे वर्तमान शिक्षालयोंकी धर्मशून्य शिक्षाके परिणाम-स्वरूप पश्चिमी सभ्यताके दास न बनेंगे। धार्मिक शिक्षा संस्कृत भाषाकी शिक्षाके बिना नहीं हो सकती, यह आपको बतलाना न होगा। छात्रावासोंकी बात बड़े नगरोंके लिये है। छोटे कस्बों और गांवोंमें यदि हर जगह ब्रह्मचर्याश्रम खोले जायं तो धार्मिक और चारित्रिक शिक्षाका प्रश्न सहजमें हल हो सकता है। ब्रह्मचर्याश्रम और छात्रावास खोलनेके साथ साथ हमारा यह भी काम है कि हम लोग कमसे कम १६ वर्षसे पहले अपने बालकोंसे धनोपार्जनकी आशा न रक्खें और उन्हें ब्रह्मचारी रखकर उनके भावी जीवनको सुखमय बनाव।

स्त्री-शिक्षा

महानुभावो,

बालकोंकी शिक्षाके सम्बन्धमें बोलते हुए यदि मैं स्त्री-शिक्षाके सम्बन्धमें कुछ न कहूं तो मैं समझता हूं मेरा कथन अधूरा ही रह जायगा। स्त्री-शिक्षा हमारे समाजमें कोई नयी बात नहीं है। पुराने जमानेमें हमारी गृह-ललनाएं शिक्षिता हुआ करती थीं। इसलिये वे अपने गृह-राज्यका प्रबन्ध करनेकी पूरी योग्यता रखती थीं। यह उसीका परिणाम था कि सम्मिलित परिवार-प्रथासे हमारा जीवन सुखमय था। परस्परकी कलह और ईर्षाका नाम न था। स्त्रियां घरकी अधिष्ठात्री हैं। उनकी अज्ञानतासे सन्तान भी अज्ञानान्धकारसे आच्छन्न रहती है। आज घर घरमें कलह तथा फूटकी जो प्रधानता दिखलाई दे रही है, इसका मुख्य कारण स्त्री-शिक्षाका अभाव ही है। मैं तो यह

भी कह सकता हूं कि हमारे सुधारोंके प्रस्तावोंके अनुसार कार्य न होनेके मूलमें भी स्त्रियोंकी अज्ञानता ही काम कर रही है। स्त्रियोंको अशिक्षित रखना कर्त्तव्यसे विमुख रखना है। दूसरे शब्दोंमें यों कह सकते हैं कि स्त्रियोंको मूर्ख रखना अपने शरीरके आधे हिस्सेको निकम्मा बनाना है। यदि स्त्रियां शिक्षित होकर अपने धार्मिक कर्त्तव्यको समझने लगें तो सब गृहस्थोंके जीवनके सुखमय होनेमें सन्देह नहीं। आजकल बालक पैदा होते ही घरमें डाक्टर और वैद्यकी आवश्यकता होती है किन्तु पहले ऐसा नहीं था, घरकी स्त्रियां ही साधारण इलाज कर लिया करती थीं। वे धर्मपरायण देवियां गृह-प्रबन्ध-कुशला होनेके कारण अपने पतियोंको अच्छी सलाह देनेवाली थीं। आजकल हमारे समाजमें पतिपूजा, भगवत्स्मरण आदिके स्थानमें टोना-टामन या पीर-पूजाकी मानता स्त्रियोंमें देखी जाती है जिसके विषमय फलसे आप अपरिचित न होंगे। यह सब स्त्रियोंके अज्ञानका ही कारण है। स्त्री-शिक्षासे मेरा मतलब आजकलके पश्चिमी ढङ्गकी शिक्षासे बिलकुल नहीं है। मैं नहीं चाहता कि हमारी स्त्रियां घरके कामकाजको भूलकर बूट पहन छाता लगा मेमोंका प्रतिरूप बन बाजारमें घूमें। इस शिक्षाको तो मैं कुशिक्षा समझता हूं। हमारी बालिकाओंको ऐसी शिक्षा देनेकी व्यवस्था करनी चाहिये जो हमारी प्राचीन सभ्यता और धर्म-मर्यादाके अनुकूल हो। उस शिक्षा द्वारा शिक्षित होकर बालिकाएं गृह-प्रबन्धमें कुशल, व्यवहारमें पटु, स्वधर्ममें निरत और परिवारमें प्रेम-प्रसारिणी, पतिकुल और पितृकुलका गौरव बढ़ाने वाली बनें।

व्यापार

मैं ऊपर कह आया हूँ कि इस समय शिक्षा बिना धनोपार्जन होना बड़ा कठिन हो गया है। व्यापारमें हम लोगोंको समस्त पृथ्वी भरके लोगोंसे मुकाबला करना है और वे लोग शिक्षित हैं, कलाकौशलमें पूर्ण

है, औद्योगिक धन्धोंको अच्छी तरह जानते हैं, वर्तमान व्यापारिक सङ्गठनोंके तरीकेसे परिचित हैं किन्तु हमलोग उन सबसे अनभिज्ञ हैं। नतीजा यह हुआ है कि हमलोग केवल सट्टेके सिवाय दूसरा काम जानते ही नहीं। मैंने खुद सट्टा किया है, और उससे क्या बुराइयां होती हैं इसका मुझे पूरा अनुभव है। मैं यही चाहता हूं कि हमारा समाज जितनी जल्दी हो इस सट्टेसे छुटकारा पाकर सच्चे व्यापारकी ओर अग्रसर हो। सच्चा व्यापार वही कहा जा सकता है जिसमें देश और मनुष्य जातिको लाभ पहुंचे। बड़े दुःखकी बात है कि जो कुछ भी औद्योगिक धन्धे लिमिटेड कम्पनियोंद्वारा भारतवर्षमें कायम किये गये, खासकर हमारे समाजके भाइयों द्वारा, उनमें अधिक सफलता नहीं हुई, इसमें अन्य कारणोंके साथ साथ मुझे एक कारण यह भी दिखाई देता है कि जो कम्पनीके मैनेजिंग एजेण्ट होते है वे शेयरहोल्डरोंके लाभको उतना नहीं देखते जितना देखना चाहिये और कम्पनी तथा देशकी भविष्य उन्नतिपर विशेष विचार न कर जितना सामयिक लाभ हो, उससे खुद उठा लेना चाहते हैं। इस समय व्यापारकी स्थिति बड़ी खराब है और किसी प्रकारका खास रास्ता बताना बड़ा कठिन है। मैं इतना ही कह देना चाहता हूं कि हमें बढ़ती हुई सट्टेकी आदतको छोड़ना चाहिये। इससे देश और जातिकी हानि है। सट्टेकी आदत लोगोंको निकम्मा बना देती है, सच्चे व्यापारकी ओर दृष्टि नहीं रहने देती। इस आदतको छोड़कर हम लोगोंको कम्पनियोंके ढङ्गपर उद्योगधन्धोंमें लगना चाहिये, अपने समाजके लोगोंको इन सब कामोंमें लेना चाहिये। सम्प्रति देशकी सब तरहकी अवस्थाको देखते हुए यह बड़ा ही कठिन दीख पड़ता है कि हम लोग विदेशी व्यापारियोंसे मुकाबला कर सकें, बहुतसे सुभीते हैं जो विदेशी व्यापारियोंको प्राप्त हैं दुर्भाग्यवश हमारे लिये उसके बदले कई प्रकारकी अड़चनें हैं परन्तु इन अड़चनोंके रहते हुए भी हम लोगोंको उद्योग-धन्धोंमें तो लगना ही होगा। बड़े बड़े उद्योग-धन्धोंको अभी न भी कर सकें तो गृह उद्योग-धन्धेको (Cottage Industry) तो

हम लोगोंको तुरन्त हाथमें ले लेना चाहिये। भारतवर्षमें अभी भी कितने ऐसे काम हैं जो हमारे देश भाई घर बैठे कर सकते हैं जैसे खादीका काम। राजपूताना इस कामके लिये बहुत ही उपयुक्त स्थान है और वैश्य होनेके नाते हम लोगोंका कर्तव्य है कि घर घरमें चर्खेका प्रचार कर राजपूतानेमें अच्छी तादादमें खादी तैयार करवावें जिससे हमारे बेकार बैठे हुए गरीब देश-भाइयोंको काम मिले और एक सर्वोपयोगी धन्धा जो कि देशमें खूब जोरोंसे था, पुनर्जीवित हो जाय। हां यह ठीक है कि खादी मंहगी पड़ती है परन्तु खादी पहननेवालोंको अन्तमें कपड़ेके लिये कम ही खर्च करना पड़ेगा। इस धन्धे की उपयोगिता हमारे प्रायः सभी देशी नरेशोंने स्वीकार की है। हमारे भाई सेठ जमनालालजी बजाजने जब राजपूतानेका दौरा किया था उस समय खादीके सम्बन्धमें राजपूतानाके माननीय ए० जी० जी० ने अपने १५-६-२५ के पत्रमें लिखा था—

"Seth Jamnalal showed to me some samples of hand-woven and hand-spun khaddar. I much appreciated the fineness of the cloth and the colouring. I have readily purchased some pieces. Weaving and spinning like this gives a lot of admirable employment to poor people and I think every encouragement should be given to this industry.

I hope sincerely that such encouragement will be given in Rajputana."

अर्थात् "सेठ जमनालालजीने मुझे कुछ नमूने हाथके कते सूतसे बने हुए शुद्ध खद्दरके दिखलाये। कपड़ेका रङ्ग और उसकी सफाईको मैंने बहुत सराहा और उसी समय कई थान खद्दरके खरीद लिये। इस प्रकारकी बुनाई और कताईसे गरीब लोगोंको श्लाघनीय कार्य मिल जाता है और मेरे विचारसे इस दस्तकारीको सब प्रकारसे प्रोत्साहन मिलना चाहिये। मैं सच्चे दिलसे आशा करता हूं कि इस प्रकारका प्रोत्साहन राजपूतानेमें खद्दरको दिया जायगा।"

हमें खद्दरकी इस उपयोगितासे लाभ उठानेमें नहीं चूकना चाहिये।

सामाजिक कुरीतियां

अब मैं अपने समाजमें फैली हुई कुरीतियोंकी ओर आपका ध्यान दिलाना चाहता हूं। उन कुरीतियोंके कारण समाजकी जो दुःस्थिति हो रही है वह आपकी आंखोंके सामने है। क्या यह आपको बतलाना पड़ेगा कि बाल-विवाहकी कुप्रथाने हमारे समाजको जीर्णशीर्ण कर दिया है। कामान्ध वृद्धोंकी विवाह-लालसाने कन्या-विक्रयके भयंकर पापके साथ साथ कितने ही पापोंसे समाजको दूषित कर दिया है। विधवाओंके आर्तनादसे हृदय कम्पित हो रहा है। फजूलखर्चीके कारण जाति तबाह हो रही है, सदाचारका स्थान अनाचारने ले लिया। यह दशा देखकर भी क्या हमलोग चुपचाप ही बैठे रहेंगे।

यदि आप इस दुर्दशासे अपनी जातिको बचाना चाहते हैं, तो अपनी जातीय महासभाके स्वीकृत प्रस्तावोंके अनुसार कार्य कीजिये। बाल-विवाहकी नाशकारी कुप्रथासे अपने समाजको बचानेके लिये यह निश्चय कीजिये कि कमसे कम १६ वर्षसे पहले हम अपने लड़कोंका विवाह नहीं करेंगे और उनकी चरित्र-रक्षाका पूरा ध्यान रक्खेंगे। अदि आप ऐसा करेंगे तो आपके युवकोंके मुरझाये हुए चेहरे खिल उठेंगे, उन्हें वैद्यों और डाक्टरोंसे ताकतकी दवा खानेकी जरूरत न रहेगी, न उनके शरीर रोगके घर बनेंगे। वृद्ध-विवाह केवल कन्या-विक्रयके पापका हेतु ही नहीं बल्कि व्यभिचार और विधवाओंकी संख्यावृद्धिका कारण भी है। इसे बन्द करनेके लिये किसी भी पुरुषको अधिक उम्रमें एक स्त्रीके मरजानेपर दूसरा विवाह नहीं करना चाहिये। यही प्रस्ताव महासभाने स्वीकार किया है। घरमें दुर्भाग्यवश जिसके विधवा पुत्र-वधू या भ्रातृ-वधू हो मेरी रायमें उस पुरुषको तो न केवल दूसरे विवाहसे बचना चाहिये बल्कि स्त्रीके जीवित रहते हुए भी स्त्री

और पुरुष दोनोंको अपने जीवनको ऐसा संयत और नियंत्रित बनाना चाहिये कि वैधव्यदुःख-दग्धा युवती पुत्र-वधू या भ्रातृ-वधूको धर्ममय जीवन व्यतीत करनेकी शिक्षा मिले। ऐसा होनेपर ही पातिव्रत-विघातक विधवा-विवाहको रोकनेके हम यथार्थ अधिकारी होकर हिन्दूधर्मके इस त्यागरूपी गौरवको अक्षुण्ण रख सकेंगे।

जिन कुरीतियोंकी बात कही जा चुकी है उनके सिवाय एक बड़ी कुरीति और है। यह कुरीति समाजके शरीरको "लकड़ीमें घुनकी तरह" खोखला कर रही है। यदि वह दूर कर दी जाय तो मुझे भरोसा है कि अन्य बहुतसी कुरीतियां स्वतः दूर हो जायंगी। वह कुरीति है विलासिता और फजूलखर्चीमें अपना बड़प्पन तथा गौरव समझना। पुराने जमानेमें हमारे पूर्वज अपने शरीरपर आवश्यकताके सिवाय और कुछ नहीं खर्च करते थे। जो धन बचता उसे सात्विक दानमें व्यय किया करते थे। परन्तु आजकल हमलोगोंने अनावश्यक आवश्यकताएं बढ़ा ली हैं। उन आवश्यकताओंसे शरीर और धन दोनोंकी हानि होती है। मुझे यह कहनेमें भी सङ्कोच नहीं कि उन आवश्यकताओंको पूर्ण करनेके लिये धनोपार्जनमें हमलोग धर्म अधर्मका ख्याल नहीं रखते। ऋण लेकर भी आवश्यकताओंको पूरा करते हैं जिसके फलसे जीवन दुःखमय हो जाता है। यदि हम लोग अपने पूर्वजोंकी तरह मोटा खाना, मोटा पहनना, और "कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन"—श्रीमद्भगवद्-गीताके इस वचनके अनुसार फल-प्राप्तिकी प्रत्याशाके बिना सात्विक दानमें धन व्यय करना अपना सिद्धान्त बनाकर तदनुरूप कार्य करें तो बहुतसा दुःख दूर हो जायगा और हमारा जीवन आडम्बरशून्य, सात्विक बन जायगा। फिर झूठी शानमें आकर लड़के लड़कियोंकी शादियों, गहनों, कपड़ों, दायजों, नुक्तों और हेड़ोंमें अपना सर्वस्व स्वाहा करनेकी नासमझी हम नहीं करेंगे। स्त्रियोंके गंदे गीत राजपूतानेसे बाहर बन्द हो गये हैं और कितनी ही जगह राजपूतानेमें भी इस लज्जाहीन प्रथाको लोगोंने बन्द कर दिया है परन्तु मुझे यह जानकर दुःख हुआ कि खास

जयपुरमें और कई एक स्थानोंमें वह कुप्रथा अभी तक प्रचलित है। जयपुरकी जीमनवारका जिक्र करते हुए भी मुझे खेद होता है। आम सड़कोंपर बैठकर जीमना पवित्रताका नाशक और भ्रष्टताका प्रचारक है और स्त्रियों तथा पुरुषोंका एक साथ बैठकर जीमना एवं स्त्रियोंको पुरुषोंका जिमाना तो बड़ी जबरदस्त कुरीति है सड़कोंपर बैठकर जीमना जिमाना बन्द होना चाहिये। यह हुए बिना स्त्रियोंकी मान-मर्यादाकी रक्षा नहीं हो सकती। मेल मुलाक़ातके लिये स्त्रियां निमन्त्रित होकर आवें तो उन्हें आदरके साथ मकानके भीतर उपयुक्त स्थानपर बैठाकर घरकी स्त्रियोंके द्वारा जिमानेकी व्यवस्था होनी चाहिये। इसके सिवाय—

वेश्यानाच तो खुला पाप है। हमारे सभी बुद्धिमान भाइयोंने इस पापसे अपनी जातिको बचानेका निश्चय कर लिया है। यदि कोई भाई अब भी अपनी नासमझीके कारण "वेश्यानाच" कराते हैं तो वे गहरी भूल करते हैं। उन्हें समझा देना चाहिये कि वेश्या-नाच और भांड़ोंका नाच आदि कुरीतियां हानिकारक हैं। स्मरण रखिये दृढ़तापूर्वक सब कुरीतियोंको दूर करनेपर ही जातिका सुधार होगा।

गोरक्षा

गोरक्षा हमारा धर्म और अवश्य पालनीय कर्त्तव्य है, इसके लिये अधिक आपसे क्या कहूं? खेदका विषय है कि अपने इस धर्म और कर्त्तव्यकी उपेक्षा हो रही है। जो जाति अपने धर्मकी या कर्त्तव्यकी उपेक्षा करती है, वह अपना अस्तित्व अधिक समय तक स्थिर नहीं रख सकती। मेरी प्रार्थना है कि अपने गोरक्षा धर्मको हम न भूल और शास्त्रोंकी इस आज्ञाको स्मरण रक्खें:—

"यस्य गोस्तु गृहे नास्ति श्मशानसदृशं हि तत्"

अर्थात् जिस घरमें गाय नहीं वह श्मशानके सदृश है। इस समय गोवंशपर घोर विपत्ति आयी हुई है, अतएव हमें अपना कर्त्तव्य सावधानीसे पालन करना उचित है। किसी अहिन्दूके हाथ हमें गाय न

बेचनी चाहिये और गोदान किसी ऐसे पात्रको न देना चाहिये जो उसका पालन करनेमें असमर्थ हो।

विशेष प्रार्थना

अन्तमें मैं यह प्रार्थना करना चाहता हूं कि आप लोग समाज-सुधारके जिन प्रस्तावोंको स्वीकार करें उनके पालन करनेके लिये सदा स्वयं तत्पर रहें। बिना ऐसा किये केवल प्रस्तावों या सम्मेलनोंसे कोई लाभ नहीं है। आप लोगोंने कृपापूर्वक मेरे वक्तव्यको ध्यानसे सुना—इसके लिये मैं पुनः आपको धन्यवाद देकर अपना स्थान ग्रहण करता हूं।

भाषणके समाप्त होनेपर ज्यों ही आप टेबिलसे ज़रा हटे होंगे कि बस फिर क्या था। जो जादू आपने उपस्थित सज्जनोंपर अपने भाषणके शब्दों तथा मधुर वाणी द्वारा कर रक्खा था, वह एक दम हट गया और चारों ओर इतने जोरसे जयध्वनि हुई कि पासके बैठे हुए आदमी भी परस्पर एक दूसरेकी बातको नहीं सुन सकते थे।

तत्पश्चात् जब लोग अपने दिलकी उमङ्गोंको जयध्वनि द्वारा निकाल चुके तब स्वागतकारिणी समितिके प्रधान मन्त्री श्रीयुत सेठ विजयनारायणजी टेमाणीने सहानुभूतिसूचक सन्देश-स्वरूप कई तार तथा पत्र पढ़कर सुनाए।

तदनन्तर श्रीयुत सेठ मदनलालजी जालान (फतेहपुर निवासी) ने यह सूचना दी कि रात्रिको ६ बजेसे विषयनिर्वाचिनी समितिकी बैठक होगी। आपने सूचना देते समय यह भी बतलाया कि विषय-निर्वाचिनी समिति क्या कार्य किया करती है और कितने कितने प्रतिनिधि हरएक जिलेमेंसे राजपूताना प्रान्तीय सभाके नियमानुसार विषय-निर्वाचिनी समितिके सदस्य बन सकते हैं। आपने यह भी सूचना दी कि प्रत्येक जिलेसे जो जो प्रतिनिधि इस समितिके लिए चुने जायं उनकी सूची सभापतिजीके पास शीघ्र ही भेज दी जावे।

अनन्तर सभापति महोदयकी आज्ञासे सभा विसर्जित हुई।

पुनः रात्रिको ६ बजेसे १२ बजेतक विषयनिर्वाचिनी समितिका कार्य हुआ।

द्वितीय दिवसकी कार्यवाही

मिती माघ शुक्ला ६ सम्वत १९८२ तदनुसार ता० १९ जनवरी सन् १९२६ ई० को सम्मेलनके दूसरे दिवसकी कार्यवाही प्रारम्भ हुई।

श्रीयुत विजयनारायणजी टेमाणी प्रधान मन्त्री जाकर सभापति महोदयको उनके निवास-स्थानसे एक बजे सभामण्डपमें लाये। उनके पधारनेसे पहिले ही प्रतिनिधि तथा स्वागतकारिणी समितिके सदस्य व दर्शकगण मण्डपमें अपने अपने नियुक्त स्थानपर नियमानुसार बैठे हुए थे। मंचपर प्रान्तीय सभाकी कार्य-कारिणी समितिके पदाधिकारी तथा स्वागतकारिणी समितिके पदाधिकारी पहिलेसे ही विराजमान थे। उपदेशकगण भी अपने अपने स्थानपर जचे हुए थे। सभापतिजीके मंडपमें पधारते ही जयध्वनिके साथ आपका स्वागत हुआ और आपने पुष्पोंकी वर्षाके साथ मंचपर अपना आसन ग्रहण किया। आज सभामंच अधिक शोभायमान नज़र आता था क्योंकि जयपुरके कई प्रतिष्ठित, समाज-हितैषी सज्जन भी आज उपस्थित थे, जिनमेंसे मुख्य मुख्यकी नामावली नीचे दी जाती है—

(१) श्रीयुत रायबहादुर सेठ नानगरामजी जोहर बी० ए० एल० एल० बी० जज चीफकोर्ट

(२) सेठ रामप्रतापजी खूंटेरा मेम्बर मिलीटरी डिपार्टमेन्ट कौन्सिल

राजपूताना प्रान्तीय मारवाड़ी अग्रवाल सम्मेलन (जयपुर) के उपस्वागताध्यक्ष सेठ शिवनारायणजी केडिया।

राजपूताना प्रान्तीय मारवाड़ी अग्रवाल सम्मेलन (जयपुर)
के प्रधान मन्त्री सेठ विजयनारायणजी टेमाणी।

(३) श्रीयुत ठाकुर हरीसिंहजी लाडखानी
(४) „ पं० बिहारीलालजी बी० ए० सुपरिन्टेन्डेन्ट कसटम्स
(५) „ स्वामी लच्छीरामजी आयुर्वेदाचार्य
(६) „ पं० सूर्य्यनारायणजी आचार्य
(७) „ चिकित्सक-चूड़ामणि पं० श्यामलालजी राजवैद्य
(८) „ महामहोपाध्याय पं० गिरधरजी शर्म्मा
(९) „ डाक्टर राधाकृष्णजी
(१०) श्रीयुत सेठ सूरजमलजी पटोलिया
(११) „ गणेशलालजी तोवी
(१२) „ घीसीलालजी गोलेछा
(१३) „ मुन्शी मूलचन्दजी बी० ए० हेडमास्टर अग्रवाल पाठशाला
(१४) „ पं० गोविन्दनारायणजी जौहरी

सभापतिजीके आसन ग्रहण करते ही आपकी आज्ञासे आजकी कार्यवाही प्रारंभ हुई और नवलगढ़के ब्रह्मचारियोंने वेद-पाठ करके इसका श्रीगणेश किया। तदनन्तर श्रीयुत पण्डित नारायणप्रसादजी शास्त्री उपदेशकने ईश्वर-प्रार्थना करके सब लोगोंके हृदयको निर्मल तथा शान्त किया।

इसके बाद श्री अग्रवाल पाठशाला जयपुरके छात्रोंने निम्न लिखित स्तुति बड़े ही मधुर स्वरसे गाई :—

(१) प्रभो ! नित्य ! चैतन्य ! आनन्दकन्द !
जय श्रीपते विश्वमूर्त्ते मुकुन्द।
तुम्हीं हो जगन्नाथ ! कारुण्यसिन्धु,
तुम्हीं सृष्टिके हेत हो दीनबंधु ॥

(२) तुम्हीं मत्स्य-कूर्मादिकी देहधारी,
रखा धर्म सच्चा धराको उबारी।
गुणोंकी करें वर्णना क्या तुम्हारी ?
महेशादिकी भी जहाँ शक्ति हारी ॥

(३) करो दूर अज्ञान सारा हमारा,
मिटाओ प्रभो शीघ्र सन्ताप सारा।
हमारी करो चित्तकी वृत्ति शुद्ध,
न हो मोह सारे सदा हों प्रबुद्ध ॥

(४) पदम्भोजकी भक्ति देओ तुम्हारी,
रखो धर्ममें नित्य आस्था हमारी।
पढ़ें सर्व विद्या सदा प्रेमसे ही,
करें सर्व व्यापार भी क्षेमसे ही ॥

(५) सभी मानवोंमें रहे एकता भी,
न हो भेद, प्रद्वेष, ईर्षा कदा भी।
सदा ही प्रजामें बहे शान्ति वायू ;
सभी बाल बूढ़े सदा हों चिरायू ॥

(६) प्रतापी महा जार्ज राजा हमारे,
जिन्होंसे मही पूर्ण सौभाग्यधारे।
प्रभो ! वे महा नीति चातुर्य धारी,
सुखी हो रहे आयु पावें हजारी ॥

(७) हमारे महाराज श्रीमानसिंह,
दरें दर्प प्रह्लाद पोषें नृसिंह।
दया-सिन्धु जय-नम्र शान्ति प्रचारें,
सुखी हों सदा रामसे धर्म धार ॥

(८) अनीति नसावें कुव्यवहार काढ़,
प्रचारें सुविद्या सुव्यवहार बाढ़ें।
बनें धीर वीर प्रतापी कहावें,
"हरि" प्रार्थना यों सभी बाल गावें ॥

इस स्तुतिको सुनकर नवलगढ़के ब्रह्मचारियोंके मनमें भी उत्साह उत्पन्न हुआ और उन्होंने भी निम्न-लिखित स्तुति उसी प्रकार सुरीलीसे गाकर उपस्थित सज्जनोंके हृदय-कमलोंको प्रफुल्लित किया :—

शरण हम बाल हैं, कुछ काम सिखादो भगवन् !
हमको संसारमें, आदर्श बनादो भगवन् ॥ १ ॥

जिसका मुनिलोग करें, ध्यानसे हरदम सुमिरन।
क्यों न उस मूर्त्तिका आभास दिखादो भगवन् ॥ २ ॥

जिसके प्रति अंगकी शोभा पै करोड़ों कन्दर्प।
वार दूं तो भी है दीपक, का दिखाना भगवन् ॥ ३ ॥

देखती गाय खड़ी, रोरो कर बन बन में।
फिरसे गोपालके, गोपाल दिखादो भगवन् ॥ ४ ॥

जिसके गुण गानको, शत शेष नहीं कर सकता।
किसकी सामर्थ्य है अब,इससे अगाड़ी भगवन् ॥ ५ ॥

द्वेष ईर्षाको तजें, प्रेम करें आपसमें।
प्रेमरस पान करादो, ज़रा हमको भगवन् ॥ ६ ॥

टेर 'जयदेव' बड़े पुण्य, से नरतन पाया।
हमको संसारमें, सन्मार्ग दिखादो भगवन् ॥ ७ ॥

इसके पश्चात् श्रीयुत सेठ दुरगालालजी जौहरीके स्थानीय कन्या पाठशालाकी कन्याओंने निम्न-लिखित स्तुतियां गाई :—

सरस्वती-स्तुति

स्वागत शशि मुख सारदे, कर जोड़कर विनती करें।
सित हंस वाहनगामिनी, नित ध्यान हम तेरा धरें॥

तेरे चरण मातेश्वरी, शुभ दान विद्याका करें।
उनहीं सुकोमल चरण-युगके हम सुपूजक बालि हैं।

मूर्खता दारिद्रता जगके जिते जंजाल हैं।
दूर रख हमसे हमेशा, हम तिहारी लाल हैं॥

ईश्वर-स्तुति

हे दयामय! हे प्रभो!
सद्बुद्धि हमको दीजिए।
बालिका अबला समझ—
करके शरणमें लीजिए॥

आपकी वर भक्तिसे,
अपना हृदय-मन्दिर भरें।
शान्ति सुखका बास,
हम अपनी गृहस्थीमें कर॥

आत्म-बल दो, धैर्य दो,
हम सह सकें सब क्लेशके।
प्रेमसे धारण करें,
शुभ धर्मके उपदेशको॥

शिक्षिता, साध्वी, सुशीला,
वीर नारी हम बनें।
जानकी, तारा सती,
कृष्णाकुमारी हम बनें॥

तत्पश्चात् सभापति महोदयने निम्नलिखित प्रथम और द्वितीय प्रस्ताव उपस्थित किये जो सर्व-सम्मतिसे स्वीकृत हुये :—

१—यह राजपूताना प्रान्तीय मारवाड़ी अग्रवाल सम्मेलन श्रीमहाराजाधिराज श्री १०८ श्री सवाई मानसिंहजी बहादुर जयपुर-नरेशका अत्यन्त आभार मानता है कि आपकी छत्र-छायामें यह सम्मेलन करनेका हमको सौभाग्य प्राप्त हुआ।

२—यह सम्मेलन मारवाड़ी समाजके हितैषी स्वर्गीय सेठ नवरङ्गरायजी खेतान (जयपुर निवासी), सेठ चम्पालालजी दादियावाले (नसीराबाद निवासी) और सेठ जयनारायणजी डाणी (बम्बई) की मृत्युपर शोक प्रगट करता है।

तदनन्तर श्रीयुत मदनलालजी जालान (फतेहपुर निवासी) ने जातिकी फिजूलखर्चियोंपर तथा विवाहके समय वर अथवा कन्याकी आयु कम होनेसे जो हानियां समाजको पहुंचती हैं उनपर अपने शुभ विचार मंडपमें प्रतिनिधियोंके सामने प्रगट करते हुए निम्न-लिखित प्रस्ताव उपस्थित किया:—

३—यह सम्मेलन सगाई तथा विवाह सम्बन्धी कार्योंमें निम्न-लिखित सुधारोंकी आवश्यकता समझता है :—

(क) सगाई करते समय वर और कन्याके स्वास्थ्य और चारित्र-योग्यता पर विशेष ध्यान रखना चाहिये।

(ख) लड़केकी अवस्था सगाईके समय १२ वर्षसे कम न हो।

(ग) विवाहके समय वरकी आयु पूर्ण १६ वर्षसे कम न हो।

(घ) कन्याकी आयु विवाहके समय १२ वर्षसे कम न हो। विशेष अड़चन होनेपर स्थानीय पंचायतकी आज्ञासे ११ वर्षकी अवस्थामें भी किया जा सकता है।

(ङ) हराभरा या टीका १०१) से अधिक न लिया और न दिया जाय।

(च) आंगीमेवा न लिया जाय और न दिया जाय।

(छ) दहेज लेने और देने वालेकी ओरसे किसी प्रकारका दिखावा किसी बहानेसे न किया जाय।

(ज) विवाहमें भण्डार (बढार) न किया जाय। वरके पिताको जितनी भरी पत्तलें देनी हों उतनी सजन-गोठके पहिले लड़कीवाला लड़केवालेसे पूछकर भेज दे। भत्तीको भी इसी प्रकार आवश्यकतानुसार पत्तलें मंगवा लेनी चाहिये। चौकीपर न बैठाया जाय। जमाई, भाई, जनेती और घरू ब्राह्मणका पल्ला न किया जाय।

(झ) विवाहमें फेरोंकी जीमनवार बन्द कर दी जाय। यदि जनेत बाहर जावे तो यह प्रस्ताव लागू न होगा।

(ञ) जिन भाइयोंके यहां बिनोरी निकलती है वे एकही दफा बिना किसी जुलूसके निकाल सकते हैं।

(ट) अश्लील गीत और टूँटिया बन्द कर दिया जावे।

(ठ) आतिशबाजी, जजुरवा, हवाईगोला, उछाल, बाग-बाडी, वेश्या-नृत्य, भांड़ोंका तमाशा, स्वांग, हथरसियोंका खेल, नाटक, सिनेमा, जादू आदि किसी प्रकारके खेल न कराये जायं।

(ड) स्त्रियोंका कुम्हारके घर चाक पूजने जाना, घुड़चढ़ीके समय गधैयाका बुलवाना, किसी अपवित्र पदार्थका पुजवाया जाना तथा चोल निकालनेकी प्रथाको बिलकुल बन्द किया जावे। विवाहमें जुआ न खेलाया जाय।

(ढ) पुरुषोंकी केवल एक ही मिलनी हो और उसमें ४) से अधिक न दिया जाय। इसके सिवाय मिलनी के समय वर तथा किसीको भी कुछ न दिया जाय।

(ण) स्त्रियोंकी भी मिलनी इसी प्रकार हो और उसमें अधिकसे अधिक २१) दिये जायं।

(त) विवाहमें केवल वरको ही पहिरावनीके समय दुशाला बढ़ाया जाय।

(थ) विवाहमें बींद और बींदनीके लड्डू न बांटे जायं।

(द) लड़केके विवाहमें मेलकी जीमनवारके बाद प्रीति-भोजनके नामसे दूसरी जीमनवार न की जाय।

(ध) लड़कीके विवाहमें मेलकी जीमनवार न की जाय।

(न) विवाहके समय जलेबी, बड़ा सीरा आदि न दिया जाय।

(प) विवाहमें बेटेवालेकी ओरसे भाजी यानी छन्नी, कटोरा, परात, थान, बसना आदि न बांटे जांय।

(फ) जनेतमें १०० आदमियोंसे अधिक न ले जाये जायं।

(ब) मुकलावेमें अधिकसे अधिक लड़कीको ११ तोल और उसकी सासको ७ तोल दी जायं।

(भ) सम्मेलनकी रायमें विवाह लड़कीवालेके ही स्थानपर होना उचित है, इसलिए लड़केवालेका कर्त्तव्य होना चाहिये कि लड़कीवालेकी जहां इच्छा हो उसी स्थानपर विवाह हो और लड़केवाला लड़कीवालेके यहां उठकर जानेके लिये दबाव न डाले।

(म) उपर्युक्त प्रस्तावोंको कार्य-रूपमें परिणित करनेके लिये समाजके सामने त्यागका आदर्श रखनेसे ही जातिका उत्थान हो सकता है। इसलिये आवश्यक है कि निम्न-लिखित प्रतिज्ञापत्रपर हस्ताक्षर कराये जांय।

प्रतिज्ञा

बाल-विवाहसे समाजको बड़ी हानि पहुंचती है, इसलिये उसको रोकना आवश्यक है। अतः हम प्रतिज्ञा करते हैं कि, जिस विवाहमें वरकी आयु पूर्ण १६ वर्षसे कम होगी, उस विवाहमें वरपक्षकी ओरसे

किसी भी विवाह-सम्बन्धी सामाजिक काममें हमलोग सम्मिलित न होंगे।

श्रीयुत सेठ जमनादासजी पोद्दार (दिल्ली निवासी) ने इस प्रस्तावका अनुमोदन करते हुए यह कहा कि कितना अच्छा हो यदि जितना धन विवाहादिमें समाज व्यर्थ बातोंमें खर्च करता है उसको बचाकर अपने बालकोंको उच्च कोटिकी लौकिक तथा धार्मिक शिक्षा दिलानेका प्रबन्ध इस धनसे करे और बालकोंका विवाह कम आयुमें करके उनके स्वास्थ्यको नष्ट न करे।

श्रीयुत काशीप्रसादजी नेवटियाने इस प्रस्तावका समर्थन किया।

अन्तमें प्रस्ताव सर्वसम्मतिसे स्वीकृत हुआ।

इसके पश्चात् श्रीयुत विजयनारायणजी टेमाणी (जयपुर निवासी) ने कन्याविक्रयपर बड़ा ही जोशीला व्याख्यान देकर और ऐसे लोगोंपर जो कन्यायोंके रुपये लेते, देते तथा दिलाते हैं बहुत घृणा प्रकट करके निम्नलिखित प्रस्ताव उपस्थित किया :—

४—दुर्भाग्यसे जातिमें कुछ ऐसे लोग हैं जो कन्याओंका रुपया लेकर समाजको कलंकित करते हुए स्वयं पापके भागी होते हैं। सम्मेलनकी दृष्टिमें वे घृणास्पद हैं। इसलिये यह सम्मेलन इस निन्दनीय प्रथाको नष्ट करनेके लिये जाति-भाइयोंको आदेश देता है कि कन्याका द्रव्य लेने, देने व दिलानेवालोंसे किसी प्रकारका जातीय सम्बन्ध न रखें।

श्रीयुत बंशीधरजी (नीमका थाना निवासी) ने इस प्रस्तावका अनुमोदन किया और श्रीयुत गुलाबचन्दजी (सांभर निवासी) ने इसका समर्थन किया। प्रस्ताव सर्व-सम्मतिसे स्वीकृत हुआ।

इसके बाद सभापति महोदयने निम्न-लिखित प्रस्ताव उपस्थित किया जो सर्व-सम्मतिसे स्वीकृत हुआ:—

५—एक स्त्रीके रहते कोई पुरुष दूसरा विवाह न करे। यदि करे तो उसके लिए सम्मेलन जातिको आज्ञा देता है कि कन्या और वर दोनों पक्षवालोंको उचित दण्ड दे।

तत्पश्चात् श्रीयुत काशीप्रसादजी नेवटियाने निम्न-लिखित प्रस्ताव उपस्थित किया।

६—यह सम्मेलन ४० वर्षसे ऊपर विवाह करनेवालेको अत्यन्त घृणाकी दृष्टिसे देखता है और ऐसे विवाह करनेवालोंको सावधान करता है कि उनका यह काम समाजके लिए हानिकर और उनके लिए घोर आपत्ति-जनक है। यदि कोई विवाह करे तो जाति-पञ्चायत विवाह करनेवालेको उचित दण्ड दे।

प्रस्तावक महोदयने जनताके स्वास्थ्य तथा औसत आयुकी ओर सबका ध्यान आकर्षित करते हुए यह कहा कि ऐसी हालतको देखते हुए उचित यही मालूम होता है कि ४० वर्षसे अधिक आयुमें कोई विवाह न करे; क्योंकि जातिमें इसी कारणसे व्यभिचार फैलनेकी संभावना है और यही कारण है कि आज हमारे समाजमें असंख्यात युवावस्था विधवाएं नजर आती हैं।

श्रीयुत गंगाधरजी नेवटियाने इस प्रस्तावका अनुमोदन किया और श्रीयुत विजयनारायणजी टेमाणीने इसका समर्थन किया। प्रस्ताव सर्व-सम्मतिसे स्वीकृत हुआ।

तदनन्तर सभापति महोदयद्वारा निम्नलिखित प्रस्ताव उपस्थित किये गये, जो सर्व-सम्मतिसे स्वीकृत हुए :—

७—यह सम्मेलन जाति-भाइयोंसे अनुरोध करता है कि, प्रत्येक अग्रवाल भाई लड़केके जन्म और लड़का-लड़कीके विवाहके अवसरपर कमसे कम १।) महासभा द्वारा अनुमोदित स्थानीय पंचायतको देवे। यह रकम आधी स्थानीय कामोंमें खर्च की जावे और आधी प्रान्तीय सभाको भेज दी जाय। आवश्यकतानुसार इस विभागमें कमी-बेशी भी हो सकेगी।

८—यह सम्मेलन इच्छा प्रकट करता है कि जातिके समस्त भाई महाराजा अग्रसेनका स्मारक-उत्सव प्रतिवर्ष आश्विन सुदी १ को उत्साहपूर्वक मनावें और बन्दी रखें।

इसके बाद श्रीयुत बिजयनारायणजी टेमाणीने उपस्थित सज्जनोंका ध्यान इस ओर आकर्षित किया कि स्त्रियोंका बाज़ारोंमें गीत गाना समाजके लिये कितनी लज्जाकी बात है। यह कहकर आपने निम्न-लिखित प्रस्ताव उपस्थित किया :—

९—यह सम्मेलन इच्छा प्रकट करता है कि स्त्रियोंका बाजारोंमें गीत गाना कतई बन्द कर दिया जावे।

श्रीयुत जमनादासजी पोद्दारने इस प्रस्तावका अनुमोदन किया।

इस विषयपर श्रीयुत पंडित सूर्य्यनारायणजी आचार्य (जयपुर निवासी) ने बड़ा प्रभावशाली व्याख्यान दिया। आपने अपने मनो-रंजक व्याख्यानमें यह कहा कि यह उन लोगोंके लिये बड़ी लज्जाकी बात है जिनकी स्त्रियां बाजारोंमें अश्लील गीत गाती हैं।

अंतमें प्रस्ताव सर्व-सम्मतिसे स्वीकृत हुआ।

इसके पश्चात् श्रीयुत गट्टीलालजी चौधरी (जयपुरनिवासी) ने गोरक्षाकी महिमाका वर्णन करते हुए निम्नलिखित प्रस्ताव उपस्थित किया :—

१०—सम्मेलनकी सम्मतिमें देश, धर्म, धन और बलकी रक्षाके लिये गोरक्षा करना परम धर्म है। व्यापार और कृषिकी बुनियाद गोरक्षा है। सम्मेलन गोरक्षाको वैश्यधर्मका मुख्य अङ्ग मानता हुआ अनुरोध करता है कि सब भाई मनसा-वाचा-कर्मणा गोरक्षाकी चेष्टा करें।

(क) यह सम्मेलन वर्तमान पींजरापोलोंसे सन्तुष्ट नहीं है और उनमें ऐसा सुधार चाहता है कि, बूढ़ी गायोंके पालनके साथ ही साथ जवान गायोंका पालन-पोषण किया जाय, जिससे बूढ़ी और जवान दोनोंकी जीवरक्षा हो सके। देशवासियोंको पवित्र दूध, घी इत्यादि मिल सकें। पींजरापोलें अपने पैरोंपर खड़ी हो सकें।

(ख) प्राचीन कालमें प्रत्येक राज्यकी ओरसे गौओंके लिये गोचर-भूमि छोड़ी जाती थी। अब वह प्रायः नहीं छोड़ी जातीं। कई जगह तो छोड़ी हुई गोचरभूमि भी दूसरे कामोंमें ले ली गई है, अतएव सम्मेलन देशी राजाओंसे निवेदन करता है कि वे गोचरभूमि छोड़ें।

श्रीयुत कालूरामजी अग्रवाल बी० ए० (जयपुरनिवासी) ने इस प्रस्तावका अनुमोदन किया।

इस विषयपर श्रीयुत पंडित गिरधरजी शर्म्मा महामहोपाध्याय (जयपुरनिवासी) का मनोरंजक तथा प्रभावशाली वक्तव्य हुआ। अंतमें प्रस्ताव सर्व-सम्मतिसे स्वीकृत हुआ।

इसके बाद श्रीयुत केदारनाथजी गोयनकाने मृतकके खर्चपर जाति-भाइयोंकी जीमनवार करनेमें फिजूलखर्ची तथा नीति-प्रतिकूलता सब उपस्थित प्रतिनिधियोंपर दर्शाते हुए और मृतकपर जीमनेको अत्यन्त घृणास्पद सिद्ध करके निम्नलिखित प्रस्ताव उपस्थित किया :—

११—यह सम्मेलन मृतकके खर्चपर बिरादरीको जिमाना अच्छा नहीं समझता, इसलिये जाति-भाइयोंसे अनुरोध करता है कि, मृतकके खर्चपर न बिरादरीमें मिठाई बांटी जाय और न किसी पुरुष तथा स्त्रीका नुकता किया जाय। केवल पंचलोग जाकर पगड़ीका दस्तूर करा दें।

(क) मृतकके खर्चके समय जो ह्याण अथवा बसना बांटा जाता है वह न बांटा जाय।

(ख) हेडा देनेकी प्रथा फौरन रोक दी जाय।

श्रीयुत खेमचन्द्रजी गुप्त (कोटानिवासी) ने इस प्रस्तावका अनुमोदन किया।

श्रीयुत बिजयनारायणजी टेमाणीने इस प्रस्तावका यह संशोधन उपस्थित किया कि स्त्रीका नुकता तो बिल्कुल न किया जाय और पुरुषका नुकता ४० वर्षसे ऊपर आयुवालेका एक स्थानमें केवल एक ही दफा किया जाय।

श्रीयुत कालूरामजी अग्रवाल बी० ए० ने इस संशोधनका

अनुमोदन किया और श्रीयुत रामनिवासजी चौधरी (जयपुरनिवासी) ने इसका समर्थन किया।

इसपर श्रीयुत नानूलालजी शास्त्री (जयपुरनिवासी) ने इस संशोधनका भी यह संशोधन उपस्थित किया कि, स्त्रीका भी ४० वर्षसे अधिक आयुवालीका नुकता किया जावे। श्रीयुत लछमी-नारायणजी चौधरी (जयपुरनिवासी) ने इस दूसरे संशोधनका अनुमोदन किया।

श्रीयुत केदारनाथजी गोयनकाने दोनों संशोधनोंका तथा श्रीयुत विजयनारायणजी टेमाणीने अपने संशोधनके पक्षमें दूसरे संशोधनका उत्तर दिया।

अंतमें दूसरे संशोधनपर सम्मति ली गई और यह संशोधन बहु-मतसे गिर गया। केवल मूल प्रस्ताव और उसके पहिले संशोधनपर विचार होने लगा। इसपर बहुत वाद-विवाद हुआ। इसीमें शामके पांच बजेका समय हो गया। इसलिये सभापति महोदयने यह निर्णय किया कि, आज ५॥ बजेसे विषय-निर्वाचिनी समितिकी बैठक होगी, उसके लिये समय कम रह गया है,इसलिये यह प्रस्ताव आगामी दिवस-की बैठकमें रखा जाय। यह कहकर आपने सभा विसर्जित की।

फिर शामको ५॥ बजेसे रात्रिके आठ बजेतक विषय-निर्वाचिनी समितिकी बैठक हुई।

तृतीय दिवसकी कार्यवाही

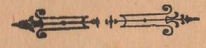

मिति माघ शुक्ला ७ सम्वत् १९८२ तदनुसार ता० २० जनवरी सन् १९२६ ई० को सम्मेलनके अन्तिम दिवसकी कार्यवाही प्रारंभ हुई।

प्रधान मंत्री श्रीयुत विजयनारायणजी टेमाणी सभापति महोदयको, उनके निवास-स्थानसे जाकर पार्टी-सहित लाये और ११ बजेसे १२॥ बजेतक विषय-निर्वाचिनी समितिकी बैठक हुई।

तत्पश्चात् श्रीमान् सभापति महोदयने स्वागत-कारिणी समितिके पदाधिकारियों तथा जाति-सेवकोंद्वारा घिरे हुए जयध्वनिके साथ सभामंडपमें मंचपर अपना आसन ग्रहण किया और सब पदाधिकारी तथा प्रतिनिधि व दर्शकगण अपने २ नियुक्त स्थानपर बैठ गये।

आज सभामंडपमें उपस्थिति प्रथम और द्वितीय दिवसोंसे भी अधिक थी। सभामंडप इतना विशाल होनेपर भी छकाछक भरा हुआ था। लगभग छः-सात हजार पुरुष और पांच छः सौ महिलायें उपस्थित थीं। अन्य प्रतिष्ठित सज्जन भी आज अधिक संख्यामें पधारे थे। इनमेंसे मुख्य २ के नाम निम्नलिखित हैं—

(१) श्रीयुत रायबहादुर पुरोहित गोपीनाथजी, एम० ए० सी० आई० ई०, मेम्बर महकमा खास।

(२) श्रीयुत ठाकुर जसवन्त सिंहजी बगरू।

(३) श्रीयुत ठाकुर कल्याणसिंहजी शेखावत, बी० ए०, आफ खाचरियावास, जज, चीफकोर्ट।

(४) „ ठाकुर हरिसिंहजी लाडखानी।

(५) „ रायबहादुर सेठ नानगरामजी जोहर बी० ए०, एल० एल० बी० जज, चीफकोर्ट।

(६) „ सेठ रामप्रताबजी खूंटेटा, मेम्बर, मिलिटरी डिपार्ट-मेन्ट, कौन्सिल।

(७) „ सेठ प्यारेलालजी कासलीवाल, बी० ए०, मेम्बर, रिवेन्यू डिपार्टमेन्ट, कौन्सिल।

(८) „ रायसाहिब मुन्शी राधामोहनलालजी बी० ए०, जज चीफकोर्ट।

(९) „ रावबहादुर डाक्टर दलजंग सिंहजी खानका, एम० बी०, सुपरिन्टेन्डेन्ट, मेडिकल डिपार्टमेण्ट।

(१०) „ स्वामी लच्छीरामजी आयुर्वेदाचार्य।

(११) „ मुन्शी मथुराप्रसादजी जज, अपेलेट कोर्ट।

अनुमोदन किया और श्रीयुत रामनिवासजी चौधरी (जयपुरनिवासी) ने इसका समर्थन किया।

इसपर श्रीयुत नानूलालजी शास्त्री (जयपुरनिवासी) ने इस संशोधनका भी यह संशोधन उपस्थित किया कि, स्त्रीका भी ४० वर्षसे अधिक आयुवालीका नुकता किया जावे। श्रीयुत लछमी-नारायणजी चौधरी (जयपुरनिवासी) ने इस दूसरे संशोधनका अनुमोदन किया।

श्रीयुत केदारनाथजी गोयनकाने दोनों संशोधनोंका तथा श्रीयुत विजयनारायणजी टेमाणीने अपने संशोधनके पक्षमें दूसरे संशोधनका उत्तर दिया।

अंतमें दूसरे संशोधनपर सम्मति ली गई और यह संशोधन बहु-मतसे गिर गया। केवल मूल प्रस्ताव और उसके पहिले संशोधनपर विचार होने लगा। इसपर बहुत वाद-विवाद हुआ। इसीमें शामके पांच बजेका समय हो गया। इसलिये सभापति महोदयने यह निर्णय किया कि, आज ५॥ बजेसे विषय-निर्वाचिनी समितिकी बैठक होगी, उसके लिये समय कम रह गया है,इसलिये यह प्रस्ताव आगामी दिवस-की बैठकमें रखा जाय। यह कहकर आपने सभा विसर्जित की।

फिर शामको ५॥ बजेसे रात्रिके आठ बजेतक विषय-निर्वाचिनी समितिकी बैठक हुई।

तृतीय दिवसकी कार्यवाही

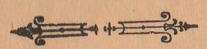

मिति माघ शुक्ला ७ सम्वत् १९८२ तदनुसार ता० २० जनवरी सन् १९२६ ई० को सम्मेलनके अन्तिम दिवसकी कार्यवाही प्रारंभ हुई।

प्रधान मंत्री श्रीयुत विजयनारायणजी टेमाणी सभापति महोदयको, उनके निवास-स्थानसे जाकर पार्टी-सहित लाये और ११ बजेसे १२॥ बजेतक विषय-निर्वाचिनी समितिकी बैठक हुई।

तत्पश्चात् श्रीमान् सभापति महोदयने स्वागत-कारिणी समितिके पदाधिकारियों तथा जाति-सेवकोंद्वारा घिरे हुए जयध्वनिके साथ सभामंडपमें मंचपर अपना आसन ग्रहण किया और सब पदाधिकारी तथा प्रतिनिधि व दर्शकगण अपने २ नियुक्त स्थानपर बैठ गये।

आज सभामंडपमें उपस्थिति प्रथम और द्वितीय दिवसोंसे भी अधिक थी। सभामंडप इतना विशाल होनेपर भी छकाछक भरा हुआ था। लगभग छः-सात हजार पुरुष और पांच छः सौ महिलायें उपस्थित थीं। अन्य प्रतिष्ठित सज्जन भी आज अधिक संख्यामें पधारे थे। इनमेंसे मुख्य २ के नाम निम्नलिखित हैं—

(१) श्रीयुत रायबहादुर पुरोहित गोपीनाथजी, एम० ए० सी० आई० ई०, मेम्बर महकमा खास।

(२) श्रीयुत ठाकुर जसवन्त सिंहजी बगरू।

(३) श्रीयुत ठाकुर कल्याणसिंहजी शेखावत, बी० ए०, आफ खाचरियावास, जज, चीफकोर्ट।

(४) „ ठाकुर हरिसिंहजी लाडखानी।

(५) „ रायबहादुर सेठ नानगरामजी जोहर बी० ए०, एल० एल० बी० जज, चीफकोर्ट।

(६) „ सेठ रामप्रताबजी खूंटेटा, मेम्बर, मिलिटरी डिपार्ट-मेन्ट, कौन्सिल।

(७) „ सेठ प्यारेलालजी कासलीवाल, बी० ए०, मेम्बर, रिवेन्यू डिपार्टमेन्ट, कौन्सिल।

(८) „ रायसाहिब मुन्शी राधामोहनलालजी बी० ए०, जज चीफकोर्ट।

(९) „ रावबहादुर डाक्टर दलजंग सिंहजी खानका, एम० बी०, सुपरिन्टेन्डेन्ट, मेडिकल डिपार्टमेण्ट।

(१०) „ स्वामी लच्छीरामजी आयुर्वेदाचार्य।

(११) „ मुन्शी मथुराप्रसादजी जज, अपेलेट कोर्ट।

(१२) „ व्यास मगनराजजी डिपुटी-इन्सपेक्टर-जनरल पुलिस।
(१३) „ रायसाहब पंडित राजनारायणजी सुपरिन्टेन्डेन्ट जेल।
(१४) „ बाबू गनेशनारायणजी सोमानी बी०ए०, वकील आबू।
(१५) „ सेठ गुलाबचन्दजी डढ्ढा, एम० ए०।
(१६) „ पुरोहित हरिनारायणजी बी० ए०, विद्याभूषण।
(१७) „ डा० ज्वालाप्रसादजी बी० ए०, एम० बी०।
(१८) „ पंडित बिहारीलालजी बी० ए०।
(१९) „ पण्डित सूर्यनारायणजी आचार्य।
(२०) „ महामहोपाध्याय पण्डित गिरधरजी शर्म्मा।
(२१) „ सेठ गणेशलालजी तांबी
(२२) „ „ सूरजमलजी पटोलिया
(२३) „ „ घीसीलालजी गोलेछा।
(२४) „ सेठ सुखदेवजी राठी।
(२५) „ डाक्टर राधाकृष्णजी।
(२६) „ पण्डित गोपीनाथजी जोशी।
(२७) „ मुन्शी मूलचन्द्रजी भार्गव बी० ए०, हेड मास्टर अग्रवाल पाठशाला।
(२८) „ बा० सूरजबख्शजी घोया।
(२९) „ पण्डित माधोप्रसादजी शास्त्री।
(३०) „ पंडित शिवनन्दजी ज्योतिषी।
(३१) „ सेठ इन्द्रलालजी शास्त्री।
(३२) „ सेठ सौभाग्यमलजी गोलेछा।
(३३) „ „ हरिश्चन्द्रजी बम।
(३४) „ „ पूनमचन्दजी जौहरी।
(३५) „ पण्डित गोबिन्दरामजी जोहरी

सभापति महोदयके मंचपर विराजते ही स्वागताध्यक्षजीने पुष्पोंके हारसे आपका स्वागत किया और श्रीअग्रवाल पाठशाला जयपुरके

विद्यार्थियोंने जोशमें आकर अपने गायनद्वारा सभापति महोदय तथा उपस्थित सज्जनगणको प्रणाम किया। यह गायन निम्नलिखित था—

अब तो महिलाओंको विज्ञान सिखाओ भाई।

रखना भारतका महामान सिखाओ भाई ॥१॥
जिसकी तरकीबसे यह वीर-प्रसू हो जावें।

वैसे इन्हें मार्ग सभी मिलके दिखाओ भाई ॥२॥
दृगमें इनके कभी रस न हो कायरपनका।

ऐसा परिपूर्ण इन्हें जोश दिलाओ भाई ॥३॥
जो भी हुई हो ही गई उसपै नहीं पछताओ।

संभलो आगेके लिये बिगड़ी बनाओ भाई ॥४॥
देश, काल, पात्र, बलाबलका निरिक्षण करके।

अपना कर्त्तव्य स्वयं इनको बताओ भाई ॥५॥
गार्गी, अनुसूया तथा मान्य सती सीताका।

दिव्य सुचरित्र कथा इनको पढ़ाओ भाई ॥६॥
आडम्बर छोड़ सभी ओर यहां घर घरमें।

मुख्य इन्हें एक पतिव्रत ही सधाओ भाई ॥७॥
शिक्षा इन्हें वैसी न दो जिससे भूलें गृह कौशल।

दो दो घर एक सखीसे न डुबाओ भाई ॥८॥
निजके निज कृत्य कर गेहका गृह स्थितिमें।

देके सुमति वैसी दुरालसको हटाओ भाई ॥९॥
भाव महोदार बने गेह गेह दाराएं।

शिक्षा-प्रणाली भी वही शुद्ध बनाओ भाई ॥१०॥
घरमें आटेके लिये और बनाने भोजन।

अन्य मनुष्योंके हमें मुंह न तकाओ भाई ॥११॥
कर्म निष्काम करें धीर विपदमें रहकर।

भूले हुए वे ही सुपथ इनको सुझाओ भाई ॥१२॥

दे दे कला-शिक्षा इन्हें निजका बताओ गौरव ।
अपने कते और बुने वस्त्र पिन्हाओ भाई ॥१३॥
अपनी सन्तान गुणी करके इन्हींके द्वारा ।
देशका दुख सभी दूर कराओ भाई ॥१४॥
इनकी तरह तुम भी रखो एक सती पत्नीव्रत ।
ऐसा परस्परमें विमल प्रेम बढ़ाओ भाई ॥१५॥
उलझनें संसारकी यों सभी सुलझ जावगी ।
उन्नतिकी नींव यह है इसको न ढहाओ भाई ॥१६॥
देशका करते भला निज भी मनोरथ साधो ।
जगमें उपकार व यश खूब जमाओ भाई ॥१७॥
गाने अश्लील गाने न देकर प्यारे ।
दिव्य भगवानके गुण गाओ गवाओ भाई ॥१८॥
करके कर्त्तव्य निपट करके गृहस्थी जगसे ।
साथ इन्हें मुक्तिके सोपान चढ़ाओ भाई ॥१९॥
"हरि" पै विश्वास रखो वह ही सहायक होगा ।
उसको कभी मनसे नहीं भूलो भुलाओ भाई ॥२०॥

तत्पश्चात् नवलगढ़के ब्रह्मचारियोंने निम्नलिखित चेतावनी गाई:—

उठो अब अग्रवाल सन्तान, हमें कुछ कर दिखलाना है ।
बढ़ी कुरीति जातिमें जो २, उन्हें मिटाना है ॥
बाल-विवाह दूर करके, हमको बतलाना है ।
उठो अब० ॥१॥

कन्या-विक्रय, वृद्ध-विवाह, को दूर भगाना है ।
निज संततिको ब्रह्मचर्यका पाठ पढ़ाना है ।
उठो अब० ॥२॥

ब्रह्मचर्याश्रम खुलवा, विद्या सिखलाना है ।
सत्य सनातनका झंडा, हमको फहराना है ।
उठो अब० ॥३॥

कन्या-शाला खोल सती, विदुषी प्रकटाना है ।
फूट, द्वेष, इर्षाको तज, सत प्रेम बढ़ाना है ।
उठो अब० ॥४॥

देश, जातिको निज सेवासे, उच्च बनाना है ।
जो कहते मुंहसे 'रत्नाकर' कर दिखलाना है ।
उठो अब० ॥५॥

इसके पश्चात् श्रीयुत हरमुखरायजी छावछरियाका बनाया हुआ बहुत ही मनोरंजक तथा शिक्षाप्रद गायन गाया गया ।

तदनन्तर श्रीयुत सेठ दुर्गालालजी जौहरीकी कन्या-पाठशाला जयपुरकी कन्याओंने निम्न-लिखित स्तुतियां गाईं :—

(प्रभु-स्तुति)

हे प्रभू आनन्द-दाता, ज्ञान हमको दीजिये ।
शीघ्र सारे दुर्गुणोंको, दूर हमसे कीजिए ॥
लीजिये हमको शरणमें, हम सदाचारी बन ।
ब्रह्मचारिण, धर्म-रक्षक, वीरव्रत धारिण बनें ॥

(ईश्वर-स्तुति)

ईश्वर शीस झुकाती हूं । तुमसे नेह लगाती हूं ॥
तुम ही जगतके रक्षक हो । इससे तुम्हें सताती हूं ॥
हे प्रभो ! मुझे राहपर लाओ । सत्य बोलना मुझे सिखाओ ॥
झूठ बातसे मुझे हटाओ । बिनती यही सुनाती हूं ॥
माता-पिता सहोदर सारे । इनके सदा तुम्हीं रखवारे ॥
हे प्रभो ! हम सब दास तुम्हारे । हाथ जोड़ गुण गाती हूं ॥
हमको विद्याका दो दान । जिससे मैं होऊं विद्वान् ॥
हितकारी हो नाथ महान् । फिर मैं शीस झुकाती हूं ॥

इसके बाद सभापति-महोदयकी ओरसे निम्नलिखित प्रस्ताव उपस्थित किये गये, जो सर्व-सम्मतिसे स्वीकृत हुए:—

१—हालमें समाचार-पत्रोंमें अग्रवालोंके यहां विवाहमें वरपर छत्र-चंवरकी जो रस्म है उसपर बहुत चर्चा हो चुकी है। यह रिवाज बहुत प्राचीन है। इसका प्रमाण भाट-जागोंकी पुस्तकोंसे मिलता है। यह सम्मेलन, जिसमें जोधपुर, बीकानेर, भरतपुर, अलवर, कोटा, इत्यादि रियासतोंके प्रतिनिधि आये हैं, श्रीमान् हिन्दू-सूर्य्य, भारत-भूषण श्रीमहाराणा साहिबसे, जो हमेशासे हिन्दू-मात्रके गौरव, मर्य्यादा तथा उनके रस्मोंकी रक्षा करते आये हैं, कर रहे हैं और आशा है करेंगे, प्रार्थना करता है कि श्रीमान् इस रस्म-की हमेशाकी भांति कृपया पूर्णतया रक्षा कर समस्त अग्रवाल-जाति-को अनुगृहीत करें और उदार-चित्तता दिखावें। यह रस्म ऊपर लिखी रियासतोंमें प्रचलित है और राज्यसे किसी प्रकारकी कोई बाधा नहीं है।

इस प्रस्तावकी एक नकल श्रीमान् महाराणा साहिबकी सेवामें रजिस्ट्रीद्वारा भेजी जावे।

२—यदि बरात बाहर जावे तो अधिकसे अधिक तीन रोजतक ठह-रायी जावे।

इसके पश्चात् श्रीयुत जमनादासजी पोद्दारने टेबिलके निकट खड़े होकर समस्त सज्जनोंका ध्यान स्वच्छता तथा धर्म व लज्जाकी ओर आकर्षित करते हुए यह प्रस्ताव उपस्थित किया:—

३—इस सम्मेलनकी रायमें यह बहुत ही अनुचित है कि रास्ता, गली तथा बाजारमें जीमनवार हो, स्त्री और पुरुष बराबर बैठकर जीमें तथा पुरुष स्त्रियोंको जिमावें। अतएव जहां कहीं भी यह प्रथा प्रचलित हो वहां फौरन बन्द कर दी जावे।

प्रस्तावक-महोदयने प्रस्तावको उपस्थित करते समय यह कहा कि इन बाजारोंमें बैठकर जीमने-जिमानेकी कुप्रथासे हमलोगोंको, जो उज्ज्वल वैश्य-जातिमें भी अग्रगामी कहलाते हैं, लोग अच्छी दृष्टिसे नहीं देखते हैं और हमारे धर्मको भी बड़ी हानि पहुंचती है। आपने कई

जीते-जागते प्रमाणोंद्वारा इस प्रथाको बहुत ही घृणित तथा निन्दनीय सिद्ध कर दिया।

श्रीयुत खेमचन्द्रजी गुप्तने इस प्रस्तावका अनुमोदन किया और श्रीयुत नारायणसहायजी बैराठी (जयपुर निवासी)ने इसका समर्थन किया। प्रस्ताव सर्वसम्मतिसे स्वीकृत हुआ।

इसके बाद श्रीयुत वंशीधरजीने समाजमें बढ़ती हुई मुकद्दमेबाजी-की ओर ध्यान दिलाते हुए, और यह बतलाते हुए कि मुकद्दमेबाज़ीसे दोनों फरीकोंको बड़ी बड़ी आपत्तियोंका सामना करना पड़ता है, निम्नलिखित प्रस्ताव उपस्थित किया:—

४—यह सम्मेलन मारवाड़ी जातिमें बढ़ती हुई मुक़द्दमेबाजीपर खेद प्रकट करता हुआ प्रत्येक अग्रवाल भाईसे निवेदन करता है कि वे अंततः आपसके झगड़े आपसमें ही निपटानेकी चेष्टा करें।

श्रीयुत रामनिवासजी (नसीराबाद निवासी)ने इस प्रस्तावका अनु-मोदन किया और श्रीयुत रामस्वरूपजी (नसीराबाद निवासी)ने इसका समर्थन किया। प्रस्ताव सर्वसम्मतिसे स्वीकृत हुआ।

तदनन्तर श्रीयुत केदारनाथजी गोयनकाने दानका माहात्म्य बताते हुये और जिन बातोंसे इसका दुरुपयोग होता है उनका वर्णन करते हुए निम्नलिखित प्रस्ताव उपस्थित किया:—

५—यह सम्मेलन जातिमें दानशीलताकी प्रशंसा करता हुआ वर्त-मान दान-प्रणालीमें सात्विक भावोंका समावेश चाहता है:—

(क) दान करते समय पात्रकी परीक्षा अवश्य कर लेनी चाहिये।

(ख) दानका दुरुपयोग न हो इसका खूब ध्यान रखा जाय।

(ग) दान धर्म, देश और जातिके हितके लिये ही करना चाहिये।

श्रीयुत मदनलालजी जालानने इस प्रस्तावका अनुमोदन किया और श्रीयुत नानूलालजी शास्त्रीने इसका समर्थन किया। प्रस्ताव सर्व-सम्मतिसे स्वीकृत हुआ।

इसके बाद श्रीयुत जमनादासजी पोद्दारने समाजमें शिक्षाकी अत्यंत

आवश्यकताकी ओर सबका ध्यान आकर्षित किया और निम्नलिखित प्रस्ताव उपस्थित किया :—

६—यह सम्मेलन शिक्षाको उन्नतिका प्रधान साधन समझता हुआ जाति-भाइयोंसे अनुरोध करता है:—

(क) बालक-बालिकाओंकी शिक्षामें धार्मिक, नैतिक तथा व्यापारिक शिक्षाका यथायोग्य आयोजन किया जाय और स्वास्थ्य-सम्बन्धी शिक्षाका भी प्रबन्ध किया जाय।

(ख) बालिकाओंकी शिक्षामें गृहकार्य-सम्बन्धी शिल्प-शिक्षा, जैसे चर्खा कातना, सीना-पिरोना, रसोई बनाना आदि तथा स्वास्थ्य-संबन्धी शिक्षापर विशेष ध्यान दिया जाय।

श्रीयुत गोपीनाथजी बी० ए० (जयपुर निवासी)ने इस प्रस्तावका अनुमोदन किया। अन्तमें प्रस्ताव सर्व-सम्मतिसे स्वीकृत हुआ।

इसके पश्चात् सभापति महोदयने निम्न-लिखित प्रस्ताव उपस्थित किये जो सर्व-सम्मतिसे स्वीकृत हुए :—

७—यह सम्मेलन मादक द्रव्योंको धार्मिक, आर्थिक और स्वास्थ्यकी दृष्टिसे सर्वथा निषिद्ध समझता है और जाति-भाइयोंसे अनुरोध करता है कि वे इन द्रव्योंका व्यवहार न करें। विवाह-शादीमें मादक द्रव्योंकी खातिरदारी न की जावे।

८—यह सम्मेलन षोडश संस्कारोंके पालनपर जोर देता हुआ जाति-भाइयोंसे अनुरोध करता है कि वैदिक धर्मानुयायी प्रत्येक भाईको अपने पुत्रका उपनयन-संस्कार अंततः विवाहके पूर्व ही करा देना चाहिये। अन्य धर्मावलम्बी भाइयोंको भी अपने मतोंके अनुसार संस्कार करने चाहिये।

(क) इस सम्मेलनकी दृष्टिमें कोई भी अहिन्दू-देवताओंका पूजना अनुचित है,इसलिए सम्मेलन घोषणा करता है कि कोई भी भाई अहिन्दू-देवताओंको भविष्यमें किसी प्रकारसे न पूजें।

षोड़श संस्कार-सम्बंधी प्रस्तावपर सम्मति लेनेसे पूर्व श्रीयुत पं०

सूर्यनारायणजी आचार्यका बड़ा शिक्षा-प्रद तथा मनोरंजक वक्तव्य हुआ था।

इसके पश्चात् सभापति महोदयने निम्नलिखित प्रस्ताव उपस्थित किया :—

९—इस सम्मेलनकी दृष्टिमें जयपुरके अग्रवाल भाइयोंकी कई विशेष प्रचलित रीतियां बहुत खराब हैं। अतएव यह जयपुरके समस्त अग्रवाल-भाइयोंसे अनुरोध करता है कि वे इन कुरीतियोंको शीघ्र बन्द कर दें और ऊपर लिखे हुए प्रस्तावोंके साथ २ निम्नलिखित प्रस्तावोंका भी पालन करें :—

(क) अग्रवाल-पाठशालामें लड़कोंको और कन्या-पाठशालामें कन्याओंको पढ़नेके लिए अवश्य भेजा जावे।

(ख) साथिया जो बहन-बेटी खास घरकी हों वे न्हावनके दिन थालीमें मामूली कपड़ा नवोत्पन्न बालकके लिये ले जावें। दूसरे बड़े बालकके वास्ते न ले जावें। जलवाके दिनका साथिया बन्द किया जावे।

(ग) मिलनी दूकान, बगीचा, धर्मशाला, मन्दिर व मेला वगैरहमें इसी निमित्तसे इकट्ठे होकर लेना-देना बन्द किया जावे। सिर्फ एक बार जहाँ अकस्मात् ब्याही मिलें तो लड़कीके घरके व कुटुम्बी, नाना, व बड़नाना लड़केके घरके, कुटुम्बी, नाना व बड़नानाको ही देवें। इसके सिवा और किसीको न देवें। और एक मिलनी खास ब्याहीकी ४) तकको दी जाय। बाकी मिलनी १) तथा २) तककी दी जावे।

(घ) परोजनोंमें बड़ी ज्योनार व भात पहनना बन्द किया जावे और खारवेमें एक बेस व एक बागा दिया जावे। सतावनोंका जीमन यदि करे तो १०० आदमी रोजाना तकका कर सकते हैं।

(ङ) जेवर सिंजारेमें केवल चांदीका भेजा जावे। सोनेका सिर्फ चोरला भेजा जावे। बाकी जेवर फेरोंके वक्त भेजा जाय। सिंजारेमें लड़कीके वास्ते कपड़े न भेजे जावें।

(च) पीला खीचड़ी बन्द किया जावे। जिस वक्त बच्चा नानाके घर जावे, नानाकी मर्जीमें जो आवे सो देवे।

(छ) सगाईके गीतोंमें बहन-बेटीकी चीज़ न बांटी जावे। घरमें-से बताशे वगैरह बांट दे।

(ज) बड़ी गोद भराने बुलावे तो गोदका कोका नहीं दिया जावे और जीमन बन्द रखा जावे।

(झ) निकासोंमें १५१ सुपारीसे ज्यादा न दी जावें।

(ञ) कंवारे पाथके नेगोंमें सिर्फ एक दफा यथाशक्ति शीरणी भेज दी जावे। टोपी कांचली न भेजी जावे।

(ट) बहन-बेटीके दातका बेस नहीं देवे और उसके बदलेमें बहन-बेटी लूगड़ी न उढ़ावे।

(ठ) हेड़ा समस्त बिरादरीका न किया जावे।

(ड) द्वादशामें ब्राह्मण-भोजन किया जावे और कुटुम्ब-कबीलेके भाई-बंधु तथा खास घरकी बहन-बेटी जीमें। ब्याही सगोंमें केवल ब्राह्मणका टिकट भेजा जा सकता है। तैयारी खुशीमें आवे सो करे।

इस प्रस्तावके (च) और (ट) अंकोंपर विरोध हुआ; किन्तु अन्तमें यह दोनों अंक बहुमतसे स्वीकृत हुए। बाकी कुल अंक इस प्रस्तावके सर्वसम्मतिसे स्वीकृत हुए।

इसके पश्चात् श्रीयुत बनारसीप्रसादजी झुनझुनूंवालेने निम्न-लिखित प्रस्ताव उपस्थित किया :—

१०—यह सम्मेलन अपने समाजकी बढ़ती हुई विलासिता और फिजूलखर्चीपर दुःख और शोक प्रकट करता हुआ सब भाइयोंसे प्रार्थना करता है कि अपने पूर्वजोंकी तरह मोटा खाना और मोटा पहनना अपने शरीर-रक्षाके लिये रखें और यह आवश्यक है कि खाने-पहननेके लिये स्वदेशी वस्तुओंका व्यवहार करें।

श्रीयुत मदनलालजी जालानने इस प्रस्तावका अनुमोदन किया। प्रस्ताव सर्वसम्मतिसे स्वीकृत हुआ।

तत्पश्चात् सभापति-महोदयकी ओरसे निम्नलिखित प्रस्ताव उपस्थित किये गए जो सर्वसम्मतिसे स्वीकृत हुए :—

११—यह सम्मेलन अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी अग्रवाल महा-सभासे अनुरोध करता है कि शीघ्र-से-शीघ्र हिसारसे अगरोहातक पक्की सड़क बनवानेका यत्न करे।

१२—यह सम्मेलन उचित समझता है कि हमारे भाई लिखने-पढ़ने-में हिन्दी भाषाका ही प्रयोग करें और अपने बाल-बच्चोंको शुद्ध हिन्दी लिखाने-पढ़ानेका प्रयत्न करें।

इसके बाद गत दिवसका छोड़ा हुआ नुकता-सम्बन्धी प्रस्ताव लिया गया। श्रीयुत केदारनाथजी गोयनकाने प्रस्तावको समझाया और श्रीयुत विजयनारायणजी टेमाणीने अपने संशोधनके पक्षमें कहा।

इसपर बहुत वाद-विवाद होने लगा और मंडपमें चारों ओर हल-चल मच गई, यहांतक कि आपसमें विरोध होनेकी संभावना होने लगी। इस घटनाको देखकर सभापति-महोदयने स्वयं भाषणके स्टेज-पर पधारकर अपने प्रभावशाली शब्दोंसे इस आन्दोलनको शान्त किया। यह आपहीके शब्दोंका प्रभाव था कि जिससे सभा-मंडपके अन्दर आनकी आनमें शान्ति हो गई, वरना बड़ी भारी दुर्घटना होनेकी संभावना हो गई थी। इस विवादको मिटानेके लिये आपने यह निश्चय किया कि इस प्रस्ताव तथा संशोधनपर देहलीमें महासभाके अष्टम अधिवेशनपर विचार किया जावे।

इसके बाद श्रीयुत कालूरामजी अग्रवाल, बी० ए०, ने सभापतिजी-के आज्ञानुसार निम्नलिखित दो अर्जियोंका सारांश सुनाया कि जो सभापतिजीके पास आई थीं :—

(१) एक अर्जी पंच महाजनान खंडेला गंगासहायजी, भूरामलजी व कन्हैयालालजीकी ओरसे पेश हुई कि "खंडेलामें कुछ ऐसे लोग हैं जो अन्य जातिकी लड़कियोंको लाकर जातिमें उनका विवाह करते हैं। यह बहुत अनुचित है, इसका प्रबन्ध किया जावे।"

(२) दूसरी अर्जी घटवाड़ा वासी दाषां नामकी स्त्रीकी ओरसे पेश हुई कि "रूडमल महाजन दांतिलवालाकी लड़कीका विवाह मेरे गोद आये हुये लड़केके साथ नियमानुसार हुआ था, किन्तु अब वह किसी और पुरुषसे कुछ रुपया लेकर उसके यहां दुबारा लड़कीका विवाह करना चाहता है। मैं विधवा हूं, इसका प्रबन्ध किया जाय।"

इन दोनों अर्जियोंका सारांश सुनाने के बाद आपने यह सूचना दी कि इन दोनों अर्जियोंपर विषय-निर्वाचिनी समितिमें विचार होकर यह निश्चय हुआ है कि निम्नलिखित सज्जनोंकी कमेटी इन अर्जियोंपर विचार करके इनकी जांच करे और अपनी सम्मति दे : —

(१) श्रीयुत मदनलालजी जालान (फतेहपुर)
(२) „ जमनादासजी पोद्दार (देहली)
(३) „ गोपीनाथजी जमादार बी० ए० (जयपुर)
(४ („ श्रीनिवासजी चौधरी „
(५) „ नारायणसहायजी बैराठी „
(६) „ गट्टीलालजी चौधरी „
(७) „ जगमोहन लालजी धाड़ी (नसीराबाद)

इसके पश्चात् सभापति महोदयने निम्नलिखित प्रस्ताव उपस्थित किया जो सर्वसम्मतिसे स्वीकृत हुआ :—

१३—यह सम्मेलन प्रस्ताव करता है कि प्रान्तीय सभाकी नियमावलीके संशोधनके लिये निम्न-लिखित सज्जनोंकी एक कमेटी बनाई जावे, जो देहलीमें महासभाके आगामी अधिवेशनके समय इस विषयपर विचार करे :—

(१) श्रीयुत मदनलालजी जालान (फतेहपुर)
(२) „ मन्नालालजी गर्ग (उदयपुर)
(३) „ द्वारकालालजी गुप्त (कोटा)
(४) „ सुगनचन्दजी (उदयपुर)
(५) „ रामप्रतापजी गोयल (अजमेर)

(६) „ जगरूपजी (अजमेर)
(७) „ घनश्यामदासजी (कोटा)

इसके पश्चात् प्रान्तीय सभाके प्रधान मंत्री श्रीयुत बाबू कल्याणमलजी बांसलने प्रान्तीय सभाका आय-व्ययका हिसाब साल भरका पढ़कर सुनाया जो निम्नलिखित प्रकार था : —

हिसाब आय-व्ययका मिती चैत्र शुक्ला ५ सं० १९८२ से मिती माघ शुक्ला ५ सं० १९८२ तक

जमा		खर्च	
७।)	स्थानीय (नसीराबाद) सहायता	१३॥)	डाक-व्यय इत्यादि
३॥)	महासभाके प्रस्ताव नं० १६ के अनुसार लाग द्वारा प्राप्त	४=)	तार-खर्च
		१६॥)	सभाके लिये फार्म वगैरह छपाईके
२५।)	जोधपुरसे सहायतार्थ प्राप्त	२६॥-)	प्रचार खाते
५।)	उदयपुरसे सहायतार्थ प्राप्त		१०) उपदेशक
२।)	अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी अग्रवाल महासभाद्वारा प्राप्त		५=) बूंदी
			११।≡) सम्मेलन जयपुर
			२६॥-)
		४॥)।	फुटकर खर्च
			६५।≡)।
		॥)॥।	श्री पोते बाकी
	६६)		६६)

इसके बाद सभापति-महोदयने निम्नलिखित प्रस्ताव उपस्थित किये जो सर्वसम्मतिसे स्वीकृत हुए :—

१४—आगामी वर्षके लिये प्रान्तीय सभाका कार्यालय नसीराबादमें ही रहे और इसके पदाधिकारी निम्नलिखित सज्जन होंगे :—

(१) उपसभापति—

श्रीयुत सेठ चुन्नीलालजी

(२) मंत्री—

श्रीयुत श्रीनारायणजी अग्रवाल

(३) उपमन्त्री—

श्रीयुत जगमोहनलालजी

(४) कोषाध्यक्ष—

श्रीयुत मन्नालालजी दादियावाले

१५—यह सम्मेलन गत वर्षके प्रांतीय सभाके कार्यकर्ता सभापति श्रीयुत सेठ चुन्नीलालजी एरन, उपसभापति श्रीयुत किशनलालजी जैन, मंत्री श्रीयुत बा० कल्याणमलजी बांसल और श्रीयुत जगमोहनलालजी धाड़ी तथा श्रीयुत श्रीनारायणजी अग्रवाल सहकारी मंत्रियोंको हार्दिक धन्यवाद देता है।

इसके पश्चात् श्रीयुत विजयनारायणजी टेमाणी प्रधान मन्त्री स्वागत-कारिणी समितिने सहानुभूतिसूचक तथा सम्मेलनकी सफलतापर संतोष और हर्ष प्रकट करनेवाले तार व पत्र पढ़कर सुनाये और प्रधान मन्त्रीजीने महासभाकी ओरसे जो तार आया था वह भी पढ़कर सुनाया। इस तारका आशय यह था कि "सम्मेलनकी सफलताके समाचार पढ़कर बहुत आनन्द हुआ। हम आपको इसके लिये बहुत बधाई देते हैं। कृपया महासभा देहलीकी सूचना सब उपस्थित भाइयोंको दे दें और महासभामें पधारनेके लिये उनसे प्रार्थना करें। सब भाइयोंको यह भी सूचना दे दी जावे कि इस महासभाके सभापति श्रीयुत सेठ जमनालालजी बजाज नियत हुए हैं।"

आगामी सम्मेलनका निमन्त्रण

श्री अग्रवाल-हितकारिणी सभा जयपुरकी ओरसे द्वितीय सम्मेलन भी जयपुरमें ही होनेका निमन्त्रण दिया गया। इसपर सभापति-महोदयके आज्ञानुसार श्रीयुत मदनलालजी जालानने यह प्रकट किया कि जयपुरके भाइयोंका यह उत्साह प्रशंसनीय है परन्तु हर साल जयपुरके

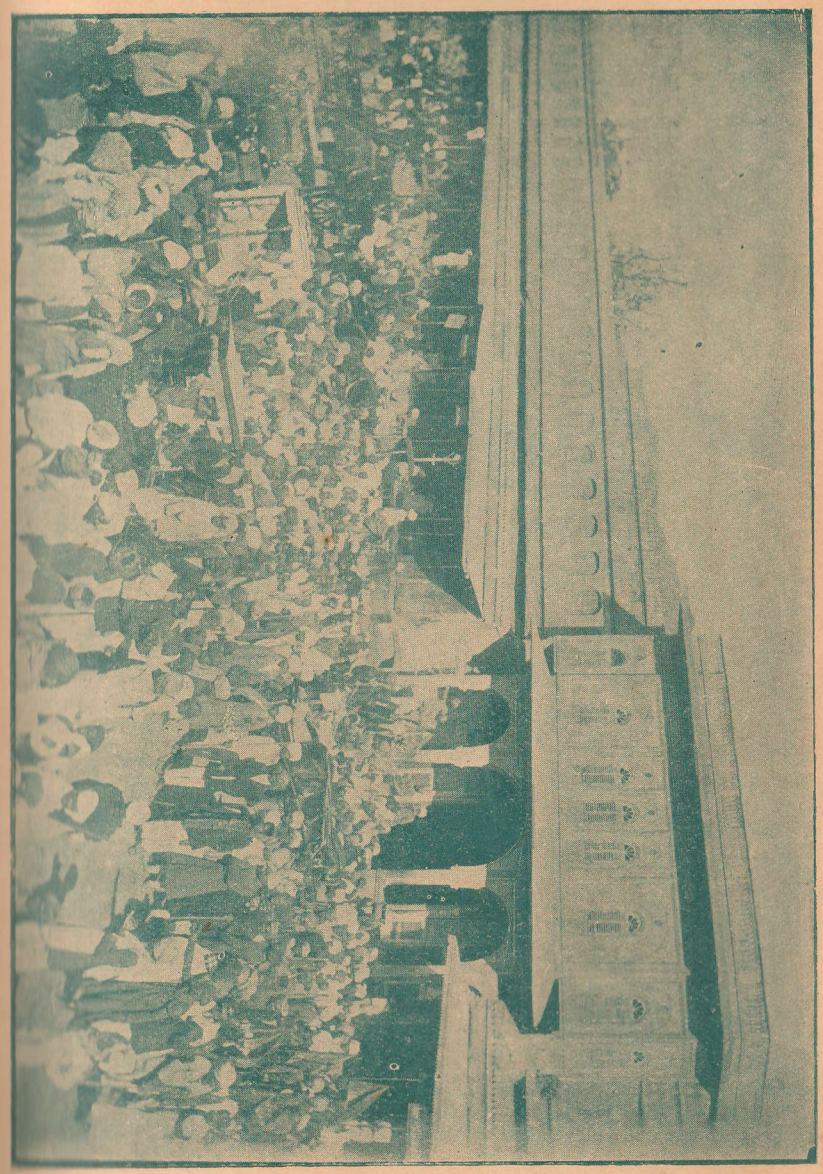

भाइयोंपर सम्मेलनके प्रबन्ध तथा खर्चका भार डालना उचित नहीं है। इसके अतिरिक्त एक ही स्थानपर हर साल सम्मेलन होनेसे अन्य स्थान सम्मेलनके फायदोंसे वञ्चित रह जाते हैं। इसलिये आगामी सम्मेलन किसी और ही स्थानमें होना चाहिये और उपस्थित प्रतिनिधियोंको यह सूचना दे दी गई कि जिस जिलेके भाइयोंको सम्मेलनको निमन्त्रित करना हो वह अपना निमंत्रणपत्र मंत्रीजी प्रान्तीय सभा (नसीराबाद) के पास भेज दें।

धन्यवाद

स्वागताध्यक्ष श्रीयुत सेठ वंशीधरजी खेतानने मधुर शब्दोंमें श्रीयुत सभापतिजी महोदय तथा उपस्थित सज्जनोंको धन्यावाद दिया :—

इसके पश्चात् स्वागत-कारिणी समितिके प्रधान मंत्री श्रीयुत विजयनारायणजी टेमाणीने निम्न लिखित धन्यवाद दिये :—

अनेकानेक धन्यवाद है श्री गोपालजी महाराजको, जिनकी असीम कृपासे हमारा यह सम्मेलन निर्विघ्नता-पूर्वक बड़ी सफलताके साथ समाप्त हुआ।

कोटिशः धन्यवाद है हमारे महाराजाधिराज श्रीसवाई मानसिंहजी बहादुरको जिनकी छत्रछायामें हमको ऐसे ऐसे जाति-उन्नति तथा समाजसुधारके कार्य करनेके अवसर मिलते हैं।

अनेकानेक धन्यवाद है हमारे योग्य सभापति श्रीयुत सेठ मोतीलालजी झुनझुनूंवालेको जिन्होंने हमारी प्रार्थनाको स्वीकार करके सभापतिके आसनको सुशोभित किया और जिनकी गंभीरता, सहनशीलता, बुद्धिमत्ता, न्यायपरायणता तथा अनुभव व प्रभावसे सम्मेलन-सफलतापूर्वक समाप्त हुआ।

मिस्टर एल० डब्ल्यू०रेनाल्डस साहब बहादुर, सी०आई० ई०, एम० सी०, आई० सी० एस०, प्रेसीडेण्ट महक्मा खास तथा रायबहादुर पुरोहित गोपीनाथजी साहब एम० ए०, सी० आई० ई०, मेम्बर महक्मा खासको हार्दिक धन्यावाद दिया जाता है कि जिन्होंने जयपुरमें सभा-

सोसाइटियोंके बन्द करनेकी आज्ञा प्रकाशित करनेके बाद सबसे प्रथम इस सम्मेलनके होनेकी आज्ञा दी और राज्यसे सभामंडपके लिए शामियाने, डेरे, क़नात इत्यादि सामान दिये जानेकी आज्ञा दी।

हमको इस सम्मेलनके प्रबंधमें मिस्टर एफ० सी० कवन्टरी साहब-बहादुर, राव बहादुर मेजर ठाकुर देवीसिंहजी चीतोड़ा, श्रीयुत व्यास मगनराजजी तथा श्रीयुत मुन्शी लक्ष्मीनारायणजी बी० ए० फौजदारने कृपापूर्वक जो सहायता दी उसके लिए हम इनको हार्दिक धन्यवाद देते हैं।

जिन जाति-भाइयोंने इस सर्दीके मौसममें सफरकी आपत्तियोंको सहकर और अपने कारबारको छोड़कर जाति-उन्नतिके प्रेमसे इस सम्मेलनकी शोभा बढ़ाई है उनको हम अनेकानेक धन्यवाद देते हैं।

श्रीयुत बाबू बनारसीप्रसादजी झुनझुनूंवाले, श्रीयुत बाबू मदनलालजी जालान, श्रीयुत सेठ जमनादासजी पोद्दार, श्रीयुत बाबू केदारनाथजी गोयनका तथा श्रीयुत बाबू कल्याणमलजी बांसलने जिस उत्साह और प्रेमसे हम लोगोंको सहायता दी है उसके लिए हम इन सज्जनोंको विशेषकर धन्यवाद देते हैं।

हमको प्रचार तथा सम्मेलनके प्रबंधमें श्रीयुत पं० नारायणदत्तजी काश्यप, श्रीयुत बाबू रामगोपालजी गुप्त और श्रीयुत पं० नारायण-प्रसादजी शास्त्री उपदेशकोंसे पूर्ण सहायता मिली है, इसके लिए इन महाशयोंको जितना धन्यवाद दिया जाय थोड़ा है।

श्रीयुत पं० सूर्य्यनारायणजी आचार्य तथा महामहोपाध्याय श्रीयुत पं० गिरिधरजी शर्म्माने अपने प्रभावशाली और मनोरंजक तथा शिक्षा-प्रद भाषणोंसे हमको जो लाभ पहुंचाया है उसके लिए हम हार्दिक कृतज्ञता प्रकट करते हैं।

जयपुरमें सम्मेलनके निश्चय कराने और इसका प्रबंध करने तथा इसको सब प्रकारसे सफलीभूत करनेमें जैसी सहायता तन, मन और धनसे स्वागताध्यक्ष श्रीयुत सेठ वंशीधरजी खेतान तथा उपाध्यक्ष

श्रीयुत सेठ शिवनारायणजी केडवाले और श्रीयुत सेठ रामनिवासजी चौधरीने की इसके लिये उनको हार्दिक धन्यवाद दिया जाता है।

श्रीयुत सेठ गोविन्दरामजी मोदी प्रबंधक भोजन-विभाग, श्रीयुत सेठ रामदासजी टकसाली व श्रीयुत लाला नाथूलालजी मंदूपुरया प्रबंधक स्वागत-विभाग, श्रीयुत सेठ भंवरलालजी नानूवाले सेनापति जाति-सेवक-मंडल, श्रीयुत ला० बदरीनारायणजी जौहरी और श्रीयुत सेठ दुर्गालालजी जौहरी कोषाध्यक्षको भी हार्दिक धन्यवाद देता हूं कि इन महाशयोंने अपना सब कारोबार छोड़कर पूर्ण परिश्रम और उत्साहसे अपने अपने विभागका कार्य किया।

भोजन-विभागका कुल खर्च जिस उदारता और उत्साहसे श्रीयुत सेठ वंशीधरजी खेतान तथा श्रीयुत सेठ बिहारीलालजी बैराठीने उठाया है उसके लिए इन महानुभावोंको जितना धन्यवाद दिया जावे थोड़ा है।

श्रीयुत सेठ मूलचंद्रजी बाणवाले, सेठ प्रहलाददासजी सूतपूनीवाले तथा सेठ गोरधनजी गोपालजी बजाज इत्यादि जिन जिन महाशयोंने मंडप आदिकी सजावटमें अपने अपने यहांका सामान बिना कीमत व किरायेके दिया इसके लिए उनको हार्दिक धन्यवाद दिया जाता है।

श्रीयुत सेठ सौभागमलजी गोलेछाको जहांतक धन्यवाद दिया जाय थोड़ा है, जिनकी कृपासे हमको यह विशाल और सुन्दर भवन सम्मेलनके लिये प्राप्त हुआ।

जयपुरके अग्रवाल-जाति-सेवक मण्डलने जिस परिश्रमसे इस जातीय उत्थानके कार्यमें प्रेम-पूर्वक भाग लिया उसके लिये इन्हें धन्यवाद दिया जाता है।

हिन्दू-सभा सांभरके स्वयं-सेवकोंने अपने उत्साह, अनुभव तथा प्रेमपूर्वक परिश्रमसे जो सहायता हमको दी उसके लिये मैं इनको हार्दिक धन्यवाद देता हूं।

अग्रवाल-पाठशाला जयपुर, नवलगढ़-ब्रह्मचर्याश्रम तथा स्थानीय बादू-छात्रालयके छात्रोंने और अग्रवाल-पाठशाला जयपुरकी कन्याओंने

जो शिक्षा-प्रद गायन मधुर स्वरसे गाकर सम्मेलनकी शोभा बढ़ाई, इसके लिये उनको हार्दिक धन्यवाद दिया जाता है।

जिन २ भाइयोंने चन्दा देकर सम्मेलनके प्रबन्धमें सहायता दी उनको धन्यवाद दिये बिना नहीं रह सकते, क्योंकि आर्थिक सहायताके बिना कोई भी कार्य सफल नहीं हो सकता।

अन्तमें हम उन मुख्य २ सरदारों,राज्यके पदाधिकारियों तथा अन्य जातियोंके प्रतिष्ठित विद्वानों तथा सज्जनोंको हार्दिक धन्यवाद देते हैं जिन्होंने पधारकर हमारे इस सम्मेलनकी शोभा बढ़ाई।

इसके बाद श्रीयुत मदनलालजी जालानने आगन्तुक प्रतिनिधियोंकी ओरसे सभापति महोदय, स्वागत-कारिणी समितिके पदाधिकारियों तथा जाति-सेवकोंको धन्यवाद दिया।

तत्पश्चात् सभापति महोदयने स्वागताध्यक्ष सेठ वंशीधरजी खेतान, प्रधान मंत्री सेठ विजयनारायणजी टेमाणी तथा स्वागतकारिणी समितिके अन्य पदाधिकारियों और सदस्योंको धन्यवाद देकर और उपस्थित प्रतिनिधियों, दर्शकगण तथा अन्य प्रतिष्ठित सभ्यगणके प्रति कृतज्ञता प्रकट करके प्रभावशाली शब्दोंमें सम्मेलनके स्वीकृत प्रस्तावोंका पालन करनेकी ओर सबका ध्यान दिलाकर सम्मेलनका कार्य समाप्त किया और जयध्वनिके साथ सभा विसर्जित हुई।

यहांपर हम यह बड़े हर्षके साथ प्रकाशित करते हैं कि सभापति-महोदयका प्रभाव उपस्थित भाइयोंपर इतना पड़ा था और उनके दिलोंमें आपके प्रति इतनी श्रद्धा हो गई थी कि सैकड़ोंकी संख्यामें भाइयोंने आ आकर आपके चरण-कमलोंको छूकर प्रणाम किया और आपका आशीर्वाद लिया। इतनी भीड़ हो गई थी और भाइयोंको आपके चरण-कमलोंको छूनेकी इतनी उत्कंठा लगी हुई थी कि बहुत देरतक आपको स्टेजपरसे जानेका रास्ता नहीं दिया और अन्तमें बड़ी नम्रतासे हाथ जोड़कर इन प्रेमी भाइयोंको सभापतिजीके सामनेसे दूर किया गया। यह घटना जयपुर-सम्मेलनके इतिहासमें स्मरणीय रहेगी।

परिशिष्ट (क)

स्वागतकारिणी समिति जयपुरके पदाधिकारी

१ श्रीयुत सेठ वंशीधरजी खेतान—सभापति
२ „ सेठ शिवनारायणजी केडिया—उपसभापति
३ „ सेठ रामनिवासजी चौधरी „
४ „ सेठ विजयनारायणजी टेमाणी—प्रधान मन्त्री
५ „ बा० कालूरामजी जैन बी० ए०—उपमन्त्री
६ „ संघी नानूलालजी शास्त्री „
७ „ सेठ दुर्गालालजी जौहरी—कोषाध्यक्ष
८ „ „ गोविन्दरामजी मोदी— आय-व्यय-निरीक्षक

कार्यकारिणी समितिके सदस्य

९ „ सेठ बिहारीलालजी बैराठी—सभासद
१० „ सेठ धोंकललालजी लड़ीवाले „
११ „ „ रामदासजी टिकसाली „
१२ „ „ भंवरलालजी नानूवाले „
१३ „ „ नरसंगलालजी लड़ीवाले „
१४ „ „ दामोदरजी लड़ीवाले „
१५ „ बा० बदरीनारायणजी जौहरी „
१६ „ लाला नाथूलालजी मदुपुरिया „
१७ „ सेठ नाथूलालजी बम्बईवाले „
१८ „ „ रूपनारायणजी मैमिया „
१९ „ „ चौथमलजी केडिया „
२० „ „ नारायणसहायजी संघी „
२१ „ „ दामोदरजी बिरखवाणवाले „
२२ „ „ रामचन्द्रजी खोवाले „

२३ श्रीयुत बा० कन्हैयालालजी मैमिया सभासद
२४ „ सेठ दामोदरजी नारनोली „
२५ „ „ भंवरलालजी समरायवाले „
२६ „ „ श्रीनिवासजी चौधरी „
२७ „ „ बखतावरलालजी वकील „
२८ „ „ मीनालालजी केडिया „
२९ „ „ विजयलालजी कसेरा „
३० „ „ मालीरामजी राणा „
३१ „ „ मांगीलालजी चंदवाजीवाले „
३२ „ „ हनुमानजी कोलावाले „
३३ „ „ भोलानाथजी डोवटीवाले „
३४ „ „ दामोदरजी डेरावाले „

साधारण सदस्य

३५ „ „ प्रहलाददासजी लड़ीवाले „
३६ „ „ विशनलालजी „ „
३७ „ „ वंशीधरजी „ „
३८ „ „ बा० भोंरीलालजी „ „
३९ „ „ वंशीधरजी „ „
४० „ „ मुरलीधरजी „ „
४१ „ „ मुरलीधरजी चौधरी „
४२ „ „ रामधनलालजी लड़ीवाले „
४३ „ „ रामेश्वरलालजी „ „
४४ „ „ गोरधनलालजी „ „
४५ „ „ वाछुलालजी „ „
४६ „ „ रामनरायणजी खोवाले „
४७ „ „ छिगनलालजी „ „

४८ बा० मदनलालजी खोवाले सभासद
४९ „ सेठ गोवर्धन लालजी „ „
५० „ गणेशलालजी बम्बईवाले „
५१ „ सुखदेवजी बिरखवाणवाले „
५२ „ प्रहलाददासजी „ „
५३ बाबू मालीरामजी „ „
५४ „ रूपनारायणजी „ „
५५ „ बा० भोंरीलालजी बम्बईवाले „
५६ „ रघुनाथदासजी „ „
५७ „ बदरीनारायणजी „ „
५८ „ रामेश्वरदासजी „ „
५९ सेठ गोव र्धनलालजी मोदी „
६० „ श्रीनिवासजी बम्बईवाले „
६१ „ सुन्दरलालजी लोंड „
६२ „ बालमुकुन्दजी „ „
६३ „ वंशीधरजी „ „
६४ „ लक्ष्मीनारायणजी „ „
६५ बा० राधेश्यामजी लोंड बम्बईवाले „
६६ „ हरिदासजी लोंड „
६७ „ मथुरादासजी लोंड „
६८ „ रामगोपालजी केडिया „
६९ „ गौरीलालजी „ „
७० „ भोंरीलालजी „ „
७१ „ बदरीनारायणजी केडिया „
७२ „ वृजमोहनजी „ „
७३ „ गैंदीलालजी मैमिया „
७४ „ दामोदरदासजी „ „

७५ सेठ किशनलालजी मेंमिया सभासद
७६ ,, ग्यारसीलालजी ,, ,,
७७ ,, नानगरामजी सराफ ,,
७८ बा० मन्नालालजी मदुपुरिया ,,
७९ सेठ भगवतीलालजी सराफ ,,
८० ,, बल्लीलालजी सराफ ,,
८१ ,, बल्लभदासजी खोवाले ,,
८२ ,, कालूरामजी नारनोली ,,
८३ ,, छगनलालजी ,, ,,
८४ बा० लक्ष्मीनारायणजी ,, ,,
८५ सेठ जानकीलालजी टेमाणी ,,
८६ बा० वासुदेवजी नानुवाले ,,
८७ ,, मोलारामजी टेमाणी ,,
८८ ,, किशनगोपालजी नानूवाले ,,
८९ ,, भोंरीलालजी राणा ,,
९० ,, कपूरचंदजी राणा ,,
९१ ,, वंशीधरजी राणा ,,
९२ ,, गोरधनलालजी लशकरी ,,
९३ ,, रामेश्वरदासजी तालूका ,,
९४ ,, रामगोपालजी दालहाला ,,
९५ सेठ मूलचन्दजी बाणवाले ,,
९६ बा० गोबिंदनारायणजी चंदवाजीवाले ,,
९७ ,, नारायणलालजी ,, ,,
९८ सेठ प्रहलाददासजी सूतपूणीवाले ,,
९९ बा० गुलाबचंदजी ,, ,,
१०० ,, लिछमीनारायणजी बैराठी ,,
१०१ ,, सत्यनारायणजी काकड़ावाले ,,

१०२ बाबू वंशीधरजी तिलवाले सभासद
१०३ ,, टीकूलालजी समरायवाले ,,
१०४ ,, दुरगालालजी ,, ,,
१०५ ,, किस्तूरचंदजी ,, ,,
१०६ ,, गोपीनाथजी काकड़ावाले ,,
१०७ ,, सुरजमलजी तिलवाले ,,
१०८ ,, गोरधनजी ,, ,,
१०९ ,, रामनारायणजी माधोपुरिया ,,
११० सेठ कालुरामजी बिरखवाणवाले ,,
१११ बा० दामोदरदासजी बम्बईवाले ,,
११२ ,, शामसुन्दरजी ,, ,,
११३ ,, गुलाबचन्द्रजी बैराठी ,,
११४ ,, फूलचन्दजी बैराठी ,,
११५ ,, दुरगालालजी मोटारूपावाले ,,
११६ ,, छीगनलालजी ,, ,,
११७ ,, नन्दकिशोरजी खेतान ,,
११८ ,, गौरीशंकरजी खेतान ,,
११९ ,, रामसुखजी झूंझनूवाले ,,
१२० ,, रामरिखपालजी मसकरा ,,
१२१ ,, रामेश्वरदासजी नारसरिया ,,
१२२ ,, कीलाणबक्सजी बोंलीवाले ,,
१२३ ,, गोरधनलालजी टिकसाली ,,
१२४ ,, सोहनलालजी ,, ,,
१२५ ,, गप्पुलालजी ,, ,,
१२६ सेठ नन्दरामजी केडिया ,,
१२७ ,, रिखबचन्दजी बैराठी ,,
१२८ ,, भूरामलजी ,, ,,

१२९ सेठ कन्हैयालालजी ,, सभासद
१३० ,, कालूरामजी ,, ,,
१३१ बा० मिट्ठूलालजी बिरखवाणवाले ,,
१३२ सेठ दुर्गालालजी टिकसाली ,,
१३३ ,, शंकरलालजी ,, ,,
१३४ ,, गणपतरायजी खेतान ,,
१३५ बा० सूवालालजी राणा ,,
१३६ सेठ गोरीलालजी कुलताजपुरिया ,,
१३७ बा० विजयलालजी ,, ,,
१३८ सेठ भोंरीलालजी सराफ ,,
१३९ ,, शंकरलालजी ,, ,,
१४० ,, ग्यारसीलालजी मदुपुरिया ,,
१४१ ,, भूरामलजी सराफ ,,
१४२ ,, मोहनलालजी खाटूवाले ,,
१४३ ,, रामूलालजी रोटीवाले ,,
१४४ ,, जौहरीलालजी अजमेरवाले ,,
१४५ ,, राधाकिशनजी टिकसाली ,,
१४६ ,, चौथमलजी सराफ ,,
१४७ ,, रामप्रतापजी कचहरीवाले ,,
१४८ ,, गोपीनाथजी मोदी ,,
१४९ ,, देवीलालजी कांवटिया ,,
१५० ,, नाथूलालजी कागदी ,,
१५१ ,, ग्यारसीलालजी पलसाणी ,,
१५२ ,, गोविंदनारायणजी नारनोली ,,
१५३ ,, रामगोपालजी भगत ,,
१५४ ,, मन्नालालजी कांवटिया ,,
१५५ ,, गोरधनलालजी चौधरी ,,

१५६ सेठ रामगोपालजी बजाज सभासद
१५७ ,, गोपालदासजी कोटावाले ,,
१५८ ,, बिरजनन्दजी ,, ,,
१५९ ,, नन्दलालजी हलवाई ,,
१६० बा० गोपालदासजी नारनोली ,,
१६१ ,, मालीरामजी खाटूवाले ,,
१६२ सेठ सूवालालजी ,, ,,
१६३ बा० केदारनाथजी मैदावाले ,,
१६४ सेठ मदनगोपालजी चूड़ीवाले ,,
१६५ ,, मनसारामजी सिंघाड़ेवाले ,,
१६६ ,, भागीरथजी कागदी ,,
१६७ ,, कल्याणबक्सजी सिंघाड़ेवाले ,,
१६८ ,, गट्टूमलजी गट्टोवाले ,,
१६९ ,, मदनलालजी ,, ,,
१७० ,, सुरजमलजी हलवाई ,,
१ १ बा० बोदीलालजी ,, ,,
१७२ ,, प्रभूदयालजी मैमिया ,,
१७३ ,, शिवदयालजी मेमिया ,,
१७४ सेठ मांगीलालजी थावरिया ,,
१७५ ,, सुरजभाणजी कलकत्तावाले ,,
१७६ ,, भौंरीलालजी खटाईवाले ,,
१७७ बा० गोपालदासजी थावरिया ,,
१७८ सेठ रूड़मलजी सिवजीवाले ,,
१७९ ,, मोधालालजी लौंड ,,
१८० ,, कपूरचन्दजी डोवरीवाले ,,
१८१ ,, जमनालालजी अत्तार ,,

१८२	सेठ	जमनालालजी लोया नाजवाले	सभासद
१८३	,,	बालकदासजी पानीवाले	,,
१८४	,,	चूनीलालजी अत्तार	,,
१८५	,,	महादेवजी केडिया	,,
१८६	,,	मूलचन्दजी कसूमावाले	,,
१८७	बाबू	छिगनलालजी म्होरोंवाले	,,
१८८	,,	खेतीलालजी ,,	,,
१८९	,,	मुरलीमनोहरजी कोटावाले	,,
१९०	सेठ	दामोदरजी सिंघी	,,
१९१	,,	भोंरीलालजी नोकरी	,,
१९२	,,	ब्रजलालजी नारनोली	,,
१९३	,,	लिछमीनारायणजी दीवाण	,,
१९४	,,	रामलालजी डेरेवाले	,,
१९५	,,	शिवशङ्करलालजी थावरया	,,
१९६	,,	गुलाबचन्दजी मोटा रूपावाले	,,
१९७	,,	हरिनारायणजी नारनोली	,,
१९८	,,	नारायणलालजी सराफ	,,
१९९	,,	केदारनाथजी टूकड़ावाले	,,
२००	,,	सरूपनारायणजी मोदी	,,
२०१	,,	राधावल्लभजी ,,	,,
२०२	,,	महादेवलालजी मावावाले	,,
२०३	,,	प्यारेलालजी मैदावाले	,,
२०४	बाबू	गोरधनदासजी नारनोली	,,
२०५	,,	बल्लभदासजी नारनोली	,,
२०६	,,	बदरीनारायणजी लेडूका	,,
२०७	,,	मालीरामजी खटाईवाले	,,
२०८	,,	वंशीधरजी ,,	,,

२०९	सेठ	सूरजमलजी खटाईवाले	सभासद
२१०	,,	मांगीलालजी दीवाण	,,
२११	,,	लिछमीनारायणजी गट्टीवाले	,,
२१२	,,	शिवनारायणजी मावावाले	,,
२१३	,,	ईसरलालजी वकील	,,
२१४	,,	रामेश्वर लालजी दालवाले	,,
२१५	,,	किस्तूरचन्दजी सराफ	,,
२१६	,,	गनेशलालजी चौधरी	,,
२१७	बा०	प्रहलाददासजी डोवटीवाले	,,
२१८	,,	जड़ावलालजी ,,	,,
२१९	सेठ	रामप्रतापजी चौधरी	,,
२२०	,,	गोपालदासजी सराफ	,,
२२१	,,	जगन्नाथजी समरायवाले	,,
२२२	,,	लिछमीनारायणजी मोदी	,,
२२३	,,	मोहनलालजी पंसारी	,,
२२४	,,	सरूपनारायणजी पंसारी	,,
२२५	,,	गोविन्दरामजी सामोदवाले	,,
२२६	,,	रामचन्दरजी कलकत्तावाले	,,
२२७	,,	मीनालालजी केडिया	,,
२२८	बाबू	गोपीनाथजी जौहरी	,,
२२९	,,	गणेशलालजी मोदी	,,
२३०	सेठ	लोडीलालजी सराफ	,,
२३१	,,	चौथमलजी गिरदावर	,,
२३२	,,	बालाबकसजी फतेपुरिया	,,
२३३	,,	रणछोड़दासजी ठेकेदार	,,
२३४	,,	हरनारायणजी बुकिंग क्लर्क	,,
२३५	,,	भोंरीलालजी तार बंगलावाले	,,

२३६	,, गुलाबचन्दजी गर्ग	सभासद
२३७	,, रमकीलालजी माजीका बागवाले	,,
२३८	,, लाधूरामजी भाड़ावाले	,,
२३९	,, लाधूरामजी माजीका बागवाले	,,
२४०	,, नानगरामजी ,,	,,
२४१	,, कन्हैयालालजी गोविन्दगढ़वाले	,,
२४२	,, किशनचन्दरजी उणियारावाले	,,
२४३	,, ग्यारसीलालजी डेरावाले	,,
२४४	,, मूलचन्दजी चूड़ीवाले	,,
२४५	,, फूलचन्दजी मुंशी	,,
२४६	,, सुरजमलजी पंसारी	,,
२४७	,, राधाकिशनजी फतेपुरिया	,,
२४८	,, प्रहलाददासजी लोया	,,
२४९	,, मदनलालजी अंगोछावाले	,,
२५०	,, मूलचन्दजी फतेपुरिया	,,
२५१	,, भौंरीलालजी ,,	,,
२५२	,, छीतरमलजी ,,	,,
२५३	,, देवीलालजी झोरवाड़ावाले	,,
२५४	,, भूरामलजी ,,	,,
२५५	,, रालदेवजी आमेरवाले पटवारी	,,
२५६	,, चौथमलजी ,, ,,	,,
२५७	,, भौंरीलालजी ,, ,,	,,
२५८	,, शिवलालजी बगवाड़ावाले	,,
२५९	,, सूवालालजी आमेरवाले	,,
२६०	,, रामदयालजी पटवारी	,,
२६१	,, मलूकीलालजी बजाज	,,
२६२	,, गिरधरदासजी टोंकवाले	,,

२६३	सेठ चौथमलजी कुलताजपुरिया	सभासद
२६४	,, जगन्नाथजी टेमाणी	,,
२६५	,, भूरामलजी टोंकवाले	,,
२६६	,, गोरधनजी चूड़ीवाले	,,
२६७	,, गुलाबचन्दजी पाड़ावाले	,,
२६८	,, राजेन्द्रप्रसादजी गुप्त	,,
२६९	,, घासीलालजी बैराठी	,,
२७०	,, बालाबख्सजी अमरसरिया	,,
२७१	,, चौथमलजी चीनीकी बुरजवाले	,,
२७२	,, गङ्गाबकसजी कागदी	,,
२७३	,, सरूपनारायणजी रेवड़ीवाले	,,
२७४	,, सोहनलालजी सूतपूणीवाले	,,
२७५	,, रामदासजी ,,	,,
२७६	,, किशनलालजी कागदी	,,
२७७	,, भूरामलजी फतेहपुरिया	,,
२७८	,, दामोदरजी ,,	,,
२७९	,, वंशीधरजी मेंड़वाले	,,
२८०	,, भौंरीलालजी लोया	,,
२८१	,, शामलालजी मुकुटवाले	,,
२८२	,, सूरजमलजी मोरीजावाले	,,
२८३	,, गोपीनाथजी ,,	,,
२८४	,, नाथूलालजी चौधरी	,,
२८५	,, गणेशलालजी नारनोली	,,
२८६	,, सत्यनारायणजी	,,
२८७	,, सरूपनारायणजी	,,
२८८	,, रामसहायजी	,,
२८९	,, जमनालालजी सीसाहाला	,,

२६० सेठ द्वारिकादासजी सभासद
२६१ ,, सूरजमलजी ,,
२६२ ,, लिछमीनारायणजी ,,
२६३ ,, ग्यारसीलालजी गुड़वाले ,,
२६४ ,, कन्हैयालालजी नारनोली ,,
२६५ ,, सोहनलालजी मैमियां ,,
२६६ ,, देवीनारायणजी सराफ ,,
२६७ ,, चौथमलजी छिगनीवाले ,,
२६८ ,, जमनालालजी पुलिसवाले ,,
२६९ ,, दामोदरजी राणा ,,
३०० ,, कालूरामजी लकड़ीवाले ,,
३०१ ,, रूड़मलजी नाजवाले ,,
३०२ ,, गुलजी सौंथलीवाले ,,
३०३ ,, नारायणदासजी वकील ,,
३०४ बाबू सतगुरुदासजी ,,
३०५ ,, सन्तदासजी ,,
३०६ रायबहादुर लाला वैष्णवदासजी ,,
३०७ बा० सूरजनारायणजी डेरावाले ,,
३०८ ,, भोंरीलालजी डेरावाले ,,
३०९ ,, दुरगालालजी सराफ ,,
३१० ,, प्रहलादजी हांसीवाले ,,
३११ ,, मदनलालजी ,,
३१२ ,, नरसीलालजी सिंघाडावाले ,,
३१३ ,, श्रीनारायणजी धोवतीवाले ,,
३१४ ,, छोटीलालजी माजीका बागवाले ,,
३१५ ,, सेतीलालजी ,, ,,
३१६ ,, रामनारायणजी ,, ,,

३१७ बाबू लिछमीनारायणजी मा०बागवाले सभासद
३१८ ,, गैन्दीलालजी पसारी ,,
३१९ ,, वंशोधरजी ,,
३२० ,, भूरामलजी ,,
३२१ सेठ दुरगालालजी मेंड़वाले ,,
३२२ ,, सीतारामजी गुड़वाले ,,
३२३ ,, रूड़मलजी बैराठी ,,
३२४ ,, जगन्नाथजी आमेरवाले पटवारी ,,
३२५ ,, दामोदरजी हलवाई ,,
३२६ ,, रामलालजी माजीका बागवाले ,,
३२७ बा० आनन्दीलालजी हांसीवाले ,,
३२८ सेठ बल्लभदासजी तालूका ,,
३२९ ,, बैजनाथजी पातलिया ,,
३३० ,, परसरामजी सामोदवाले ,,
३३१ ,, रोशनीलालजी पातलिया ,,
३३२ ,, महादेवलालजी मेंडवाले ,,
३३३ ,, छीतरमलजी ,, ,,
३३४ ,, रूड़मलजी मेवावाले ,,
३३५ ,, हरिबल्लभजी जमादार ,,
३३६ ,, देवकीनन्दनजी गनेड़ीवाले ,,
३३७ ,, जवाहरमलजी ,,
३३८ ,, मगनमलजी मोदी ,,
३३९ ,, मगनलालजी ,,
३४० ,, भूरालालजी उमियारावाले ,,
३४१ ,, छोटीलालजी ,,
३४२ ,, लादूरामजी ,,
३४३ ,, गंगाधरजी छिगनलालजी ,,

३४४ „ महादेवजी माजीका बागवाले „
३४५ सेठ मालीरामजी हलवाई सभासद
३४६ „ सोहनलालजी हलवाई „
३४७ „ रामगोपालजी „
३४८ „ गैंदीलालजी लसकरी „
३४९ बा० वंशीधरजी लसकरी „
३५० सेठ श्रीनारायणजी लसकरी „
३५१ „ रामबल्लभजी पतासावाले „
३५२ „ गूजरमलजी बजाज „
३५३ „ मालीरामजी पतासावाले „
३५४ „ दुरगालालजी खाटूवाले „
३५५ „ रामगोपालजी धोवतीवाले „
३५६ „ गोरधनदासजी लौंड „
३५७ „ भोंरीलालजी सवजीवाले „
३५८ „ गंगाधरजी बज़ाज़ „
३५९ „ केदारनाथजी नारनोली „
३६० „ मूलचन्दजी छिगनीवाले „
३६१ „ रामेश्वरदासजी खंडाका „
३६२ „ फतेलालजी फतेहपुरिया „
३६३ „ घींसीलालजी फतेहपुरिया „
३६४ „ श्रीनारायणजी गर्ग „
३६५ „ भोंरीलालजी ऐरण „
३६६ „ लक्ष्मीनारायणजी गर्ग „
३६७ „ कालूरामजी „
३६८ „ नाथूलालजी आमेरवाले „

परिशिष्ट (ख)

चन्दा-दाताओंकी नामावली

१०१) श्रीयुत सेठ नारायणजी महादेवजी लडीवाले
१०१) „ „ झूंथारामजी दुर्गादासजी जौहरी
१०१) „ „ श्रीनिवासदासजी लौंड
१०१) „ „ नाथूलालजी बम्बईवाले
१०१) „ „ प्रेमसुखदासजी कन्हैयालालजी पोद्दार
१०१) „ „ मांगीलालजी बज़ाज़
५१) „ „ गोपीरामजी मीनालालजी बज़ाज़
५१) „ „ प्रहलाददासजी सूतपूणीवाले
५१) „ „ नवमलजी रामनिवासजी चौधरी
५१) „ „ बालाबक्सजी गोरधनदासजी मोदी
५१) „ „ मीठालालजी हजारीलालजी बोंलीवाले
५१) „ „ गणेशलालजी बम्बईवाले
५१) „ „ गोरधनजी मनालालजी खोवाला
५१) „ „ जोधराजजी नानूवाले
५१) „ „ पन्नालालजी लडीवाले
५१) „ „ नरसिंहलालजी लडीवाले
५१) „ „ कन्हैयालालजी भोलानाथजी
दुर्गालालजी टिकसाली
५१) „ „ रामसुखजी छगनलालजी बजाज
मोटारयावाले
५१) „ „ बच्चूलालजी नारनोली
५१) „ „ छोटेलालजी सुन्दरलालजी टेमाणी
५१) „ „ कालूरामजी नानूवाले

४१) श्रीयुत सेठ झूमरलालजी टकसाली
४१) ,, ,, रूपनारायणजी मैंमिया
३१) ,, ,, तनालालजी केडवाले
२५) ,, ,, जयनारायणजी दालवाले
२५) ,, ,, हरबक्सजी मंदूपुरिया
२५) ,, ,, गंगाबक्सजी बिरखभानवाले
२५) ,, ,, मांगीलालजी लश्करी
२५) ,, ,, बिजयनारायणजी टेमाणी
६५) ,, ,, नानूलालजी बैराठी
२५) ,, ,, नारायणसहायजी बैराठी
२५) ,, ,, किशनलालजी मैंमिया
२१) ,, ,, मालीरामजी राणा
२१) ,, ,, बद्रीदासजी गूजरमलजी तालूका बजाज
२१) ,, ,, नानगरामजी भगवतीलालजी सराफ
२१) ,, ,, छोटीलालजी राणा
२१) ,, ,, भूरामलजी राणा
२१) ,, ,, म्होरजी काकड़ेवाले
२१) ,, ,, गप्पूजी माधोपुरया
२१) ,, ,, जमनजी तिलोंवाले
२१) ,, ,, मालीरामजी कसेरा
११) ,, ,, दामोदरजी नारनोली

———

१८६४)

नोट—श्रीयुत सेठ बंशीधरजी खेतान व श्रीयुत सेठ बिहारीलालजी बैराठीने इस रूपमें सहायता की कि सम्मेलनमें जितने सज्जन बाहरसे पधारे थे उनको दोनों समय बिला फिस भोजन कराया और इसका कुल सर्फा अपने पाससे दिया।

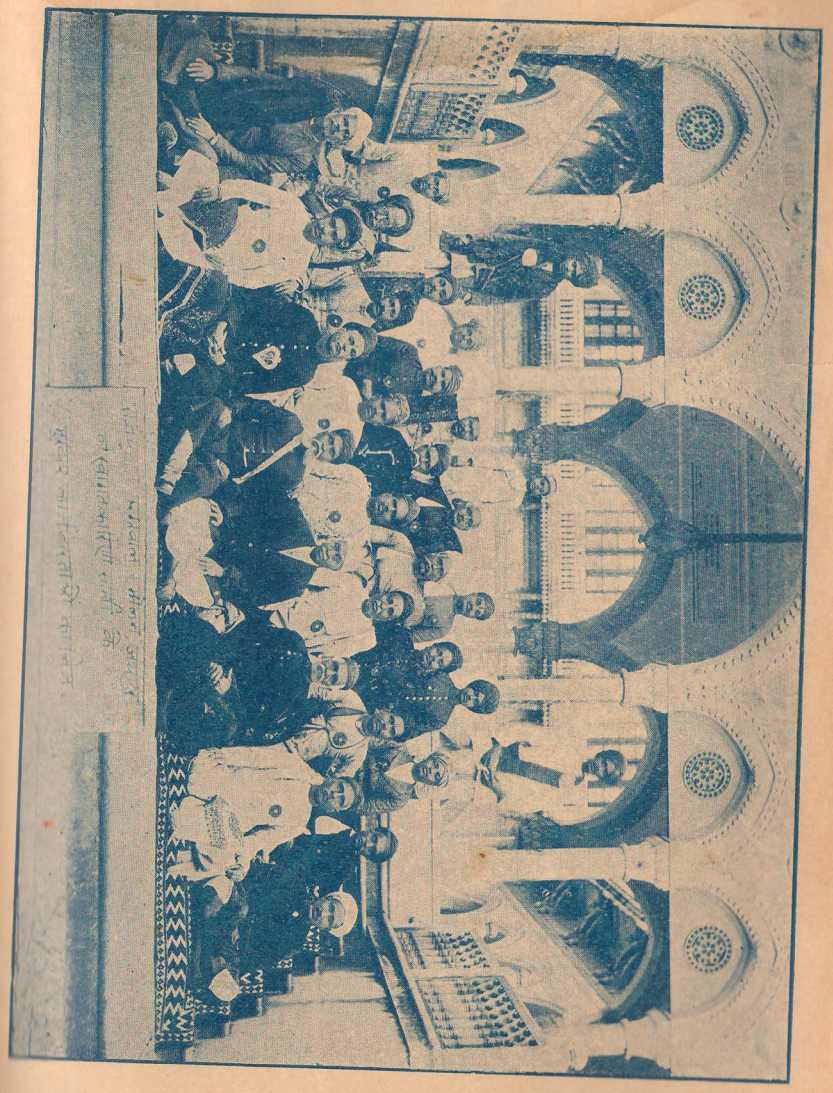

राजपूताना अग्रवाल सम्मेलन, जयपुरकी स्वागतकारिणी समितिके मुख्य २ कार्यकर्ताओंका चित्र।

परिशिष्ट (ग)

जाति-सेवक-मण्डल जयपुर

१ सेनापति—श्रीयुत भंवरलालजी नानूवाले
२ उपसेनापति—श्रीयुत बैजूलालजी नारनोली
३ मुरलीधरजी चोधरी—कप्तान

(१)

४ हरिनारायणजी धींगपुरिया—लैफ्टीनेंन्ट
५ भोंरीलालजी लडीवाले जाति-सेवक
६ गौरीलालजी केडिया "
७ रामधनलालजी लडीवाले "
८ गोपीचन्दजी हलवाई "
९ प्रहलाददासजी बिरखवाणवाले "
१० मालीरामजी "
११ रामनारायणजी खोवाले "
१२ गोपालदासजी केडिया "
१३ जानकीनाथजी टेमाणी "
१४ रूपनारायणजी बिरखवाणवाले "
१५ रामेश्वरदासजी लडीवाले "

(२)

१६ लक्ष्मीनारायणजी नारनोली—लेफ्टीनेन्ट
१७ जगन्नाथजी दालवाले "
१८ रामगोपालजी चौधरी "
१९ कालूरामजी सूतपूणीवाले "
२० राधेश्यामजी पंसारी "
२१ गोविन्दरामजी "
२२ छोटीलालजी मैदावाले "

२३ मालीरामजी केडिया — जाति-सेवक
२४ बोदीलालजी डोवटीवाले — ,,
२५ नाथूलालजी — ,,
२६ रामसहायजी — ,,
२७ राधेश्यामजी डोवटीवाले — ,,

(३)

२८ गोवर्धनलालजी लडीवाले--लेफ्टीनेन्ट
२९ गुलाबचन्दजी कोडीवाले — ,,
३० फूलचन्दजी ,, — ,,
३१ गोपालदासजी नारनौली — ,,
३२ हरिदासजी नारनौली — ,,
३३ होतीलालजी ,, — ,,
३४ गंगरामजी ,, — ,,
३५ मथुरादासजी लोंड — ,,
३६ राधेश्यामजी लोंड — ,,
३७ बद्रीनारायणजी लोंड — ,,
३८ मोहनलालजी — ,,
३९ चांदूलालजी — ,,
४० प्रहलाददासजी टेमाणी—कप्तान

(४)

४१ तुलसीरामजी नारनौली—लेफ्टीनेंट
४२ सरूपनारायणजी टेमाणी — ,,
४३ रामनारायणजी ,, — ,,
४४ मदनगोपालजी भगत — ,,
४५ गिरिराजजी चीनीकी बुर्जवाले — ,,
४६ मूलचन्द्रजी बैराठी — ,,
४७ मालीरामजी मोदी — ,,

४८ मदनगोपालजी — जाति-सेवक
४९ गौरीशंकरजी — ,,
५० महिपालजी — ,,
५१ मच्छीलालजी लोंड — ,,
५२ भोंरीलालजी — ,,

(५)

५३ प्रभुदयालजी सिमलावाले – लैफ्टीनेन्ट
५४ रामधनलालजी समरायवाले — जाति-सेवक
५५ अजितप्रसादजी बैराठी — ,,
५६ शीतलाप्रसादजी ,, — ,,
५७ गुलाबचन्द्रजी खेताण — ,,
५८ केशवदासजी नारनौली — ,,
५९ कपूरचन्दजी गट्टीवाले — ,,
६० ग्यारसीलालजी नारनौली — ,,
६१ जयकुमारजी बैराठी — ,,
६२ रामलक्ष्मणजी — ,,
६३ प्रभुदयालजी खोवाले — ,,
६४ बद्रीनारायणजी नानूवाले — ,,

(६)

६५ गोकुलनारायणजी डेरावाले—लैफ्टीनेन्ट
६६ गोपालदासजी कोठावाले — जाति-सेवक
६७ गजाधरजी चौधरी — ,,
६८ विश्वेश्वरदासजी मैंमिया — ,,
६९ रतनलालजी लडीवाले — ,,
७० पुरुषोत्तमजी टेमाणी — ,,

७१ तुलसीरामजी लोंड़ जाति-सेवक
७२ इन्द्रलालजी कालूण्डिया ,,
७३ केशरलालजी मैमिया ,,
७४ देवीनारायणजी बैराठी ,,
७५ रामेश्वरदासजी बम्बईवाले ,,
७६ अणचीलालजी लोंड़ ,,
७७ मदनलालजी खोवाले—कप्तान

(७)

७८ छिगनलालजी खोवाले—लैफ्टीनेन्ट
७९ कन्हैयालालजी मुन्शी जाति-सेवक
८० हजारीलालजी लडीवाले ,,
८१ बाछूलालजी लडीवाले ,,
८२ गोविन्दनारायणजी ,,
८३ सत्यनारायणजी मावावाले ,,
८४ रामगोपालजी तापडिया ,,
८५ सीतारामजी टेमाणी ,,
८६ प्रहलादजी केडिया ,,
८७ राधाकिशनजी लालाणी ,,
८८ प्रभुदयालजी लडीवाले ,,
८९ गोपालदासजी मोदी ,,

(८)

९० बलुभदासजी खोवाले—लैफ्टीनेन्ट
९१ गोविन्दनारायणजी चंदवाजीवाले जाति-सेवक
९२ गोपालदासजी डेरावाले ,,
९३ लालचन्द्रजी कसेरा ,,
९५ भोंरीलालजी फतेपुरिया ,,

९६ श्यामसुन्दरजी मैमिंया जाति-सेवक
९७ गोपालनाथजी ,,
९८ बदरीनारायणजी केडिया ,,
९९ दामोदरजी ,,
१०० गोपालदासजी ,,
१०१ गौरीशंकरजी ,,

(९)

१०२ दामोदरदासजी मैमिया—लैफ्टीनेन्ट
१०३ नेमीचन्दजी चौधरी जाति-सेवक
१०४ वंशीधरजी धोवतीवाले ,,
१०५ फूलचन्द्रजी लोंड ,,
१०६ भगवानदासजी लोंड ,,
१०७ श्यामलालजी ,, ,,
१०८ रामलालजी ,, ,,
१०९ नारायणदासजी ,, ,,
११० रामनारायणजी गोटावाले ,,
१११ भोंरीलालजी खोवाले ,,
११२ भोंरीलालजी काला ,,
११३ राधाकिशनजी ,,

(१०)

११४ मालीरामजी खाटूवाले—लैफ्टीनेन्ट
११५ वंशीधरजी लडीवाले जाति-सेवक
११६ श्रीरामजी नारनौली ,,
११७ फूलचन्द्रजी ,,
११८ जुगलकिशोरजी ,,
११९ किशनलालजी बजाज ,,

१२० राधामोहनजी मूंडरूवाले ,,
१२१ चांदुलालजी ,,
१२२ कालूरामजी मोदी ,,
१२३ मगनलालजी ,,
१२४ गोरधनजी डेरावाले ,,
१२५ दामोदरजी ,,
१२६ गोपालजी ,,

(११)

१२७ बिहारीलालजी समरायवाले —लैफ्टीनेन्ट
१२८ मुरली मनोहरजी कोटावाले जाति-सेवक
१२९ प्रभुदयालजी ,,
१३० गुलाबचन्दजी ,,
१३१ कन्हैयालालजी ,,
१३२ भोंरीलालजी ,,
१३३ दुरगालालजी चौधरी ,,
१३४ गोरधनलालजी बजाज ,,
१३५ नारायणलालजी बजाज ,,
१३६ रामगोपालजी ,,
१३७ महादेवजी ,,
१३८ गोपीनाथजो ,,

(१२)

१३९ भंवरलालजी कोलावाले—लैफ्टीनेन्ट
१४० विजयलालजी मोदी जाति-सेवक
१४१ धम्मीलालजी ,,
१४२ रामनारायणजी ,,
१४३ लक्ष्मीनारायणजी मैदावाले ,,
१४४ रामरखलालजी चौधरी ,,

१४५ गणेशनारायणजी कोठावाले जाति-सेवक
१४६ भँवरलालजी ,,
१४७ बिहारीलालजी ,,
१४८ गप्पूलालजी ,,
१४९ नाथूलालजी धींगपुरिया ,,
१५० मगनलालजी डेरावाले ,,
१५१ मोहनलालजी चौधरी—कप्तान

(१३)

१५२ बद्रीनारायणजी बम्बईवाले—लैफ्टीनेन्ट
१५३ गोपालदासजी छींटोंवाले जाति-सेवक
१५४ रामगोपालजी मैमिया ,,
१५५ महावीरजी डोवटीवाले ,,
१५६ कजोडमलजी बैराठी ,,
१५७ गैंदीलालजी ,,
१५८ भोंरीलालजी ,,
१५९ माधुरीशरणजी लोंड ,,
१६० रामगोपालजी मोंरीजावाले ,,
१६१ केदारनाथजी मैदावाले ,,
१६२ राधाकिशनजो ,,
१६३ राधेश्यामजी ,,

(१४)

१६४ सूर्यनारायणजी रोटीवाले—लैफ्टीनेन्ट
१६५ रामरतनजी जाति-सेवक
१६६ गोरधनजो ,,
१६७ राधाकिशनजो ,,
१६८ भगवानदासजी ,,

१६९	गुलाबचन्दजी	जाति-सेवक
१७०	गंगारामजी	,,
१७१	गोपालदासजी भगत	,,
१७२	श्रीकृष्णजी वकील	,,
१७३	श्रीनारायणजी	,,
१७४	दामोदरजी छींट्रोंवाले	,,
१७५	फूलचन्दजी	,,

(१५)

१७६	बृधीचन्दजी डेरावाले—लैफ्टीनेन्ट	
१७७	श्रीरामजी नारनौली	जाति-सेवक
१७८	वृजमोहनजी खाटूवाले	,,
१७९	राधाकिशनजी	,,
१८०	रामेश्वरजी	,,
१८१	चांदमलजी	,,
१८२	सूवालालजी	,,
१८३	सूरजमलजी	,,
१८४	रामदासजी	,,
१८५	नाथूलालजी	,,
१८६	नन्दलालजी	,,
१८७	गोविन्दनारायणजी	,,

परिशिष्ट (घ)

प्रतिनिधि

	नाम	पता
	जयपुर शहर	
१	श्रीयुत कालूरामजी जैन बी० ए०	विद्याधरका रास्ता
२	,, नाथूलालजी कागदी	लाडलीजीका मन्दिर
३	,, भोंरीलालजी कोटावाले	गोपालजीका रास्ता
४	,, कन्हैयालालजी मैमिया	विद्याधरका रास्ता
५	,, आनन्दीलालजी ,,	,,
६	,, कल्याणबक्षजी सिंघाडावाले	पुरानीबस्ती ,,
७	,, मनसारामजी ,,	,,
८	,, भोंरीलालजी समरायवाले	दीनानाथजीका मन्दिर
९	,, रामगोपालजी केडिया	गोपालजीका रास्ता
१०	,, चौथमलजी ,,	,, ,,
११	,, गौरीलालजी ,,	,, ,,
१२	,, गट्टूलालजी गट्टीवाले	पुरोहितजीका खन्दा
१३	,, भागीरथदासजी कागदी	त्रिपोलिया बाजार
१४	,, मांगीलालजी थावरिया	विद्याधरका रास्ता
१५	,, भोंरीलालजी नानूवाले	गोपालजीका रास्ता
१६	,, मंगलचन्दजी	जौहरी बाजार
१७	,, गैंदीलालजी लश्करी	गोपालजीका रास्ता
१८	,, लच्छीरामजी मुनीम	परतानियोंका रास्ता (बाग)
१९	,, घींसीलालजी पोद्दार	,, ,,
२०	,, टीकारामजी दालहाला	जौहरी बाजार
२१	,, राधाकृष्णजी	,,
२२	,, रामबल्लभजी दालहाला	,,
२३	,, झूंथालालजी समरायवाला	,,

नाम	पता
२४ श्रीयुत मदनलालजी नेकावाले	घीवालोंका रास्ता
२५ ,, मोतीलालजी अमलवाले	रामगंज
२६ ,, गोपालदासजी नारनौली	रूईकी म्हन्डी
२७ ,, चौथमलजी गिरदावर	खवासजीकी हवेली
२८ ,, श्रीनारायणजी कोटावाले	गोपालजीका रास्ता
२९ ,, गंगाबख्शजी बी० ए०	,, ,,
३० ,, लिछमीनारायणजी गट्टीवाले	रामगंज अहीरोंका मुहल्ला
३१ ,, गोपीनाथजी बागडी	हनुमानका रास्ता
३२ ,, मीनालालजी केडिया	गोपालजीका रास्ता
३३ ,, शिवनारायणजी मावावाले	रामगञ्ज बाजार
३४ ,, ईसरलालजी वकील	,, ,,
३५ ,, मोतीलालजी कोठावाले	माणक चौक
३६ ,, लिछमीनारायणजी चौधरी	कालोंका मुहल्ला
३७ ,, नाथूलालजी झूंझनूवाले	लाल कटला
३८ ,, सूरजमलजी डोवटीवाले	,
३९ ,, रामसहायजी कसेरा	कसेरा बाजार
४० ,, रामचन्द्रजी खोवाले	जौहरी बाजार
४१ ,, हनुमानजी कोलावाले	रास्ता तहवीलदारजी
४२ ,, श्रवणलालजी कसेरा	कसेरा बाजार
४३ ,, दामोदरजी कसेरा	,,
४४ ,, रामनाथजी कसेरा	,,
४५ ,, जगन्नाथजी समरायवाले	जौहरी बाजार
४६ ,, मन्नालालजी मदूपुरिया	माणक चौक
४७ ,, जौहरीलालजी बजाज	जौहरी बाजार
४८ ,, कपूरचन्दजी डोवटीवाले	,,
४९ ,, गणेशलालजी बम्बईवाले	,,

नाम	पता
५० श्रीयुत भक्तावरलालजी वकील	रामगञ्ज बाजार
५१ ,, गणेशलालजी मोदी	चोपड आमेर
५२ ,, लोडीलालजी मैमिया	,,
५३ ,, शिवनारायणजी कांवटिया	रामगञ्ज बाजार
५४ ,, रणछोड़दासजी ठेकेदार	गोपालजीका रास्ता
५५ ,, रामदेवजी मुनीम	लाल कटला
५६ ,, दुरगालालजी मोदी	फूटा खुरा
५७ ,, चिमनरामजी धाड़ी	रेलवे स्टेशन
५८ ,, गोवर्धनलालजी लोंड	,,
५९ ,, ज्वालाप्रसादजी	,,
६० ,, किशोरीलालजी	,,
६१ ,, मदनलालजी कोटावाले	गोपालजीका रास्ता
६२ ,, गणपतलालजी लोंड	हवामहल नीचे
६३ ,, वंशीधरजी लश्करी	गोपालजीका रास्ता
६४ ,, नन्दकिशोरजी खेतान	अजमेरी दरवाजे बाहर
६५ ,, रामसरूपजी झूंझनूवाले	,,
६६ ,, ग्यारसीलालजी डेरावाले	हवामहल नीचे
६७ ,, दामोदरजी डेरावाले	रामगंज
६८ ,, मूलचन्दजी चूड़ीवाले	गोपालजीका रास्ता
६९ ,, गोपीनाथजी मोदी	माजीका बाग
७० ,, जगन्नाथजी टोसा	चांदपोल
७१ ,, जौहरीलालजी चरूहाला	गणगौरी दरवाजा
७२ ,, रामूलालजी रोटियोंवाले	माणक चौक
७३ ,, गुलाबचन्द्रजी फतेपुरिया	,,
७४ ,, गोविन्दरामजी बदनपुरा वाले	रामगंज बाजार
७५ ,, लिछमीनारायणजी दालवाले	जौहरी बाजार

नाम	पता
७६ श्रीयुत विशनलालजी लडीवाले	जौहरी बाजार
७७ ,, देवीलालजी अँगोछावाले	माणक चौक
७८ ,, प्यारेलालजी धींगपुरिया	,,
७९ ,, शोचन्द्रजी सोंथलीवाले	,,
८० ,, सूंसीलालजी नोकरी	,,
८१ ,, ग्यारसीलालजी चालीसा	,,
८२ ,, भूरामलजी ,,	,,
८३ ,, सुखदेवजी बिरखबाणवाले	जौहरी बाजार
८४ ,, भोंरीलालजी सोंथलीवाले	माणक चौक
८५ ,, रामप्रतापजी वकील रेजीडेन्सी	चाँदपोल
८६ ,, नाथूलालजी चौधरी	कालोंका मुहल्ला
८७ ,, गैंदीलालजी पंसारी	जौहरी बाजार
८८ ,, विजैलालजी कुलताजपुरिया	हवामहल
८९ ,, गौरीलालजी ,,	,,
९० ,, दामोदरजी राणा	,,
९१ ,, नारायण दासजी वकील	,,
९२ ,, दुरगालालजी सराफ	चांदपोल
९३ ,, किशनगोपालजी नानूवाले	जौहरी बाजार
९४ ,, रामलालजी डेरावाले	रामगञ्ज
९५ ,, प्रेमसुखदासजी पोद्दार	जौहरी बाजार
९६ ,, कन्हैयालालजी ,,	,,
९७ ,, रामबकसजी नारनौली	,,
९८ ,, दुरगालालजी समरायवाले	,,
९९ ,, वंशीधरजी चालीसिया	,,
१०० ,, दासूलालजी वकील	गणगोरी दरवाजा
१०१ ,, जगन्नाथजी मेरत्या	हवामहल

नाम	पता
१०२ श्रीयुत सूरजमलजी सराफ	जौहरी बाजार
१०३ ,, केशरलालजी जावतवाले	मदरसेका खन्दा
१०४ ,, गैंदीलालजी ,,	,,
१०४ ,, छोटोलालजी	,,
१०६ ,, भूरामलजी खटाईवाले	जौहरी बाजार
१०७ ,, नेमचन्द्रजी हलवाई	त्रिपोलिया बाजार
१०८ ,, गोविंदनारायणजी खंडाका	,,
१०९ ,, वृजमोहनजी	,,
११० ,, सूरजमलजी बावलीहाला	रामगंज
१११ ,, लिछमीनारायणजी	,,
११२ ,, द्वारिकालालजी बजाज	,,
११३ ,, भोंरीलालजी बजाज	जौहरी बाजार
११४ ,, प्रहलाद्दासजी डोवटीवाले	लाल कटला
११५ ,, लाधूरामजी नारनौली	जौहरी बाजार
११६ ,, भोंरीलालजी लालाणी	,,
११७ ,, विजयनारायणजी टेमाणी	बारा गणगोरका रास्ता
११८ ,, गोविन्दरामजी मोदी	रामगंज बाजार
११९ ,, रामदासजी लोंड	लाडलीजोका खुरा
१२० ,, नाथूलालजी मदूपुरिया	रामगंज बाजार
१२१ ,, शिवनारायणजी केडिया	गोपालजीका रास्ता
१२२ ,, रामनिवासजी चौधरी	जडियोंका रास्ता
१२३ ,, दामोदरदासजी लडीवाले	जौहरी बाजार
१२४ ,, रूपनारायणजी मैमिया	गोपालजीका रास्ता
१२५ ,, श्रीनिवासदासजी लोंड	,,
१२६ ,, दामोदरजी बिरखबाणवाले	जौहरी बाजार

नाम	पता
१२७ श्रीयुत दामोदरजी नारनौली	सांगानेर दरवाज बाहर
१२८ ,, भोंरीलालजी बम्बईवाले	,,
१२९ ,, गोरधनजी खोवाले	जौहरी बाजार
१३० ,, प्रेमसुखदासजी कन्हैयालालजी	,,
१३१ ,, परसरामजी नानूवाले	पुरोहितजीका कठला
१३२ ,, जोधराजजी नानूवाले	जौहरी बाजार
१३३ ,, गूजरमलजी तालूका	,,
१३४ ,, मांगीलालजी लश्करी	,,
१३५ ,, मालीरामजी राणा	,,
१३६ ,, छोटीलालजी राणा	,,
१३७ ,, दुरगालालजी खोवाले	हनुमानका रास्ता
१३८ ,, जयनारायणजी दालवाले	जौहरी बाजार
१३९ ,, नाथूलालजी बम्बईवाले	हनुमानका रास्ता
१४० ,, नारायणसहायजी बैराठी	रास्ता नाटाणियान
१४१ ,, नरसंघलालजी लडीवाले	जौहरी बाजार
१४२ ,, किशनलालजी मेमिया	बाईजीका मन्दिर
१४३ ,, नानगरामजी नागोरी	,,
१४४ ,, मांगीलालजी चन्दवाजीवाले	,,
१४५ ,, आनीलालजी तमाखूवाले	,,
१४६ ,, मूलचन्दजी बाणवाले	त्रिपोलिया बाजार
१४७ ,, धोंकललालजी लडीवाले	पीतलियोंका चोक
१४८ ,, बिहारीलालजी बैराठी	जौहरी बाजार
१४९ ,, नानूलालजी शास्त्री	,,
१५० ,, श्रीनिवासजी चौधरी	,,
१५१ ,, गोपीचन्दजी नारनौली	,,
१५२ ,, रामलालजी कसेरा	त्रिपोलिया बाजार

नाम	पता
१५३ श्रीयुत मालीरामजी तिलाहाला	चांदपोल बाजार
१५४ ,, मोहरीलालजी काकडावाले	,,
१५५ ,, गोविन्दनारायणजी ,,	,,
१५६ ,, रामसुखजी मोटारूपावाले	मदरसाका खन्दा
१५७ ,, भगवानदासजी टेमाणी	मदरसाके नीचे
१५८ ,, प्रहलादजी सूतपूणीवाले	रामगंज बाजार
१५९ ,, मीठालालजी बोंलीवाले	,,
१६० ,, भोलानाथजी टिकसाली	जौहरी बाजार
१६१ ,, भूरामलजी राणा	,,
१६२ ,, वंशीधरजी खेताण	,,
१६३ ,, रामप्रतापजी तुकलवाले	चौड़ा रास्ता
१६४ ,, जगनजी चौधरी	,,
१६५ ,, बच्चूलालजी चेला	,,
१६६ ,, ख्यालीरामजी	,,
१६७ ,, नरसीलालजी	,,
१६८ ,, रामगोपालजी भगत	जौहरी बाजार
१६९ ,, मालीरामली पतासावाले	,,
१७० ,, रमकीलालजी भाडाहाला	,,
१७१ ,, हरनामदासजी इंजीनियर	इंजीनियरी
१७२ ,, कपूरचन्दजी चौधरी	जौहरी बाजार
१७३ ,, नाथूलालजी डेराहाला	हवामहल
१७४ ,, शंकरलालजी थोईवाले	सांगानेर दरवाजे बाहर
१७५ ,, चिरंजीलालजी दिल्लीवाले	रामगंज बाजार
१७६ ,, सुन्दरलालजी चौधरी	खातीवाड़ा
१७७ ,, गोविन्दरामजी खेडीवाले	दरीबा पान
१७८ ,, सूर्यबक्षजी गर्ग	गणगोरी दरवाजा

	नाम	पता
१७६	श्रीयुत रामप्रतापजी राजगढ़िया	त्रिपोलिया बाजार
१८०	,, रूडमलजी मिश्रल	चोकडी घाट दरवाजा
१८१	,, छिगनलालजी चौधरी	खातीवाडा
१८२	,, अभयलालजी चौधरी	,,
१८३	,, घोसीलालजी बोरीहाला	कांवटियोंका खुरा
१८४	,, भोलारामजी सूतवाले	खोजोंका मन्दिर
१८५	,, हीरालालजी बौरा	खेजडेका रास्ता
१८६	,, राधाकिशनजी सूतवाले	खोजोंके मन्दिरके सामने
१८७	,, वंशीधरजी गुड़वाले	टिक्कडमलका चबूतरा
१८८	,, सूरजमलजी ,,	,, ,,
१८९	,, नाथूलालजी रामगढ़िया	त्रिपोलिया बाजार
१९०	,, गुडीलालजी भरतिया	दरीबा पान
१९१	,, मलखीलालजी बजाज	जौहरी बाजार
१९२	,, छोटीलालजी काला	शिवजी कन्हैयालाल बजाज
१९३	,, राधाबल्लभजी मोदी	फूटा खुरा
१९४	,, मांगीलालजी नाईवाले	गोबिन्दराजियोंका रास्ता
१९५	,, गोपीनाथजी मोदी	कांवटियोंका खुरा
१९६	,, माणकचन्दजी चौधरी	खातीवाडा
१९७	,, रामप्रतापजी खाटूवाले	कांवटियोंका खुरा
१९८	,, गौरीलालजी रीवांवाले	सांगानेर दरवाजा
१९९	,, खाजूलालजी बैराठी	मुंशी महल
२००	,, बद्रीनारायणजी लखी	दरीबा पान
२०१	,, प्रतापजी खाटवाले	कांवटियोंका खुरा
२०२	,, भैरूंबक्षजी लोंड	रास्ता जडियान
२०३	,, कन्हैयालालजी बैराठी	दारोगा बालाबख्शका रास्ता
२०४	,, सोसनीलालजी पलसाणी	कांवटियोंका खुरा

	नाम	पता
२०५	श्रीयुत केशरलालजी डोवटीवाले	सांगानेर दरवाजा
२०६	,, गौरीलालजी डेरावाले	हवामहल
२०७	,, बद्रीनारायणजी पलसाणी	कांवटियोंका खुरा
२०८	,, पांचूलालजी पलसाणी	,,
२०९	,, देवकीनन्दनजी बैराठी	दीनानाथजीके मंदिरकी गली
२१०	,, बद्रीनारायणजी बैराठी	गोपाल ब्रादर्स त्रिपोलिया बाजार
२११	,, लक्ष्मीनारायणजी ,,	,, ,,
२१२	,, महतावरायजी वकील	चौड़ा रास्ता
२१३	,, राजेन्द्रप्रसादजी	जाटका कूंवा
२१४	,, बीरेन्द्रप्रसादजी	,,
२१५	,, रामप्रतापजी लश्करी	दरीबा पान
२१६	,, राजेन्द्रप्रसादजी	जाटका कूंवा
२१७	,, घासीलालजी गोयल	रास्ता तहवीलदारान
२१८	,, रामगोपालजी कांवटिया	मन्दिर दीनानाथजी
२१९	,, लाडलीनारायणजी बैराठी	परतानियोंका मन्दिर
२२०	,, रामगोपालजी चौधरी	खातीपुरा
२२१	,, घासीलालजी लश्करी	सांगानेर दरवाजे बाहर
२२२	,, भोंरीलालजी बागडी	हनुमानका रास्ता
२२३	,, कन्हैयालालजी ,,	,,
२२४	,, कजोड़ीमलजी ,,	,,
२२५	,, रामचन्द्रजी बाणवाले	,,
२२६	,, गोपालजी थावरिया	विद्याधरका रास्ता
२२७	,, गोरधनजी पताशेवाले	मदरसेका खन्दा
२२८	,, चाहीलालजी थावरिया	विद्याधरका रास्ता

	नाम	पता
२२९	श्रीयुत मनीरामजी मोदी	मोती कटला
२३०	,, गैंदीलालजी पताशेवाले	मदरसेका खन्दा
२३१	,, गंगाबख्शजी अंगोछावाले	,,
२३२	,, रामनारायणजी तुसोंवाले	मोती कटला
२३३	,, श्रीनारायणजी बस्सीवाले	मोती कटला
२३४	,, फतेहलालजी डोवटीवाले	घीवालोंका रास्ता
२३५	,, मूलचन्द्रजी पलसाण	कांवटियोंका खुरा
२३६	,, लक्ष्मीनारायणजी चन्दवाजीवाले	सांगानेर दरवाजे बाहर
२३७	,, रामदेवजी मोदी	,,
२३८	,, छीतरमलजी परचूनिया	रामगंज बाजार
३३९	,, बद्रीनारायणजी सोंथलीवाले	बारा गणगोर
२४०	,, रामबल्लभजी वकील	,,
२४१	,, रामप्रतापजी लखी	दरीबा पान
२४२	,, भूरामलजी मोदी	राणीवालोंको पोल
२४३	,, गुल्लीलालजी नाईवाले	रास्ता गोबिन्दराजियान
२४४	,, मोतीलालजी मोदी	फूटा खुरा
२४५	,, भोलानाथजी पलसाणी	कांवटियोंका खुरा
२४६	,, गजेन्द्रप्रसादजी गर्ग	जाटका कूँवा
२४७	,, जौहरीलालजी मोदी	बन्नीलाल जौहरीलाल मोदी
२४८	,, शिवसहायजी लश्करी	सांगानेर दरवाजे बाहर
२४९	,, पन्नालालजी ,,	,,
२५०	,, भगवानदासजी लश्करी	,,
२५१	,, सरूपनारायणजी बैराठी	बारा गणगौर
२५२	,, परसरामजी इज्जारदार	बकाणका कूँवा
२५३	,, मालीरामजी दवातहाला बजाज	जौहरी बाजार

	नाम	पता
२५४	श्रीयुत चौथमलजी लश्करी	सांगानेर दरवाजे बाहर
२५५	,, विजैलालजी कसेरा	कसेरा बाजार
२५६	,, लालचन्द्रजी कसेरा	,,
२५७	,, गोपालदासजी तालूका	जाटका कूँवा
२५८	,, सुलतानसिंहजी जैन बी० ए०	महाराजा कालेज
२५९	,, झूंथालालजी बैराठी	दीनानाथजीकी गली
२६०	,, जानकीबल्लभजी बैराठी	,,
२६१	,, लाधूरामजी मोदी	चांदपोल बाजार
२६२	,, भूरामलजी पंसारी	महादेवजी भूरामलजी पंसारी
२६३	,, गुलाबचन्दजी सोंथलीवाले	रामगंज बाजार
२६४	,, गैंदीलालजी पंसारी	पुरोहितजीका कटला
२६५	,, नारायणदासजी गुप्त	झूमरलालजी तिवारीका बाग
२६६	,, भैरूंलालजी सरूपरिया	सकडी गली
२६७	,, लिछमीनारायणजी	लिछमीनारायण शिवलाल
२६८	,, गोविन्दनारायणजी मोदी	कांवटियोंका खुरा
२६९	,, पन्नालालजी इटावावाले बारां	पुरानी बस्ती
२७०	,, माघोलालजी स्यामारिया	छप्पनबकस रामकुमार स्यामारिया
२७१	,, हजारीलालजी मोदी	जगन्नाथजी मदनलालजी मोदी
२७२	,, भैरूंलालजी काइलावाले गंगापुर	लिछमीनारायण कन्हैयालाल
२७३	,, भोंरीलालजी आढा	गल्ला बाजार

	नाम	पता
२७४	श्रीयुत सूंसीलालजी खोमाचावाले	महुदरवाजा
२७५	„ मदनलालजी ठेकेदार	कोलीपाडा
२७६	„ भोंरीलालजी सर्राफ	
२७७	„ गैंदीलालजी	गूजरमलजी मुनीम ठेकेदार
२७८	„ बच्चूलालजी कमरीवाले	
२७९	„ चिरंजीलालजी क़ानूंगो	महु दरवाजा
२८०	„ बल्लभलालजी क़ानूंगो	
२८१	„ जौहरीलालजी बज़ाज़	
२८२	„ हीरालालजी „	
२८३	„ झूंतालालजी सर्राफ	
२८४	„ नारायणदासजी तमख़रा	
२८५	„ रामप्रसादजी क़ानूंगो	
२८६	„ चिरंजीलालजी आडेडिया	
२८७	„ कन्हैयालालजी बांसल	
२८८	„ भोंरीलालजी मुनीम	
२८९	„ गैंदीलालजी	कन्हैयालालजी
२९०	„ मनसुखजी दंगबाज	गोहाला
	आमेर	
२९१	„ जमनालालजी	आमेर
२९२	„ विजयलालजी मोदी	„
२९३	„ मांगीलालजी नारनोली	„
२९४	„ मांगीलालजी	„
२९५	„ हनुमानलालजी	„
२९६	„ गणपतलालजी	„
२९७	„ गजाधरजी	„

	नाम	पता
	सवाई—माधोपुर	
२९८	श्रीयुत रामगोपालजी	
२९९	„ मोतीलालजी सर्राफ	
३००	„ भेंरू बक्सजी	
३०१	„ रामकुमारजी चौधरी	
३०२	„ जानकीलालजी चौधरी	
३०३	„ रामकंवारजी मलारनावाले	
३०४	„ मगनीरामजी	
३०५	„ देवीलालजी	
	गोहाला	
३०६	„ चौथमलजी धमड	
३०७	„ मांगीलालजी	
३०८	„ शिवसहायजी बीरूका	शिवनारायण शिवसहाय
	मंडेला	
३०९	„ द्वारकादासजी चौधरी	
३१०	„ केदारमलजी चौधरी	
३११	„ रामेश्वरजी	
३१२	„ सुन्दरलालजी	
३१३	„ लालचन्दजी सिंघानिया	
३१४	„ प्रहलादरायजी रूंगटा	
३१५	„ सुगनचन्दजी रूंगटा	
	धूधू	
३१६	„ सुखदेवजी	
	चोकडी	
३१७	„ बाघमलजी पलसाणी	
	गोवटी	
३१८	„ कमलरामजी	

	नाम	पता
३१६	श्रीयुत विजयलालजी	
	घोटडा	
३२०	,, पन्नालालजी	
	दांतिल	
३२१	,, बलदेवसहायजी	
	नाथूसर	
३२२	,, चून्नीलालजी गर्ग	
३२३	,, जयनारायणजी	
३२४	,, कन्हैयालालजी	
३२५	,, भूरामलजी	
३२६	,, कन्हैयालालजी	
	नीमका थाना	
३२७	,, हीरालालजी	
३२८	,, लछमनदासजी	
३२९	,, गुलजारीलालजी	
३३०	,, बंसीधरजी मोडिया	
३३१	,, प्रभूदयालजी चौधरी	
३३२	,, गुलाबचन्दजी बांसल	
३३३	,, गिरधारीलालजी मोदी	
	नांगल	
३३४	,, मोहनलालजी	
	कांवट	
३३५	,, देवकीनन्दनजी चौधरी	
३३६	,, शिवनारायणजी	
३३७	,, आनन्दीलालजी	
३३८	,, सूरजमलजी चौधरी	

	नाम	पता
	झील	
३३९	श्रीयुत मोतीरामजी	
३४०	,, गोपालजी चौधरी	
	निमाणा	
३४१	,, बिहारीलालजी	
३४२	,, रघुनाथजी	
३४३	,, देवीलालजी	
	सांभर	
३४४	,, गप्पूलालजी मोदी	
३४५	,, गुलाबचन्दजी	
३४६	,, गोरधनजी	
३४७	,, हजारीलालजी सिंघानियां	
३४८	,, ग्यारस लालजी लंड्का	
३४९	,, गारीलालजी सराफ	
३५०	,, राधामोहनजी	
३५१	,, मोतीलालजी	
३५२	,, राधामोहनजी	
३५३	,, विरधीचन्दजी	ओंकारजी मोतीलालजी
३५४	,, मेघराजजी	बालारामजी मेघराजजी
	चोमूं	
३५५	,, छगनलालजी	
३५६	,, देवकरनजी	
३५७	,, भूरामलजी	
३५८	,, गुलाबचन्दजी	
३५९	,, केसरीमलजी महाजन	बिलादरपुर (चोमूं)
३६०	,, ठंडूरामजी बोहरा	,, (,,)

नाम	पता
	हिन्डोन
३६१ श्रीयुत बालाबक्सजी	
३६२ ,, किशनप्रसादजी	
३६३ ,,	हिन्डोनवाले (इनका नाम पढ़ा नहीं गया)
	धानोतर
३६४ ,, सूरजमलजी	
	फतेहपुर
३६५ ,, कालीप्रसादजी	
३६६ ,, मांगीलालजी	
३६७ ,, मदनलालजी जालान	
३६८ ,, युधिष्ठिरप्रसादजी सिंघानिया	
	मंडावार
३६९ ,, गंगाधरजी	
	मंडावार
३७० ,, हनुमानजी गोयनका	
	रावल
३७१ ,, फूलचन्दजी	
	झाडली
३७२ ,, मीनालालजी	
	झुनझुनूं
३७३ ,, शिवदेवलालजी	
	गढ़ (पो० सांभर)
३७४ ,, हरनाथजी पटवारी	
	नवलगढ़
३७५ ,, रामनाथजी सेवसरिया	

नाम	पता
	मुकन्दगढ़
३७६ श्रीयुत शुभकरणदासजी	
३७७ ,, बैजनाथजी नांगलिया	
३७८ ,, द्वारकादासजी सर्राफ	
	सूरजगढ़
३७९ ,, विलासरायजी	
	कालाडेरा
३८० ,, फतेहरामजी	
	नींदड
३८१ ,, सेढमलजी	
	बैराठ
३८२ ,, भूरामलजी जैन	
	थोई
३८३ ,, रामकिशनजी	
३८४ ,, चोथमलजी	
३८५ ,, सूरजमलजी	
३८६ ,, शिवसहायजी	
	श्रीमाधोपुर
३८७ ,, आयडमलजी	
३८८ ,, गणपतलालजी कंवाल	मनीराम गुलजारीलाल
३८९ ,, लछमीनारायणजी मानपुरिया	नाथूलाल मोतीलाल
३९० ,, मूलचन्दजी चौधरी	चोकड़ी डाकखाना
३९१ ,, हरदवारीलालजी चौधरी	,, ,,
३९२ ,, मंगलजी नारी	मांगीलाल कन्हैयालाल
३९३ ,, चांदमलजी चौधरी	
३९४ ,, झूंतालालजी नारनोली	

	नाम	पता
३९५	श्रीयुत मथुरालालजी चौधरी	
३९६	,, कल्याणबक्सजी चौधरी	
३९७	,, लछमीनारायणजी चौधरी	
३९८	,, नाथूलालजी	
३९९	,, शिवनारायणजी	चोकडी
	बोली	
४००	,, मीठालालजी कानूंगो	
४०१	,, मीठालालजी	
४०२	,, मीठालालजी	
	खेजडोली	
४०३	,, रामप्रतावजी पटवारी	
४०४	,, नन्दरामजी कच्छल	
४०५	,, देवीलालजी बोहरा	
	सामोद	
४०६	,, विजयलालजी चौधरी	
	टोडाभीम	
४०७	,, देवेन्द्रप्रसादजी तहसीलदार	
	अमरसर	
४०८	,, नन्दलालजी मोदी	
४०९	,, मुक्तिलालजी नरेडीवाले	
	भेंसलाना (सांभर)	
४१०	,, गंगासहायजी	गंगासहायजी जगन्नाथजी
४११	,, शिवनारायणजी बांसल	गोबिन्दरामजी शिवनारायणजी
	करोली	
४१२	,, गोपीरामजी बजाज	
४१३	,, मनसारामजी	

	नाम	पता
	जोधपुर	
४१४	श्रीयुत आत्मारामजी	
४१५	,, गुलाबदासजी	
४१६	,, भोंरोलालजी सर्राफ	
	मेडता	
४१७	,, राधाकृष्णजी गर्ग	
	कुचामन	
४१८	,, रामपालजी	
	अजमेर	
४१९	,, जगरूपजी	सभापति अ० पाठशाला
४२०	,, द्वारकादासजी	मंत्री, ,, ,,
	नसीराबाद	
४२१	,, कल्याणमलजी बांसल	जयपुरी मोहला
४२२	,, रामनिवासजी	
४२३	,, जगमोहनलालजी धाडी	मेन स्ट्रीट
४२४	,, रामेश्वरजी	
४२५	,, चुन्नीलालजी एरन	हीरालाल चुन्नीलाल एन्ड सन्स
४२६	,, श्रीनारायणजी अग्रवाल	स्टेशन रोड
	बीकानेर	
४२७	,, उदयचन्दजी	
४२८	,, नरसिंहदासजी	
४२९	,, शिवरतनजी सिंघानिया	मिरजामलजी राधाकिशन
४३०	,, लीलाधरजी	
	देवली	
४३१	,, विजयलालजी	

	नाम	पता
४३२	श्रीयुत घीसीलालजी	
४३३	,, जीवनरामजी अग्रवाल	
	उदयपुर	
४३४	,, मन्नालालजी गर्ग	इलकेट्रीकल इंजिनियर
४३५	,, गप्पूलालजी	
४३६	,, लछमणलालजी	
४३७	,, भंवरलालजी	
४३८	,, मगनलालजी	
४३९	,, भंवरलालजी	
४४०	,, भंवरलालजी जैन	
४४१	,, राधाकृष्णजी	
४४२	,, लछमीनारायणजी	
	अलवर	
४४३	,, नानगरामजी	
४४४	,, मक्खनलालजी	
४४५	,, रामजीलालजी	
४४६	,, रामचन्द्रजी	
४४७	,, तोलारामजी	
४४८	,, सोहनलालजी	
४४९	,, मोतीलालजी	
४५०	,, बदरीप्रसादजी	
४५१	,, बालाबक्सजी गोयल	अयोध्याप्रसाद लक्ष्मीनारायण सर्राफ
	किशनगढ़	
४५२	,, बाबूलालजी	

	ना	पता
	कोटा	
४५३	श्रीयुत खेमचन्द्रजी गुप्त	C/o एसिस्टेन्ट रेवेन्यू कमिश्नर
	नीमच (गवालियर)	
४५४	,, शोभारामजी गुप्त	बा० नवलकिशोरजी गुप्त
	टोंक	
४५५	,, लछमीनारायणजी	
	किशनगढ़ (रेनवाल)	
४५६	,, ओंकारजी माधोपुरवा	शम्भूराम ओंकार
	किशनगढ़ (सांभर)	
४५७	,, कल्याणबक्सजी	
	हीराबाडी	
४५८	,, चून्नीलालजी महाजन	
	सूरगढ़ो	
४५९	,, रामप्रसादजी पटवारी	
	जोबनेर	
४६०	,, गणेशलालजी पंसारी	
४६१	,, भोमराजजी	धानोता
	ढोडसर (रींगस)	
४६२	,, शोबक्सजी	
	बेजोड़ी	
४६३	,, मन्नालालजी नरेडीवाले	
	नीलोर	
४६४	,, मक्खनलालजी	
	सिरोही	
४६५	,, मक्खनलालजी	
	मदारपुर (अलवर)	
४६६	,, मगनरामजी	

नाम	पता
४६७ श्रीयुत उमरावसिंहजी	अभोरमंडी
४६८ „ विश्वेश्वरजी	उनियार
४६९ „ मोतीलालजी	गढ भोयजीका
४७० „ जयनारायणजी मोतीरामजी वाले	निमाणा
४७१ „ नाथूरामजी	
४७२ „ गुलजारीलालजी बुंदेला।	

परिशिष्ट (ङ)

सन् १९२१ ई० की मनुष्य-गणनाके अनुसार राजपूतानाके अग्रवालोंकी गणनाका विवरण

नाम रियासत या ज़िला	संख्या
१-जयपुर रियासत	८४,११३
शहर जयपुर	५४७४
निजामत „	६८८
„ आमेर	५१४०
„ दौसा	२६४८
„ बांदीकुई	१५७
„ सवाई माधोपुर	४८७२
„ गंगापुर	२९८४

निजामत हिन्डोन	६०९९
„ कोटकासिम	३१८
„ मालपुरा	२०२३
„ सांभर	३०५४
„ शेखावाटी	१७३६२
„ तोरावाटी	१५८१५
ठिकाना सीकर	८७२८
„ खेतड़ी	७७८३
„ उनियारा	४९६
मुतफर्रिक	७२
	८४११३

२ – रियासत भरतपुर		१६११९
३ „	बीकानेर	१५४०१
४ „	अलवर	१२५४२
५ „	धौलपुर	७८२०
६ „	करोली	७४९९
७ „	मारवाड़	६७८२
८ „	कोटा	५७६८
९ „	मेवाड़	३५३८
१० „	टोंक	३४५२
११ „	सिरोही	१८७०
१२ „	बूंदी	१५३२
१३ „	किशनगढ़	५९०
१४ „	झालावाड़	५७५
१५ „	आबू	१७७

१६	रियासत शाहपुरा	१३८
१७	„ लावा	६३
१८	„ परतावगढ़	६३
१९	„ डूंगरपुर	३३
२०	„ बांसवाड़ा	२१
२१	„ कुशलगढ़	१६
२२	„ जैसलमेर	१४
		१६८१५६
२३	अजमेर-मेरवाड़ा (मय व्यावर नसीराबाद आदि)	८७५२
	कुल राजपूतानाके अग्रवाल	१७६९०८

परिशिष्ट (च)

नामावली उन सज्जनोंकी जिन्होंने तार तथा पत्र द्वारा सम्मेलनके प्रति सहानुभूति और इसके सफलता-पूर्वक समाप्त होनेपर हर्ष व संतोष प्रकट किया

१ श्रीयुत कृष्णदासजी खेतान,
मन्त्री, संयुक्तप्रान्तीय मारवाड़ी अग्रवाल सभा, ग़ाजीपुर
२ श्रीयुत द्वारिकाप्रसादजी केडिया, जसराजपुर
३ „ सोनीरामजी पोद्दार, मन्त्री, ब्रह्मा-प्रान्तीय मारवाड़ी-अग्रवाल सभा, रंगून।
४ „ कन्हैयालालजी मोदी, टोंक
५ „ कमलापतजी सिंघानिया, कानपुर
६ „ जयदेवजी गोविन्दका, रतनगढ़

७ श्रीयुत बसन्तलालजी मुरारका, प्रधान मन्त्री,
अ० भा० मा० अग्रवाल महासभा, कलकत्ता
८ „ पद्मराजजी जैन, कलकत्ता
९ „ बैजनाथजी केडिया, कलकत्ता
१० „ नागरमलजी मोदी, कलकत्ता
११ „ मोतीलालजी लाठ, कलकत्ता
१२ „ प्रभूदयालजी हिम्मतसिंहका „
१३ „ देवीप्रसादजी खेतान „
१४ „ कालीप्रसादजी खेतान „
१५ „ प्रभूलालजी खेतान बम्बई
१६ „ इन्द्रमलजी मोदी बम्बई
१७ „ दलसुखरायजी नेवटिया, फतेहपुर
१८ „ केदारनाथजी बी० ए०, मंत्री,
पंजाब प्रां० अ० सभा लाहोर छावनी
१९ „ हरमुखरायजी छावछरिया, नवलगढ़
२० „ बदरीदासजी गुप्त, जोधपुर
२१ „ प्रहलाददासजी, मंत्री, मध्यभारत-सभा, इन्दौर
२२ „ मुरलीधरजी, मंत्री, अग्रवाल नवयुवक-सभा, जोधपुर
२३ „ द्वारिकालालजी गुप्त, कोटा
२४ „ रंगलालजी जाजोदिया, कलकत्ता
२५ „ मूलचन्द्रजी मैमिया, मंत्री, अग्रवाल सभा, कोटा
२६ „ सेढमलजी कालूंडिया, डूंडलोद, पो० नवलगढ़
२७ „ शिवप्रसादजी तुलस्यान, बहराइच
२८ „ बेनीप्रसादजी डालमिया, अकोला
२९ „ देवीबक्सजी सराफ, मंडावा
३० „ कनकमलजी अग्रवाल, भीलवाड़ा
३१ „ छोगालालजी, नसीराबाद

परिशिष्ट (छ)

आय-व्ययका ब्योरा

आय	व्यय
१८६४) श्री चन्दा खाते जमा	५०६≈)॥ कार्यालय खाते
२३६) स्वागत-कारिणी समितिके सदस्योंकी फीस खाते जमा	४६२)॥ प्रचार खाते
	२६२)॥ मंत्री-कार्यालय द्वारा
	२००) महासभाके प्रचारके उपलक्ष्यमें
६००) प्रतिनिधि फीस खाते-जमा	६६३।।।)।।। पंडाल खाते
	१५२।-) स्वागत खाते
	२४३।।।≤) रोशनी, सफाई, जल-प्रबंध इत्यादि
	४७२) प्रतिनिधि फीसके प्रान्तीय सभाके कार्यालय नसीराबादको भेजे।
	४००) रिपोर्ट छपाईमें
	२६००≤)।।।
	२।।।)। श्री पोते बाकी
मु० २६०३)	मु० २६०३)

नोट—श्रीयुत सेठ बंशीधरजी खेतान तथा श्रीयुत सेठ बिहारीलालजी बैराठीने भोजन-प्रबंधका कुल खर्चा अपने पाससे उठाया इस कारण सम्मेलनके आय-व्ययकी रक़में पाठकगणको कम प्रतीत होंगी, परन्तु यदि इन महाशयोंका नक़द चन्दा जमा करके भोजनके व्ययमें दिखाया जाता तो आय-व्ययकी दोनों रक़में करीब ड्योढ़ी हो जातीं।